इस्लामी
तन्त्र शास्त्र
SHAIKH ABDUL GAFAR
MAJHIKHANDA,NIALI
ODISHA,INDIA
issuu.com/abdul23/niali/odisha
पं. राजेश दीक्षित
असगर अली
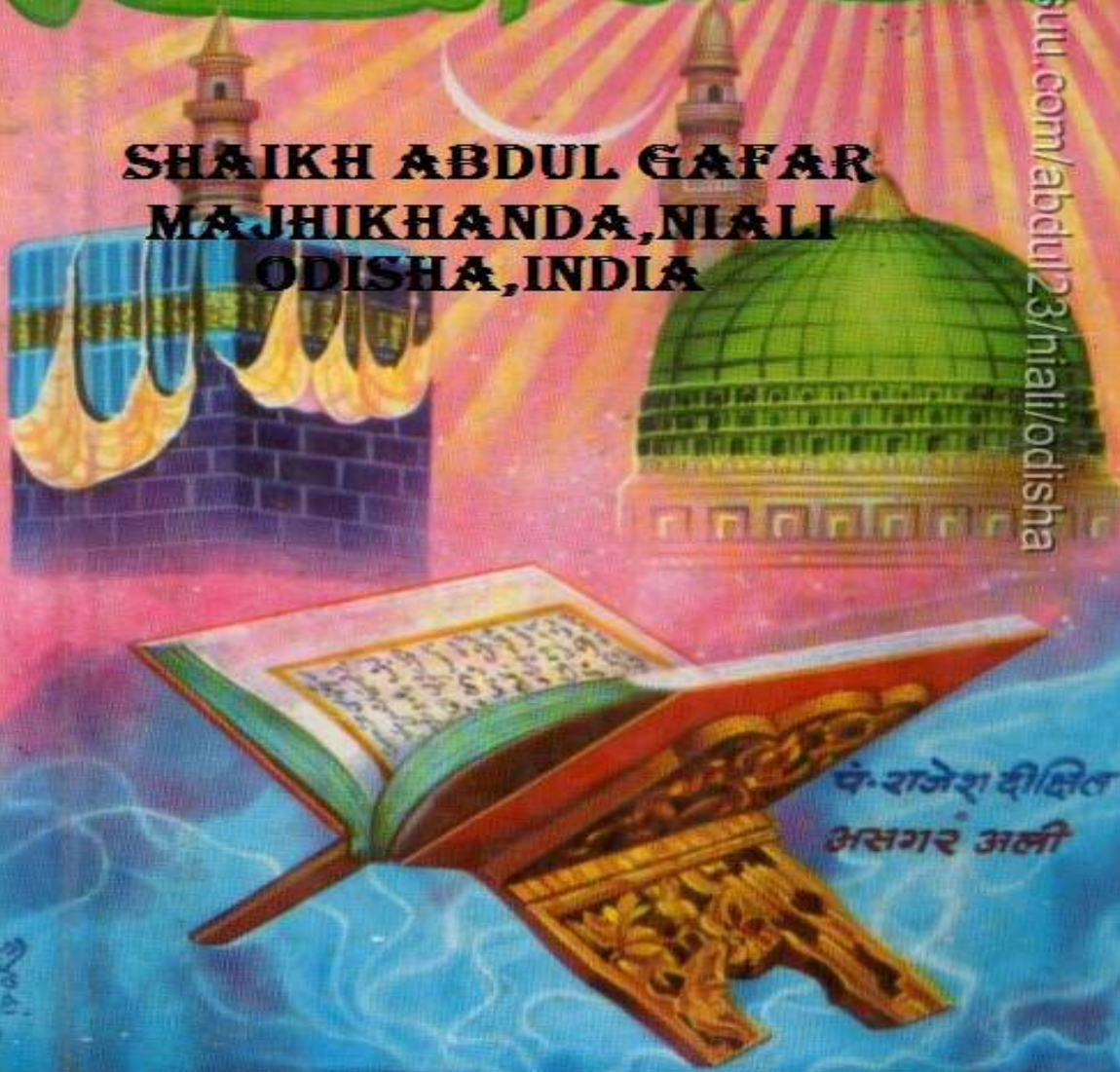
प्रकाशक :

दीप पब्लिकेशन

कंचन मार्केट, हास्पीटल रोड, आगरा-३

●

लेखक :

जनाब असगर अली

●

सम्पादक :

विद्या वारिधि

पं० राजेश दीक्षित

●

प्रथम संस्करण — १९८५ ई.

द्वितीय संस्करण — १९८७ ई.

तृतीय संस्करण — १९८९ ई.

चतुर्थ संस्करण — १९९२ ई.

पंचम संस्करण — १९९५ ई.

●

मूल्य — पैंतालीस रुपया

10 $

6 £

मुद्रक : राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स, मोतीलाल नेहरू रोड, आगरा—३

ISLAMI TANTRA SHASTRA

—By Asgar Ali & Rajesh Dixit

द्वितीय संस्करण की भूमिका

आपके हाथों में 'इस्लामी तन्त्र शास्त्र' का यह संशोधित-परिवर्द्धित दूसरा संस्करण देते हुये हमें अपार प्रसन्नता हो रही है। एक वर्ष में पुस्तक का दूसरा संस्करण होना ही इस पुस्तक की लोकप्रियता और उपयोगिता का सबसे बड़ा प्रमाण है। यह संस्करण पिछले संस्करण से इस अर्थ में भी विशिष्ट है कि इसे एक बार फिर पूर्णरूपेण संशोधित किया गया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इनका संशोधन और परिवर्द्धन विषय के अनुभवी विशेषज्ञों ने अपनी सम्पूर्ण क्षमता से किया है।

प्रस्तुत संस्करण में विशेष तन्त्र मन्त्रों का और समावेश किया गया है। जिन यन्त्रों को इसमें और बढ़ाया गया है। वह अन्यथा उपलब्ध नहीं हैं जिससे इस पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गयी है। पुस्तक से सम्बन्धित कागज, छपाई आदि का मूल्य बढ़ जाने तथा पुस्तक की पृष्ठ संख्या बढ़ जाने के बावजूद मूल्य में वृद्धि नहीं की गयी है। हम आशा करते हैं कि पाठक पूर्ववत् सहयोग बनाये रखेंगे।

—प्रकाशक

इस्लामी तन्त्र शास्त्र

- तन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति सुलभ है।
- श्रद्धा और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तन्त्र साधक अतिशीघ्र निश्चित लक्ष्य-को प्राप्त कर लेता है।

भावों को प्रकट करने के साधनों क[illegible]
आदिस्रोत यन्त्र-तन्त्र ही हैं। यन्त्र
तन्त्र के विकास से ही अंक औ[illegible]
अक्षरों की सृष्टि हुई है। अतः रेखा
अंक एवं अक्षरों का मिला-जुला रू[illegible]
तन्त्रों में व्याप्त हो गया। साधकों [illegible]
इष्टदेव की अनुकम्पा से बीज-मन्त्र
तथा मन्त्रों को प्राप्त किया औ[illegible]
उनके जप से सिद्धियाँ पायीं तो यन्त्र
तन्त्र में उन्हें भी अंकित कर लिया

दो शब्द

- हिन्दू-देवताओं में शिव, शक्ति, विष्णु, गणेश तथा सूर्य—ये [illegible] प्रमुख माने जाते हैं। इनके उपासकों को क्रमशः शैव्य, शाक्त, वैष्णव, [illegible] तथा सौर कहा जाता है। तन्त्रोपासना इन पाँचों देवताओं के [illegible] में प्रचलित है, तथापि विष्णु, गणेश एव सूर्य के अधिकांश उपासक सात्विक तथा शिव और शक्ति के उपासक सात्विकी, राजसी एवं तामसी —इन तीनों प्रकार की उपासना पद्धतियों में विश्वास रखने वाले पाये जाते हैं।

- [illegible] तन्त्र-विद्या का आदि आचार्य भगवान् भूतभावन शंकर को ही माना गया है। शंकर की मान्यता एक ऐसे देवाधिदेव के रूप में की जाती है, जो न केवल शक्ति के स्वामी (पति), गणेश के पिता एवं विष्णु तथा सूर्य के आराध्य ही हैं, अपितु इनके अतिरिक्त अन्यान्य उप-देवताओं, भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, गंधर्व, किन्नर आदि के भी अधिपति और नियामक हैं। दुर्गा, काली, तारा आदि विविध रूपों वाली शक्ति तो उनकी अनुचरियाँ—भूतनी, प्रेतनी, पिशाचनी, चाण्डालिनी आदि के सहित उनकी [illegible] हैं ही। अस्तु, हिन्दू-तान्त्रिकों में शिवोपासना का सर्वोपरि महत्व है। [illegible] शुभ-अशुभ, आनन्दप्रद एवं घृणास्पद, जीवनदायक तथा संहारक [illegible] यह है कि सभी प्रकार के तान्त्रिक प्रयोग शंकरा-[illegible] द्वारा किये जाते हैं। हमारे द्वारा सम्पादित 'हिन्दू तन्त्र शास्त्र' में [illegible] तान्त्रिक प्रयोगों तथा 'शाबर तन्त्र शास्त्र' में राजस, तामस आदि सभी प्रकार के तान्त्रिक-प्रयोगों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

- जैन तथा बौद्ध सम्प्रदायों की गणना भी विराट हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ही की जाती है तथापि इनकी पूजा-उपासना एवं तान्त्रिक विधियों में [illegible] अन्तर पाया जाता है। इनके विषय में हमारे द्वारा सम्पादित 'जैन तन्त्र शास्त्र' एवं 'बौद्ध तन्त्र शास्त्र' नामक ग्रन्थों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

● इस्लामी मजहब में ईश्वर (खुदा) की केवल निराकर रूप की कल्पना की गयी है. अतः उसमें किन्हीं देवी-देवताओं की सम्भावना का तो प्रश्न ही नहीं उठता; परन्तु इसके बावजूद भी जिन, परी, खईस आदि के अस्तित्व को नकारा नहीं गया है। इतना ही नहीं विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु सन्तों, फ़कीरों की मज़ारों की ज़ियारत (यात्रा) करने, उनकी कब्रों पर चादर चढ़ाने तथा धूप-लोबान आदि से पूजा करने के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के नक्श (यन्त्र), मन्त्र तथा तान्त्रिक साधनों का प्रयोग भी किया जाता है।

● प्रस्तुत ग्रन्थ 'मुस्लिम तन्त्र शास्त्र' में ऐसे सैकड़ों तान्त्रिक यन्त्र-मन्त्रादि संकलित किये गये हैं जिनका प्रयोग फ़कीरों तथा मुस्लिम तान्त्रिज्ञों द्वारा किया जाता है। इसमें कुछ ऐसे लोकभाषायी मन्त्र भी संग्रहीत हैं, जिनका हिन्दू तथा मुस्लिम—दोनों धर्मावलम्बी समान रूप से प्रयोग करते हैं।

● हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक यन्त्र की आकृति फारसी अक्षरों तथा अंकों के साथ ही देवनागरी लिपि में भी प्रस्तुत करके इस ग्रन्थ की उपयोगिता बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है।

● इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं सामग्री-संकलन में हमारे परम मित्र मो० असग़र अली 'असग़र' का विशेष योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं।

● आशा है, मुस्लिम-तन्त्र की जानकारी प्राप्त करने के अभिलाषियों को यह ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध होगा।

—असग़र अली
—राजेश दीक्षित

विषय-सूची

क्रमांक — पृष्ठांक

साधना से पूर्व आवश्यक निर्देश

किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को [illegible]

(१) मन्त्र-तन्त्र का जप अंग-शुद्धि, सरलीकरण एवं विधि-विधान-पूर्वक करना उचित है। आत्म-रक्षा के लिए सरलीकरण की आवश्यकता होती है।

(२) किसी भी तन्त्र अथवा मन्त्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक है, अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(३) मन्त्र-तन्त्र साधन के समय शरीर का स्वस्थ एवं पवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(४) शुद्ध, हवादार, पवित्र एवं एकान्त स्थान में ही मन्त्र-साधन करनी चाहिए। मन्त्र-तन्त्र साधन की समाप्ति तक स्थान परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(५) जिस मन्त्र-तन्त्र की जैसी साधन-विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कर्म करने चाहिए अन्यथा परिवर्तन करने से विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं तथा सिद्ध में भी सन्देह हो सकता है।

(६) जिस मन्त्र की जप संख्या आदि जितनी लिखी है उतनी ही संख्या में जप-हवन आदि करना चाहिए। इसी प्रकार जिस दिशा की ओर मुँह करके बैठना लिखा हो तो तथा जिस रंग के पुष्पों का विधान हो, उन सबका यथावत् पालन करना चाहिए।

(७) एक बार में एक ही मन्त्र की साधन करना उचित है। इसी प्रकार एक समय में केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति क उद्देश्य सम्मुख रहना चाहिए।

एक दृष्टि में

- मानव-जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनेक साधनों में 'तन्त्र' सरल और सुगम साधन है।
- यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है कि तन्त्र केवल भूल-भूलैया अथवा मन बहलाने का नाम है।
- तन्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।
- आधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र में स्थायित्व है, सत्य है और कल्याण है।
- तन्त्र-विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वांगीण ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है।
- लोक-कल्याण और आत्म-कल्याण की कामना से किये गये तान्त्रिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में लाभदायी होते हैं।
- फ़ारसी का प्रत्येक अक्षर तान्त्रिक अर्थ रखता है। इन तन्त्रों के अभिनव-प्रयोग आपको कष्टों से बचाने में सहायक होंगे।
- इस पुस्तक में दिये गये तन्त्र, मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से संकलित किये गये हैं सिर्फ उन्हीं मन्त्र, तन्त्र को पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता निर्विवाद है।
- पुस्तक पाठकों की भलाई के लिए बनायी गयी है अस्तु "कुएँ के अन्दर जैसी आवाज देंगे वैसी ही प्रतिध्वनि होगी" की तरह साधना आपके सच्चे मन कर्म से होगी तभी उसमें इष्टतम् फल प्राप्त होगा अन्यथा जैसा करेगा वैसा भरेगा। इसमें लेखक प्रकाशक का क्या दोष ?

१ | फ़ारसी अक्षर और उनके मन्त्र

फ़ारसी-अक्षर-मन्त्र

[illegible] हैं, जिन्हें सिद्ध करने से विभिन्न [illegible] अर्थात् प्रत्येक अक्षर एक मन्त्र के [illegible] बन जाता है। कुल अक्षर क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१) अलिफ़	(१५) ज्वाद
(२) [illegible]	(१६) तोय
(३) [illegible]	(१७) जोय
(४) [illegible]	(१८) एन
(५) जीम	(१९) गैन
(६) [illegible]	(२०) फे
(७) [illegible]	(२१) काफ़
(८) [illegible]	(२२) गाफ़
(९) [illegible]	(२३) लाम
(१०) [illegible]	(२४) मीम
(११) [illegible]	(२५) नून
(१२) [illegible]	(२६) वॉव
(१३) [illegible]	(२७) हे
(१४) [illegible]	(२८) ये

[illegible] अक्षरों का मन्त्र के रूप में अलग-अलग साधन किया जाता है।

साधन का क्रम यह है कि सर्वप्रथम 'अक्षर-मन्त्र' को (जिसका स्वरूप [illegible]), एक सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर, किसी [illegible] के ऊपर रखलें फिर स्वयं उसके सामने बैठें। फिर उस [illegible] की धूनी देकर, उसके ऊपर सुगन्धित पुष्प, इत्र तथा मिठाई [illegible] पूजन करें।

[illegible] का पूजन करने के उपरान्त सर्वप्रथम एक बार 'बिस्मिल्लाह [illegible]' का उच्चारण करें, फिर ७, ११ या २१ बार 'दरूद' का पाठ करें। [illegible] एक बार 'अजमत' पढ़ें। अन्त में 'अक्षर के मन्त्र' अथवा किसी [illegible] का पाठ करें।

अक्षर-मन्त्र का स्वरूप

७८६

८ २००२	१ १९९४	६ १९९४
३ १९९६	५ १९९८	७ २००१
४ १९९७	९ २००३	२ १९९५

२

٧٨٦

٨ ٢٠٠٢	١ ١٩٩٤	٦ ١٩٩٤
٣ ١٩٩٦	٥ ١٩٩٨	٧ ٢٠٠١
٤ ١٩٩٧	٩ ٢٠٠٣	٢ ١٩٩٥

3

बिस्मिल्लाह का मन्त्र

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।"

यह मन्त्र प्रत्येक 'अक्षर-मन्त्र' अथवा किसी भी अन्य फ़ारसी मन्त्र के आरम्भ में अवश्य पढ़ना चाहिए।

दरूद

"अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आले ही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।"

पूर्वोक्त 'बिस्मिल्लाह का मन्त्र' पढ़ने के बाद मन्त्र के आरम्भ में इस [illegible] बार पढ़ना चाहिए। मन्त्र-साधन के अन्त [illegible] है।

अजमत

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा इन्नी असअलोका [illegible] उलया या रज्जाको या समीओ [illegible] अलैकुम। या अईयो हलूम लायक [illegible] हाजिल हूरू फिज्ञामाति ताहिरात या [illegible] काईलो बिहक्के सईयदि कुमूवा अमीनिकुम [illegible] अमरूहइन्ना आरादा शैयन अनयकूलो [illegible] ये यदहिन कूतोकुल्लश अइन [illegible]।"

इस 'अजमत' को एक बार पढ़ने के बाद 'अक्षर मन्त्र' अथवा किसी [illegible] को पढ़ना चाहिए।

अक्षर-मन्त्रों की साधन-विधि

जिस 'अक्षर मन्त्र' को सिद्ध करना हो, उसे पहले ४१ दिन तक प्रतिदिन एक हजार की संख्या में पढ़ना चाहिए। ४१ दिन बाद अक्षरों को प्रतिदिन [illegible] बार पढ़ लेना चाहिए तथा आदि एवं अन्त में पाँच-पाँच बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए।

जब कभी किसी मनोभिलाषा को पूर्ण करने की इच्छा हो, उस [illegible] को लिखकर, उस मन्त्र के नीचे अपना मनोरथ लिख देना चाहिए। फिर उसकी बत्ती बनाकर दीपक में जलानी चाहिए, इससे मनोरथ सिद्ध हो जाता है।

जो मनुष्य इन सब अक्षरों को जकात (इष्ट-सिद्धि) देना चाहें, उन्हें पहले 'अलिफ' फिर "अस्सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ़ [illegible]"—यह मन्त्र पढ़ना चाहिए।

नौचन्दी जुमेरात को ११ बार, निसाब को १००१ बार, जकात (इष्ट-सिद्धि) के लिए ५०१ बार, असर (होम) के लिए २५० बार, निफ्ल (तपस्या) के लिए १५१ बार, दौरे गोल (मार्जन) के लिए ५२ बार तथा बज्ल (ब्रह्मभोज) के लिए इसे १६६८ बार पढ़ना चाहिए।

अच्छा यह रहेगा कि २८ अक्षरों में से प्रत्येक को ४४४४ की संख्या में एक-एक दिन पढ़ा जाय। इस तरह २८ दिन में अमल (प्रयोग) को पूरा किया जाय।

स्मरणीय है कि प्रत्येक अक्षर को एक 'मवक्किल' तथा एक नाम 'खुदा' का मिलाकर ३ प्रकार से पढ़ते हैं। जैसे—अक्षर 'अलिफ़' का मवक्किल 'इस्राफील' तथा नाम खुदा अलिफ़ पर 'अल्लाह' है। इनको मिलाकर निम्नलिखित तीन रीतियों में से, जिसमें मन लगे, उसी रीति से पढ़ना चाहिए —

(१) पहली रीति—

"अलिफ या अल्लाह या इस्राफील।"

(२) दूसरी रीति—

"या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।"

(३) तीसरी रीति—

"या सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।"

२८ दिन बाद सब अक्षरों को प्रतिदिन २८ बार, ३ बार अथवा केवल १ बार पढ़ लेना चाहिए।

टिप्पणी– फ़ारसी अक्षर-मन्त्रों तथा अन्य मन्त्रों की सामान्य साधन-विधि उपर्युक्त ही है। अब प्रत्येक अक्षर-मन्त्र के अलग-अलग लाभ, प्रयोग तथा उनको जपने की विधि का वर्णन किया जा रहा है।

धन-धान्य-वृद्धिकारक

'अलिफ' का मन्त्र

धन-धान्य की वृद्धि के लिए 'अलिफ़' के मन्त्र का साधन करना चाहिए। इसकी विधि निम्नानुसार है—

"सूर्योदय से पहले ही उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो, पहले एक बार पूरा 'बिस्मिल्लाह' मन्त्र पढ़ें, फिर ११ बार 'दरूद' पढ़कर, १४१ बार निसाब आदि को अग्रानुसार पढ़ें—

"या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।"

[illegible] १००० बार 'या अलिफ़' का उच्चारण करें तथा हर [illegible] 'या अलिफ़' उच्चारण के बाद निम्नलिखित मन्त्र को १० बार [illegible]

"[illegible] या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्ला हो।"

[illegible] निम्नलिखित मन्त्र को १६ बार पढ़ें—

"[illegible] बहक्क या अलिफ या अल्लाहो [illegible] मुहम्मदिन व आलही अजमईन।"

[illegible] अलिफ़ का मन्त्र नित्य १००० बार पढ़ना चाहिए [illegible] मन्त्र को सफेद कागज पर काली [illegible] लिखकर, [illegible] कपड़े के ऊपर रखकर लोबान [illegible] चाहिए। फिर मन्त्र के ऊपर ही अपनी दृष्टि जमाये रखकर [illegible] करना चाहिए।

[illegible] इस प्रकार है—

يا الله يا الله يا الله

يا جبرائيل	۴ ۲۸	۱ ۵	۸ ۳۴	يا اسرافيل
يا جبرائيل	۷ ۲۹	۵ ۲۲	۳ ۱۵	يا اسرافيل
يا جبرائيل	۲ ۱۰	۹ ۳۹	۴ ۲۸	يا اسرافيل

يا الف يا الف يا الف

मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर निम्नलिखित वाक्य का ११ बार उच्चारण करना चाहिए—

"या इस्राफील बहक्क या अलिफ़ या अल्ला हो मुझे धन और दौलत दे या बुद्दूह ।"

सबसे अन्त में 'अलिफ़' अक्षर को कागज के १००० छोटे-छोटे टुकड़ों पर फ़ारसी-लिपि में लिखकर, उन कागज़ के टुकड़ों को आटे की गोलियों में भरकर, किसी दरिया (नदी) में बहादें। ऐसा करने से कार्य सिद्ध हो जाता है।

यह 'अलिफ़' का मन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी है। यदि समुचित रीति से साधन किया जाय तो साधक की मनोकामना को अवश्य पूरा करता है तथा घर में धन-धान्य की वृद्धि करता है।

'अलिफ़' से लेकर 'ये' तक सभी फारसी अक्षरों को फ़ारसी लिपि में लिखने की विधि निम्न प्रकार दी गई है—

अलिफ़	ا	ज्वाद	ض
बे	ب	तोय	ط
पे	پ	जोय	ظ
ते	ت	ऐन	ع
जीम	ج	ग़ैन	غ
हे	ح	फ़े	ف
खे	خ	काफ़	ک
दाल	د	गाफ़	گ
ज़ाल	ذ	लाम	ل
रे	ر	मीम	م
ज़े	ز	नून	ن
सीन	س	वॉव	و
शीन	ش	हे	ه
स्वाद	ص	ये	ے

(फ़ारसी अक्षरों की लिपि)

ग़ैब से रोजी देने वाला 'बे' का मन्त्र

'बे' का मन्त्र-साधन ग़ैब से रोजी प्राप्ति (आकस्मिक धन-लाभ) के लिए किया जाता है। इसकी विधि अग्रांकित है—

सर्वप्रथम ७२ दिनों तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पृथ्वी पर शयन करें फिर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सूर्योदय से पूर्व एक सफेद कागज पर काली स्याही से लिखें—

७८६

९८	४८	६
९२	२४	३६
४२		३०

७

۵۸۴

۱۸	۵۸	۴
۱۲	۲۵	۳۴
۵۲		۳۰

८

यन्त्र लेखनोपरान्ह एक पानी से भरे हुए घड़े के आगे सफेद कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर पूर्वोक्त यन्त्र को रख दें। इसके बाद स्वयं सूर्योदय से

कुछ पहले ही नाभि के बराबर पानी में खड़े होकर नीचे लिखे मन्त्र का [illegible] की संख्या में जप करें।

मन्त्र इस प्रकार है—

"आजिबो या जिब्राईल बहक्क या बासितो।"

 [illegible] खड़े होकर मन्त्र जप करना उत्तम रहता है।

मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर पानी से बाहर निकल आयें तथा घड़े के सामने सफेद कपड़े पर रखे हुए पूर्वोक्त यन्त्र के आगे चिराग़ (दीपक) जलाकर, लोबान की धूनी दें तथा यन्त्र के ऊपर सुगन्धित पुष्प, इत्र तथा मिठाई चढ़ायें। अन्त में ७००० बार केवल 'या बासितो' इस वाक्य का जप करें।

उक्त विधि से ७२ दिन तक मन्त्र-जप-साधन करते रहने पर बाद में [illegible] बाजार ग़ैब (आकस्मिक रूप) से मिलते रहते हैं।

मन्त्र के आदि तथा अन्त में ११-११ बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए तथा मन्त्र-जप पूरा हो जाने पर दूसरे दिन यन्त्र को आटे में भरकर गोली बना लें तथा पूरे में सानकर दरिया में बहादें।

यश-सम्मान प्रदायक
'ते' का मन्त्र

यश तथा सम्मान प्राप्ति के लिए पहले नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफ़ेद कागज पर काली स्याही से लिखकर एक पानी भरे घड़े के आगे सफ़ेद कपड़े पर रखकर लोबान की धूनी दें तथा दीपक जलाकर, फूल, इत्र एवं मिठाई चढ़ायें। तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का नित्य १००० की संख्या में जप करें—

"या इज्राईल बहक्क या ते या तव्वाबो।"

यन्त्र का स्वरूप निम्नानुसार तैय्यार करना चाहिए—

८	११	३८६	१
३८८	२	७	१२
३	३९१	९	६
१०	५	४	३९०

९

٨	١١	٣٨٩	١
٣٨٨	٢	٧	١٢
٣	٣٩١	٩	٦
١٠	٥	۴	٣٩٠

१०

२१ दिनों तक पूर्वोक्त विधि से मन्त्र-जप तथा यन्त्र-पूजन करते रहने से यश तथा सम्मान की वृद्धि होती है। अन्त में, यन्त्र को आटे की गोली में भरकर तथा बूरे में सान कर दरिया के पानी में बहा देना चाहिए।

किसी का मुहताज न रखने वाला

'से' का मंत्र

निम्नलिखित 'से' के मन्त्र का प्रतिदिन ६०३ की संख्या में जप करने वाला मनुष्य किसी का मुहताज नहीं रहता।

मन्त्र इस प्रकार है—

"या किलकाईल बदक्क या जीम या जव्वादी।"

इस मन्त्र का जप सूर्योदय से पूर्व ही आरम्भ कर दिया जाय तो [illegible] रहता है। मन्त्र के आरम्भ में पूरी 'बिसमिल्लाह' तथा अन्त में ११ या २१ बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए।

मनोभिलाषा पूरक

'जीम' का मन्त्र

'जीम' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या किलकाईल बदक्क या जीम या जव्वादी।"

विधि—उक्त मन्त्र को ७ रात तक, नित्य ३००० की संख्या में जपने से ख्वाब (स्वप्न) में पैगम्बर साहब के दर्शन होते हैं। यदि मन्त्र को १००० की संख्या में कांसे की थाली पर लिखकर, उसे मीठे पानी से धोयें और वह पानी किसी नामर्द आदमी को पिला दिया जाय तो उसे मर्दाना ताकत हासिल होती है। कांसे की थाली पर 'जीम' अक्षर फारसी लिपि में ही लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ भी 'बिसमिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् ही समझना चाहिए।

शत्रु-भय-नाशक

'हे' का मंत्र

'हे' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या तनकाफील बदक्क या हे या हमीदो।"

विधि—इस मन्त्र को ४१ दिनों तक नित्य ६२ बार जप करने से शत्रु का भय दूर हो जाता है। इसके साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

गये हुए मनुष्य को लौटाने वाला 'खे' का मंत्र

'खे' का मन्त्र इस प्रकार है —

"या महकाईल बहक्क या खे या खलिको ।"

विधि—(१) इस मन्त्र को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में आकाश के नीचे खड़े होकर १००० की संख्या में जपने तथा जो व्यक्ति घर से चला गया हो उसके उद्देश्य से आकाश की ओर फूँक मारने से, वह गया हुआ व्यक्ति शीघ्र घर लौट आता है ।

(२) 'खे' को फारसी अक्षरों में ६०० की संख्या में लिखकर तकिया के नीचे रख कर सोने तथा उक्त मन्त्र का १००० की संख्या में जप करने से ख्वाब (स्वप्न) में गये हुए मनुष्य के बारे में सारा हाल-चाल मालूम हो जाता है ।

(३) यदि 'खे' के अन्त में 'या खबीरो' शब्द और बढ़ा लिया जाय तो अधिक हाल मालूम होता है ।

इसके साथ भी 'बिसमिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें ।

शत्रु-नाशक तथा धन-वृद्धि कारक 'दाल' का मंत्र

'दाल' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या दरदाईल बहक्क या दाल या दैयानो ।"

विधि—(१) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पढ़ने से धन की वृद्धि होती है। धन-वृद्धि के लिए इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करते रहना आवश्यक है ।

(२) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को ७० बार पढ़ कर शत्रु के घर की ओर फूंक मारने से उसका नाश हो जाता है। यह क्रिया ३० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करनी चाहिए ।

इसके साथ भी 'बिसमिल्लाह' और 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें ।

उच्चाधिकारी की कृपा-प्राप्ति, धन-वृद्धि अथवा वशीकरण के लिए प्रयुक्त होने वाला 'ज़ाल' का मन्त्र

'ज़ाल' का मन्त्र इस प्रकार है —

"[illegible] जुल जलाल वलइक्राम ।"

विधि—(१) हाकिम की मेहरबानी प्राप्त करने अथवा धन-वृद्धि के लिए इस मन्त्र का एक मास (३० दिन) तक नित्य प्रातःकाल ११०० की संख्या में जप करना चाहिए ।

(२) यदि किसी को वश में करना हो तो इस मन्त्र द्वारा मिठाई को [illegible] बार अभिमन्त्रित करके साध्य-स्त्री-पुरुष को खिला देने से वह वशीभूत हो जाता है ।

इसके साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए ।

गड़ा-धन प्राप्त कराने वाला 'रे' का मन्त्र

'रे' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या असवा कील बहक्क या रे या रहीम ।"

विधि—(१) इस मन्त्र को ३० दिनों तक नित्य प्रातःकाल १००० की संख्या में जपें। अन्तिम दिन एक सफेद रंग के मुर्गे के कान में 'या' 'रे' इस मन्त्र को [illegible] बार पढ़कर उसे छोड़ दें, तदुपरान्त वह जिस स्थान पर जाकर [illegible] और जिस जगह अपनी चोंच मारे, वहीं पर 'धन गड़ा हुआ है' यह समझ लेना चाहिए ।

(२) फारसी लिपि में 'रे' को किसी मिट्टी की रकाबी पर ६०० की संख्या में लिखने के बाद, उसके ऊपर इतना नमक बिछा दें कि अक्षर दिखाई न दें, तदुपरान्त रात के समय उस रकाबी (तश्तरी या प्लेट) को अपने सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में गड़े हुए धन वाला स्थान दिखाई देता है ।

(३) एक कागज के ऊपर फ़ारसी लिपि में ८०० की संख्या में 'रे' अक्षर लिखकर, उस कागज को मोड़कर अपने कान में रखें। एक घड़ी बाद उसे कान से निकालकर काँसे की थाली अथवा कलईदार रकाबी में रखकर ऊपर से इतना नमक बिछा दें कि सभी अक्षर ढक जाँय, तदुपरान्त रात्रि के समय पुनः ८०० बार मन्त्र पढ़कर सो जाँय तो स्वप्न में गड़े हुए धन के स्थान के विषय में ज्ञात हो जायगा।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

'जे' का मन्त्र इस प्रकार है—

शत्रु-भय-नाशक
'जे' का मन्त्र

"या सरफाईल बहक्क या जे या जाकियो।"

विधि - इस मन्त्र का १ मास तक नित्य ५०० की संख्या में जप करते रहने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

इच्छित-अनुभव प्रदायक
'सीन' का मन्त्र

'सीन' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या हमवाकील बहक्क या सीन या समीओ।"

विधि—इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जपने से इच्छित अनुभव प्राप्त होता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शत्रु-मुख-स्तम्भक एवं गर्भ-ज्ञान प्रदायक
'शीन' का मन्त्र

'शीन' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या इजराईल बहक्क या शीन शहीदो।"

विधि—(१) इस मन्त्र को ३०० बार पढ़ने के बाद कागज के ४० टुकड़ों पर फ़ारसी लिपि में 'शीन' अक्षर को लिखकर, उन टुकड़ों को ४० रोटी की तहों में रखकर पकायें, फिर उनमें से एक-एक रोटी एक-एक कुत्ते को अलग-अलग खिला दें तो शत्रु का मुख बंद हो जाता है।

(२) रात्रि के समय इस मंत्र को ३०० बार पढ़कर सो जाँय तो गर्भवती के पेट का हाल अर्थात् 'उसके गर्भ में लड़का है या लड़की' [illegible]

इस मंत्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शत्रुता-विनाशक एवं थकान-नाशक
'स्वाद' का मन्त्र

'स्वाद' का मंत्र इस प्रकार है—

"या अजमाईल बहक्क या स्वाद या समदो॥"

विधि—(१) पानी से भरा एक घड़ा अपने सामने रख लें, फिर उस पर निगाह (दृष्टि) जमाकर ४० दिनों तक, नित्य ८०० की संख्या में इस मंत्र का जप करें तो शत्रु दुश्मनी भुला कर मित्र बन जाता है।

(२) यदि राह में चलते समय इस मंत्र का ५०० बार जप किया जाय तो राह में चलने से थकावट नहीं आती।

इस मंत्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

हृदय-दौर्बल्य नाशक तथा शत्रु-जिह्वा स्तम्भक
'ज्वाद' का मन्त्र

'ज्वाद' का मंत्र इस प्रकार है—

"या इसराईल बहक्क या ज्वाद या जारो।"

विधि—(१) इस मंत्र को नित्य १००० बार जपने से दिल की कमजोरी (हृदय-दौर्बल्य) दूर हो जाती है।

(२) इस मंत्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

वशीकरण कारक एवं कार्य-साधक
'तोय' का मन्त्र

'तोय' का मंत्र इस प्रकार है—

"या इस्माईल बहक्क या तोय या ताहिरो ।"

विधि—(१) किसी कार्य की सिद्धि के लिए कागज के टुकड़ों पर फारसी लिपि में अलग-अलग 'तोय' अक्षर लिखकर, उन्हें आटे की गोलियों में अलग-अलग भर दें, फिर उन गोलियों के ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र को ७०० बार पढ़कर फूंक मारें। तदुपरान्त उन आटे की गोलियों को दरिया (नदी) के पानी में बहा दें तो ७ दिन के भीतर इच्छित-कार्य सिद्ध हो जाता है।

(२) वशीकरण के लिए एक कागज के ऊपर ७०० की संख्या में फारसी लिपि में 'तोय' लिखकर, उनके नीचे—

"या इस्माईल फलाने को फलाने के बस में करो बहक्क या तोय या ताहिरो ।"

उक्त वाक्य को लिखकर, उस कागज का फलीता बनाकर सुगन्धित तेल में जलायें तथा इत्र, फूल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धूनी दें। इस तरह ७ दिनों तक नित्य यही प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है। मन्त्र का जप करते समय, जिसे वश में करना हो, दीपक का मुँह उसके घर की ओर रखना चाहिए।

कागज़ पर जो वाक्य लिखा जायेगा उसमें 'फलाने को, फलाने के" स्थान पर जिस व्यक्ति को वश में करना हो, उसका तथा जिसको वश में कराना हो उसका—दोनों का नाम लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

शत्रु-भय नाशक
'जोय' का मंत्र

'जोय' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या लौज़ाईल बहक्क या जोय या जाहिरो ।"

विधि—प्रतिदिन प्रातःकाल ४० की संख्या में ६ दिनों तक इस मन्त्र को जपते रहने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

वशीकरण-कारक
'ऐन' का मन्त्र

'ऐन' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या [illegible] बहक्क या ऐन या अजीमो ।"

विधि—[illegible] कागज के ऊपर कस्तूरी तथा केसर से फ़ारसी लिपि [illegible] ७० बार अभिमन्त्रित करें [illegible] लिखित कागज पर उक्त मन्त्र पढ़-पढ़कर ७० बार फूंक [illegible] मिठाई में मिला कर अथवा पानी में घोल कर जिसे [illegible] दिया जाएगा, वही वशीभूत हो जाएगा।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्व-वत् है।

शत्रु-नाशक
'गैन' का मन्त्र

'गैन' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या [illegible] बहक्क या गैन या गुफ़ूरो ।'

विधि—[illegible] के पत्ते पर या सफेद कागज पर फ़ारसी लिपि में [illegible] बार 'गैन' अक्षर लिखकर उसके ऊपर उक्त मन्त्र को १२८६ बार [illegible] कर फूंक मारें फिर उस पत्ते या कागज को शत्रु के घर में [illegible] घर गिर जाता है तथा उसका नाम भी मिट जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

आकर्षण, वशीकरण तथा शत्रु-पीड़ा कारक
'फ़े' का मन्त्र

'फ़े' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या [illegible] बहक्क या फ़े या फ़त्ता हो ।'

विधि—(१) किसी सफेद कागज के ऊपर, फ़ारसी लिपि में १००० की संख्या में 'फ़े' अक्षर लिखकर, उसके नीचे जिस व्यक्ति को आकर्षित या वशीभूत करना हो उसका तथा उसकी माँ का नाम एवं अपना तथा [illegible] का नाम नीचे लिखे अनुसार लिखना चाहिए—

'या [illegible] फलानी का बेटा फ़लाना मुझ फलानी के [illegible] के वश में हो बहक्क या फ़े या फ़त्ता हो ।'

पिछले वाक्य में जहाँ 'फ़लानी का बेटा फ़लाना' आया है, वहाँ जिसे वश में करना हो, उसकी माँ का तथा उसका नाम लिखना चाहिए और जहाँ मुझ फ़लानी के बेटे फ़लाने' आया है, वहाँ अपनी माँ का तथा अपना नाम लिखना चाहिए।

उक्त प्रकार से वाक्य तथा नाम आदि लिखने के बाद उस कागज का फ़लीता बना कर जलायें तथा उस पर इत्र, फूल, मिठाई आदि [illegible] पूर्वोक्त मन्त्र को ८०० बार पढ़ें। इस प्रकार साधन करने से इच्छित स्त्री-पुरुष हजार कोस की दूरी से भी चलकर, साधक के सामने आ खड़ा होता है।

(२) मंगलवार के दिन किसी मनुष्य की खोपड़ी पर एक साँस में ८० बार फ़ारसी लिपि में 'फ़े' अक्षर लिखकर, उसे शत्रु के घर की नींव में गाढ़ देने से, उस घर में नित्य नई आफ़तें आती रहती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

नींद हराम करने वाला 'काफ़' का मन्त्र

'काफ़' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या इतराईल बहक्क या काफ़ या काफ़ियो।'

विधि - एक सफ़ेद कागज़ के ऊपर फ़ारसी लिपि में ४०० बार 'काफ़' अक्षर लिखकर उसके नीचे—

'या इतराईल फ़लानी के बेटे फलाने की नींद बन्द करा बहक्क या काफ़ या कुद्दूसो।'

उक्त वाक्य लिखें। इस वाक्य में जहाँ 'फ़लानी के बेटे फ़लाने' आया है, वहाँ जिस व्यक्ति की नींद हराम करनी हो उसकी माँ का तथा उसका नाम लिखना चाहिए। फिर उस कागज़ को पूर्वोक्त मन्त्र "या इतराईल...." द्वारा ४०० बार अभिमन्त्रित करें अर्थात् मन्त्र पढ़-पढ़ कर फूंक मारें, तत्पश्चात् उस कागज़ को किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें तो साध्य-व्यक्ति की नींद बँध जाती है अर्थात् उसे नींद नहीं आती।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

विद्या-वर्द्धक 'गाफ़' का मन्त्र

'गाफ़' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या हुतजाइल बहक्क या गाफ़ या गाफ़ियो।"

[illegible] फ़ारसी लिपि में २००० की संख्या में [illegible] पूर्वोक्त मन्त्र "या हुतजाइल ...." को [illegible] बार पढ़-पढ़ कर फूंक मारें, फिर उस कागज को लोबान की धूनी [illegible] भुजा में बाँध दिया जाएगा, उसे बहुत विद्या [illegible] विद्या की वृद्धि करने वाला है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

सर्वप्रियता-दायक 'लाम' का मन्त्र

'लाम' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या [illegible] बहक्क या लाम या लतीफ़ो।'

विधि—इस मन्त्र को प्रतिदिन १००० बार पढ़कर अपने ऊपर फूंक [illegible] सभी लोगों का प्रिय बन जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

लोकप्रियता-दायक 'मीम' का मन्त्र

'मीम' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या रोमाईल बहक्क या मीम महमनो।'

विधि—सफ़ेद कागज के ऊपर फारसी लिपि में ६०० बार 'मीम' लिखकर, उस पर उक्त मन्त्र को १००० बार पढ़कर फूंक मारें, तदुपरान्त उसे किसी भारी पत्थर के नीचे दबा दें। इस प्रयोग को करने वाला व्यक्ति लोकप्रिय होता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

श्रेष्ठ विद्यादायक एवं स्वप्न में उत्तरदायक
'नून' का मन्त्र

'नून' का मन्त्र इस प्रकार है –

"या लोलाईल या नून या नूरो ।"

विधि—(१) शुक्रवार अथवा बृहस्पतिवार की रात्रि को यह मन्त्र २०० बार पढ़ कर सो जाने से इच्छित प्रश्न का उत्तर स्वप्न में मिलता है।

(२) यदि ४० दिनों तक नित्य १००० की संख्या में इस मन्त्र का जप किया जाय तो श्रेष्ठ विद्या प्राप्त होती है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

मनोरथ-पूर्ति कारक
'वाव' का मन्त्र

'वाव' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या रफ्तामाईल बहक्क यो वाव या वहावों ।"

विधि—इस मन्त्र को पढ़ते हुए कहीं भी जाने से मनोरथ पूरा होता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि रास्ते में कोई रोक-टोक न हो। यदि कोई रोके-टोके तो उसके सामने ७० बार मन्त्र पढ़कर फूंक मार देनी चाहिए, तदुपरान्त आगे बढ़ना चाहिए।

इस मन्त्र के प्रभाव स्वरूप किसी मनोरथ को लेकर यात्रा करने से उसकी पूर्ति होती है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

भवन-सुरक्षा कारक
'हे' का मन्त्र

'हे' का मन्त्र इस प्रकार है –

"या दौराईल बहक्क या हे या हादियो ।"

विधि—ईंट के ऊपर फ़ारसी लिपि में ७० बार 'हे' लिख कर तथा उसके ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र 'या दौराईल ..." को ७० पढ़कर, उस ईंट को नींव में गाड़ दें, तो वह मकान वर्षों तक सुरक्षित बना रहेगा, टूटेगा-फूटेगा नहीं।

ईंट के स्थान पर ४ ठीकरियों पर 'हे' अक्षर लिखकर, उन्हें भी उक्त विधि से नींव में गाड़ा जा सकता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

जिह्वा-स्तम्भन कारक
'ये' का मन्त्र

'ये' का मन्त्र इस प्रकार है—

"या [illegible] बहक्क ये यहियो ।"

विधि—इस मन्त्र का प्रतिदिन १६० बार जप करने वाले के समक्ष किसी अन्य व्यक्ति की जीभ नहीं चल पाती अर्थात् दूसरे व्यक्ति का जिह्वा स्तम्भन हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ भी 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् ही है।

टिप्पणी—उक्त मन्त्र फ़ारसी के विभिन्न अक्षरों के हैं तथा विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं। अस्तु जिस कामना की पूर्ति की इच्छा हो, उसके अनुरूप अक्षर वाले मन्त्र को प्रयोग मेंलाना चाहिए।

स्मरणीय है कि इन मन्त्रों का साधन करते समय शारीरिक स्वच्छता, मानसिक पवित्रता एवं ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

०:०:०

२ | कुफ्ल, दिन और हाजिरात के मन्त्र

'क़ुफ़्ल' के मन्त्र

इस्लामी मन्त्रों में ६ कुफ्ल प्रसिद्ध हैं। इन कुफ्लों का अलग-अलग सामूहिक रूप से साधन करने से विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति होती है कुफ्लों के मन्त्र निम्नानुसार हैं—

पहला क़ुफ़्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्स मीइल बसीरि-ल्लाजी लैसा कमिस्लेही शयदूनहुवा बिकुल्ले शयइन हकीम बिरहमते क़ाया अर हमर्राहिमीन सल्लिल्लला हो अला-मुहम्मदिन व अला आलेही व असहाबिही अजमईन।"

दूसरा कुफ्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिहिल खालेक़िल अली-मिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व हुवल फत्ताहुल् अलीम बिरहमतेका या अरहमर्राहिमीन।"

तीसरा कुफ्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्सामीइल अली-मिल्लजी लैंसा कमिस्लेही शयइन हुवलगनी इलक़दीरो बिरह-मतेका या अरहमर्राहिमीन।"

चौथा कुफ्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिस्समीइल अली-मिल्लजी लैस कमिस्लेही शयइन व हुवल अजीजुल करीम बिरम-तेका या अरहमर्राहिमीन।"

पाँचवाँ कुफ्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्ला हिस्समीइल अली-मिल्लजी लैसा कमिस्लेही शयइन व हुवल अली मिलख़बीर बिर-हमते का या अर हमर्राहिमीन।"

छठा कुफ्ल

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजीजिर्रहोमिल्ल [illegible] अजीजुल् गफ़ूर बल्लाहो खैसन हाफ़िजा व हुवा अर हमर्राहिमीन।"

प्रभाव उपर्युक्त कुफ्लों का प्रभाव निम्नलिखित है—

(१) उक्त ६ कुफ्लों को कागज पर लिखकर हाथ में बाँधने से भूत-प्रेत, जिन, शैतान, मसान के लगने अथवा बावले कुत्ते-सियार आदि के विष का असर नहीं होता।

(२) इन कुफ्लों को मिठाई पर ७ बार पढ़ कर वह मिठाई किसी [illegible] (जिसका मासिक धर्म रुक गया हो अथवा जो प्रसव-पीड़ा से पीड़ित हो) को खिला देने से वह शीघ्र खलास हो जाती है अर्थात् उसे कष्ट से छुटकारा मिल जाता है।

(३) यदि किसी का पुत्र अथवा नौकर घर से भाग गया हो तो [illegible] कंकड़ियों पर इन सभी कुफ्लों को सात बार पढ़कर, उन्हें आग में डाल दें तो गया हुआ व्यक्ति घर लौट आता है।

(४) यदि किसी का घोड़ा, बैल, गाय, भैंस, बकरी, बकरा आदि कोई पशु चला गया हो पानी के ऊपर उक्त छहों कुफ्लों को पढ़ कर, उसे किसी नदी या कुएं में डाल देने से वह जानवर ५ दिन के भीतर ही घर वापिस लौट आता है।

(५) यदि किसी आदमी की याददाश्त (स्मरण-शक्ति) कमजोर हो तो इन कुफ्लों के द्वारा पानी को ७ बार अभिमन्त्रित करके, नित्य सात दिनों तक पिलाते रहने से याददाश्त तीव्र हो जाती है तथा विद्या कण्ठस्थ होने लगती है।

(६) यदि किसी आदमी को मिरगी आती हो अथवा पागलपन का दौरा पड़ता हो तो दौरे के समय उसके कानों में उक्त कुफ्लों को ७ बार [illegible] से सुना देने पर वह ठीक हो जाता है।

★

दिन के मन्त्र

एक हफ्ते (सप्ताह) में सात दिन हैं। सातों दिनों के सात अलग-अलग मन्त्र हैं। इन मन्त्रों को अलग-अलग दिनों में पढ़ने से विभिन्न मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। मन्त्र इस प्रकार हैं—

शुक्रवार (जुमा) का मन्त्र—

"या अल्ला हो या वाहिदो।"

शनिवार का मन्त्र—

"या रहमानो या रहीमो।"

रविवार का मन्त्र—

"या वाहिदो या अहदो।"

सोमवार का मन्त्र—

"या समदो या फ़रदो।"

मंगलवार का मन्त्र—

"या हयियो या क़यियूनो।"

बुधवार का मन्त्र—

"या हन्नानो या सन्तानो।"

बृहस्पतिवार का मन्त्र—

"या जुल जलाल बल इकराम।"

साधन-विधि—उक्त मन्त्रों की साधन-विधि इस प्रकार है—

किसी स्वच्छ स्थान में एक नया चिराग रखकर, उसमें शुद्ध घी अथवा कोई सुगन्धित तेल भरकर जलायें। फिर इमाम हसन तथा इमाम हुसैन का आह्वान करें और दीपक के आगे फूल, इत्र और मिठाई चढ़ाकर लोबान की धूनी दें। इसके बाद मन्त्र को १००० की संख्या में जपें।

मन्त्र-जप के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा तीन बार 'दरूद' अवश्य पढ़ें तथा मन्त्र के अन्त में भी ३ बार दरूद' पढ़नी चाहिए।

उक्त प्रकार से ७ दिन तक जप करने से प्रयोग पूरा होता है। मन्त्र-साधन काल में दिन में सिर्फ एक बार हल्का भोजन करना चाहिए, पृथ्वी पर सोना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पूरी तरह पालन करना चाहिए।

इस प्रकार जिस इच्छा को लेकर इन मन्त्रों का साधन किया जाता है, वह पूरी होती है। अलग-अलग दिनों में उस दिन से सम्बन्धित मन्त्र का ही जप करना चाहिए।

हाजिरात के मन्त्र

'हाजिरात' उस क्रिया का नाम है' जिसमें एक छोटे बालक को [illegible] पर दृष्टि जमाने के लिये कहा जाता है, तदुपरान्त अन्य प्रयोग [illegible] इच्छित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं।

यहाँ हाजिरात की दो प्रमुख विधियों तथा उनके मन्त्र का उल्लेख किया जा रहा है। हाजिरात की कुछ अन्य विधियों का वर्णन आगे किया [illegible]।

[illegible] विधि

[illegible] नीचे प्रदर्शित यन्त्र को एक घुटे हुए (चिकने सफ़ेद) कागज पर [illegible] लिखें। इस यन्त्र में १६ कोठे एक आकार के होंगे तथा [illegible] से २४ तक के अंक लिखे जायेंगे—

[illegible] का स्वरूप इस प्रकार बनेगा—

१६	१९	२२	१०
२१	१०	१५	२०
११		१७	४
१८	१३	१२	२३

११

[illegible] लिखनोपरान्त एक छोटे बालक को भली-भाँति स्नान कराने के [illegible] स्वच्छ वस्त्र पहिनायें तथा उसके शरीर पर सुगन्धि लगायें। फिर एक [illegible] चादर बिछाकर उसके बारहों कोनों पर लोहे की कीलें गाड़ें तथा उस चादर के ऊपर बालक को, गले में फूलों की माला पहिनाकर बिठायें।

एक दीपक में चमेली का तेल भरकर उसे जलाकर रक्खें तथा एक [illegible] मेवा तथा मिठाई और इत्र—ये वस्तुएँ बादशाह की भेंट के लिए अलग रख लें।

इसके बाद पूर्वोक्त यन्त्र में प्रदर्शित काले रंग के खाने (कोष्ठक) पर बालक को अपनी निगाह (दृष्टि) जमाने के लिए कहें तथा स्वयं इत्र लगे हुए चावल तथा फूलों पर निम्नलिखित 'अजीमत' पढ़ते हुए उन्हें बालक के शरीर पर मारते जाएँ —

۱۴	۱۹	۲۴	۱۰
۲۱	۱۰	۱۵	۲۰
۱۱	■	۱۶	۹
۱۸	۱۳	۱۲	۲۳

१२

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अजवो या जिब्राईल या दरदाईल या रफ्तमाईल या तन्कर्फ़ील बहक्क या बुदूह हम्मन हम्मन हम्मन बहक्क लाइलाइल्लिलिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह या हैकल या हैकलन या कोकल या कोकलन बहक्क सुलैमान नबी बिन दाऊद अलैहुस्सलाम।"

जब बालक के ऊपर बादशाह आएँ, तब मेवा-मिठाई की भेंट सामने रखकर, जो कुछ पूछना हो वह बालक से पूछ लेना चाहिए।

दूसरी विधि

इस विधि में पहले निम्नलिखित मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक होता है—

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ी तू बड़ा जैनुद्दीनपैग़म्बरदुनी तेरा सादात फ़ुरो बाद ना ख़ुरादी ने बुनियादी तुर्क बाधीर ताइबालिकार देखूँ तेरी शक्ति बेगि बाँध ल्याव नौ

नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारासै शाकिनी कामन दुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया बेताल बेगी बाँधि ल्याव जो न बाँधि ल्यावे तो दुहाई सुलमान पैग़म्बर की।"

टिप्पणी—उक्त मन्त्र शुद्ध मुसलमानी न होकर लोक-प्रचलित देसी मन्त्रों में से एक है, परन्तु इसका प्रयोग हिन्दू तथा मुसलमान दोनों में खूब किया जाता है, इसी कारण इसका यहाँ उल्लेख किया गया है।

विधि—शुक्रवार के दिन से आरम्भ कर इत्र, तैल, फुलेल, लौंग, [illegible] की ४० दिनों तक नित्य १२०० की संख्या में जपते रहें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

उक्त विधि से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जब हाजिरात करनी हो, तब सर्वप्रथम नीचे प्रदर्शित यन्त्र को एक सफ़ेद कागज़ पर काली स्याही से लिख कर तैयार करें।

[illegible]	ट	३	ट	त
[illegible]	६	३	६	ट
[illegible]	२	६	२	क
[illegible]	८	५	४	ल

१३

यन्त्र लेखनोपरान्त पहले पीली मिट्टी से जमीन को लीप कर उस पर एक चावल की मस्जिद तथा कपास की बत्ती बनायें। फिर एक लकड़ी के पट्टे के ऊपर त्रिशूल रखकर, उसके ऊपर आठ-दस वर्ष की आयु वाली कुमारी कन्या को स्नान कराके तथा स्वच्छ वस्त्र पहिना कर बैठायें। कन्या के स्थान पर छोटी आयु के बालक को भी बैठाया जा सकता है।

इसके बाद आग में जलाये हुए मेंढक की राख को रुई में मिलाकर बत्ती तैयार करें तथा एक कोरे दीपक में चमेली का तेल भरकर उसमें उक्त बत्ती को डालकर जलायें तथा जलते हुए दीपक के आगे

यन्त्र को रखकर उसका फूल, इत्र तथा मिठाई से पूजन करें। यह दीपक लकड़ी के पट्टे पर बैठी कन्या या बालक की दृष्टि के एकदम सामने रहना चाहिए।

١	٨	٣	٨	ش
٥	٤	٣	٤	ر
L	٢	٩	٢	ک
L	٢	٥	٢	ل

१४

फिर कन्या अथवा बालक के हाथों की हथेलियों पर पूर्वोक्त मेंढक की राख को चमेली के तैल में सान कर लगा दें तथा उसे दीपक के ऊपर अपनी दृष्टि जमा देने के लिए कहें। जब वह दीपक पर अपनी निगाह जमा दे, तब अपने हाथों में चावल लेकर उन्हें पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। फिर बालक या कन्या के सिर पर उस दीपक को रखकर, अभिमन्त्रित चावलों को कन्या अथवा बालक के शरीर पर मारते हुए उससे इच्छित प्रश्न का उत्तर माँगें तो जो कुछ पूछा जायेगा, उसका उत्तर मिलता चला जाएगा।

०:०:०

[illegible] | बीसा और पन्द्रह के यंत्र

बीसा यन्त्र तथा पन्द्रह के यन्त्र—ये दोनों ही यन्त्र हिन्दू तथा मुसल-मानों में समान रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। यहाँ इन दोनों यन्त्रों की मुसल-मानी रीति से प्रयोग-विधि का उल्लेख किया जा रहा है, परन्तु उसमें पूर्व [illegible] के विषय में निम्नलिखित आवश्यक बातें जान लेनी आव-श्यक है।

यन्त्र की दिशाएँ

प्रत्येक यन्त्र की ४ दिशाएँ तथा ४ विदिशाएँ होती हैं। दिशा के बाँये [illegible] को 'विदिशा' माना जाता है तथा उसे उसी दिशा के अन्तर्गत माना जाता है। जिस प्रकार कि पूर्व दिशा का बाँया कोना 'अग्निकोण' है तो उसे भी पूर्व दिशा में ही शामिल किया जाता है।

इसी प्रकार प्रत्येक दिशा के दो घर होते हैं। नीचे के चित्रों में यन्त्र की दिशा-विदिशा तथा दिशाओं के घरों को प्रदर्शित किया गया है।

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर		दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य

१५

		पूर्व आत्शी		
उत्तर आबी	२	१	२	
	१		१	दक्षिण रवाकी
	२	१	२	
		पश्चिम बादी		

१६

		آتشی		
[illegible]	۲	۱	۲	
	۱		۱	[illegible]
	۲	۱	۲	
		[illegible]		

१७
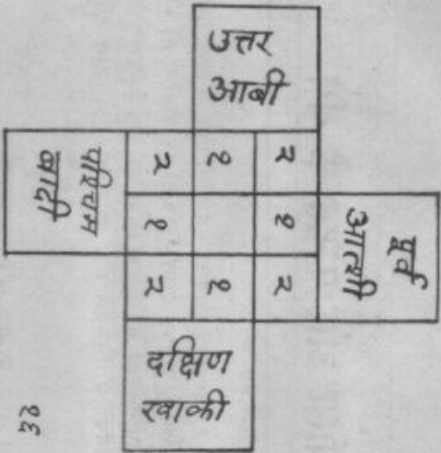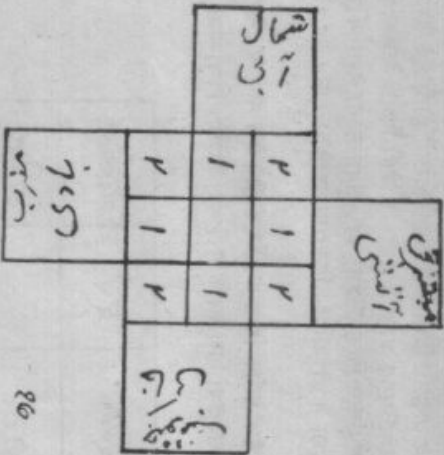
सोलह कोठे वाले यन्त्र

१६ कोठे (खाने या कोष्ठक) वाले यन्त्रों को वशीकरण-मारण आदि कर्मों के लिए बनाया जाता है। इनका नियम यह है कि जिस नाम का

[illegible] बनाना [illegible], उस नाम के अक्षर के अंकों को जोड़ कर, उसमें से ३० [illegible] जो अंक शेष बचे, उनके चौथाई में जो पूरा अंक आये अर्थात् [illegible] को पहले कोठे में रखकर शेष १५ [illegible] बढ़ा कर रखना चाहिए। जैसे—१०० का चौथाई [illegible] पहले कोठे में रक्खा जाएगा।

[illegible] जाना चाहिए, उसे नीचे प्रदर्शित यन्त्र [illegible] चाहिए।

८	११	१४	पहला
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

१८

۸	۱۱	۱۴	اوّل
۱۳	۲	۷	۱۲
۳	۱۶	۹	۶
۱۰	۵	۴	۱۵

१९

उदाहरण—'रामचन्द्र' नाम के २६८ अंक होते हैं (किस अक्षर के कितने अंक होते हैं, इसका वर्णन आगे किया गया है।)

'र' के २००, 'अ' का १, 'म' के ४०, 'च' के ३, 'न' के ५० तथा 'द' के ४। इनमें से ३० घटा देने पर २६८ अंक शेष रहे। चौथाई अंक ६७ है तो यन्त्र को नीचे प्रदर्शित यन्त्र-चित्र के अनुसार भरा जायेगा तथा इस यन्त्र को २६८ का यन्त्र माना जाएगा—

७४	७७	८०	६७
७९	६८	७३	७८
६९	८२	७५	७२
७६	७१	७०	८१

२०

۷۴	۷۷	۸۰	۶۷
۷۹	۶۸	۷۳	۷۸
۶۹	۸۲	۷۵	۷۲
۷۶	۷۱	۷۰	۸۱

२१

[illegible] के अंकों में से ३० घटाने पर शेष ऐसा अंक बचे, जिसकी [illegible] आता हो, आधा या चौथाई आता हो, तो समस्त [illegible] जो शेष बचें, उनको तेरहवें कोठे में रक्खें। [illegible] बढ़ाते हुए ३ कोठे १४।१५।१६ को भरें तथा प्रारम्भ [illegible] तक अंक रक्खें।

८	११	५७७	१
५७६	२	७	१२
३	५७९	९	६
१०	५	४	५७८

२२

۸	۱۱	۵۷۷	۱
۵۷۶	۲	۷	۱۲
۳	۵۷۹	۹	۶
۱۰	۵	۴	۵۷۸

२३

उदाहरण के लिए हिन्दी अक्षरों के अंकों के हिसाब से 'किशोरीलाल' के ५६७ अंक होते हैं। 'क' के २०', 'श' के ३००, 'ओ' के ६, 'र' के २००, 'ई' के १० और 'ल' के ३०। इनमें से ३० घटाने पर शेष ५६७ रहे। इनके चौथाई १४१ अंक पूरा नहीं आया तो ५६७ में से २१ घटाने पर शेष ५७६ रहे। इनको १३वें घर में रक्खा गया तो ५६७ हो गया। इसी प्रकार से जो यन्त्र तय्यार होगा, उसके स्वरूप को पिछले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है।

फारसी अक्षरों के अंक

हिन्दी तथा फारसी अक्षरों के अंकों का हिसाब अलग-अलग होता है। फ़ारसी अक्षरों के अंक इस प्रकार गिने जाते हैं—यहाँ हिन्दी अक्षरों के अंक अनावश्यक समझ कर नहीं दिये जा रहे हैं—

अलिफ—१	ज्वाद—८००
बे—२	तोय—९
ते—४००	जोय—९००
से—५००	ऐन—७०
जीम—३	गैन—१०००
हे—८	फे—८०
खे—६००	काफ—१००
दाल—४	गाफ—२०
जाल—७००	लाम—३०
रे—२००	मीम—४०
जे—७	नून—५०
सीन—६०	वाव—६
शीन—३००	हे—५
स्वाद—९०	ये—१०

उक्त नियम को ध्यान में रखते हुऐ यन्त्र-लेखन कार्य करना चाहिए।

यन्त्रों के जर्बे खाते

९ कोष्ठक के यन्त्र के ८ जर्ब खाते होते हैं। जितने का यन्त्र हो, आठों जर्ब में उतने ही अंक आने पर यन्त्र होता है। पहला अंक बाहर के ८ घरों में से किसी घर में रक्खा जाय, उससे यन्त्र की बादी, आबी आदि ४ प्रकार की प्रकृति जानी जाती है।

बीसा यन्त्र

[illegible] कई प्रकार के होते हैं। उसके कुछ भेदों का यहाँ वर्णन [illegible] है। बीसा यन्त्र-साधन की सामान्य-विधि इस प्रकार है—

[illegible] आबी, बादी आदि किसी भी प्रकार का क्यों न हो, उसे [illegible] लिखना चाहिए तथा अन्तिम [illegible] मिटाते जाना चाहिए। निश्चित संख्या के [illegible] फूल, मिठाई, इत्र, धूप, दीप आदि से [illegible] यदि कोई सम्बन्धित मन्त्र हो तो उसका जप [illegible] मिटाकर पृथ्वी पर पानी डाल देना चाहिए। [illegible] मिट्टी को उठाकर नदी में डाल देना चाहिए।

[illegible] किसी मन्त्र के जप का विधान भी हो तो [illegible] संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए, तत्पश्चात् [illegible] के कार्य करने चाहिए।

६ जर्बा बीसा यन्त्र (१)

[illegible] को ६ जर्बा बीसा यन्त्र कहा जाता है। इसे [illegible] जालंधर की आज्ञा अपने हृदय में ले लेनी [illegible] दिन तक प्रतिदिन २० की संख्या में लिखना [illegible] पूर्वकथनानुसार पृथ्वी पर लिखकर मिटाते रहें [illegible] लिखकर उसका पूजन करें। सवप्रथम [illegible] पढ़कर ४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ें।

[illegible] इस प्रकार है—

"[illegible] या दरदाईल या रफ्ताईल या तन्काफ़ील [illegible] या बुद्दूह।"

[illegible] ४० बार पढ़ने के बाद निम्नलिखित छोटा मन्त्र [illegible] पढ़ना चाहिए।

[illegible] इस प्रकार है—

"या बुद्दूह।"

[illegible] २००० बार पढ़ने के बाद फिर ४० बार पूर्वोक्त [illegible] पढ़ना चाहिए और जब चार घड़ी दिन बाकी रहे तब ४०० बार [illegible] पढ़ना चाहिए। मन्त्र पढ़ते समय यन्त्र को अपनी निगाह के [illegible] रखना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार होगा

२४

२५

सन्ध्या के समय यन्त्र की गोली बाँध कर उसे नदी में बहा देना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

यन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद प्रतिदिन १ यन्त्र लिखकर १०१ बार बहा मन्त्र पढ़ना चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार जब किसी मनोरथ की सिद्धि के लिए यन्त्र लिखें तो पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करके ० हजार बार

'या बुदूह' मन्त्र का पाठ करना चाहिए। मन्त्र-जप के प्रारम्भ में एक बार पूरी 'बिसमिल्लाह' का पाठ करके आदि तथा अन्त में चालीस-चालीस बार इस मन्त्र का पाठ करना चाहिए।

किसी मनोरथ को सिद्ध करने के लिए जब यन्त्र का साधन किया जाय, तब अपना मनोरथ यन्त्र के नीचे लिख देना चाहिए तथा बाद में यन्त्र को पृथ्वी में गाड़ देना चाहिए अथवा सिल के नीचे दबा देना चाहिए।

...ीसा यन्त्र

नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र १० जर्बा है। इस यन्त्र को कागज पर लिख-लिखकर दरिया (नदी) में बहा देना चाहिए। अन्य साधन-विधियाँ पूर्वोक्त ९ जर्बा मन्त्र की भाँति ही हैं।

४	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

२६

١	٨	٣	٨
٧	۴	٣	۴
ل	٢	٩	٢
ل	٤	۵	٢

२७

८ ज़र्बा बीसा यन्त्र

नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को रात्रि के समय पीपल के पत्तों के ऊपर अनगिनती संख्या में लिखते रहने से यन्त्र की अशुद्धता निकल जाती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

८	३	१०
९	७	४
३	११	६

२८

٨	٣	١٠
٩	٧	٤
٣	١١	٦

२९

यन्त्र को लिखते समय सर्वप्रथम पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर पूर्वोक्त बड़े मन्त्र—"या जिब्राईल या दर ....." का जप करते जाना चाहिए

तथा आखिरी यन्त्र को लोबान की धूनी देकर तथा एक बार पूरी बिस्मिल्लाह' पढ़कर २००० बार "या बुद्दूह" मन्त्र को पढ़ना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के आदि तथा अन्त में ४०-४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ना आवश्यक है। शेष सब विधि पहले यन्त्र की भाँति ही समझनी चाहिए।

[illegible] यन्त्र

नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र ४ ज़र्बा है। इसे लिखने तथा प्रयोग करने की विधि पहले यन्त्र की भाँति ही समझनी चाहिए।

३०

३१

६ ज़र्बा वोसा यन्त्र (२)

३२

नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र ६ ज़र्बा है। इसे लिखने तथा प्रयोग करने की विधि भी पहले यन्त्र की भांति ही समझनी चाहिए।

३३

पन्द्रह का यन्त्र

पन्द्रह के यन्त्र (१) खाकी, (२) बादी, (३) आबी तथा (४) आतशी। ये चार प्रकार के होते हैं।

'खाकी-यन्त्र' का स्वरूप इस प्रकार होता है—

४	३	८
९	५	१
२	७	६

३४

۴	۳	۸
۹	۵	۱
۲	۷	۶

३५

इस यन्त्र की राशियाँ वृष, कन्या तथा मकर मानी गई हैं।

इन राशियों के मुवक्किल क्रमशः (१) इज्राईल, (२) जिब्राईल, तथा (३) सरकाईल हैं। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से या काली स्याही से सफेद कागज पर लिखना चाहिए। इस यन्त्र की दिशा दक्षिण है तथा इसे स्थिर-कर्मों की सिद्धि के लिए प्रयोग में लाया जाता है। साधनोपरान्त इस यन्त्र को पृथ्वी है में गाढ़ दिया जाता।

'बादो' यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनता है—

४	९	२
३	५	७
८	१	६

३६

٢	٩	٤
٣	٥	٧
٨	١	٦

३७

इस यन्त्र की राशियाँ मिथुन, तुला और कुम्भ मानी गई हैं। इन राशियों के मुवक्किल क्रमशः (१) इस्राफील, (२) इस्माईल तथा (३) महिकाईल हैं। इस यन्त्र को स्याही, रक्त अथवा चन्दन से लिखना चाहिए। इस यन्त्र की दिशा पश्चिम है तथा इसे उच्चाटन एवं मारण कर्म के लिए प्रयोग में लाया जाता है। साधनोपरान्त इस यन्त्र को पत्थर के नीचे दबा देना चाहिए अथवा दरवाजे पर लटका देना चाहिए।

'आबी' यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनता है—

८	३	४
१	५	९
६	७	२

३८

٨	٣	٢
١	٥	٩
٦	٧	٤

३९

इस यन्त्र की राशियाँ कर्क, मीन तथा वृश्चिक मानी गई हैं। इन राशियों के मुवक्किल क्रमशः (१) दहकाईल, (२) वकपाईल तथा (३) सरफाईल हैं। इस यन्त्र को ताजा स्याही से सफेद कागज पर लिखना चाहिए। इस यन्त्र की दिशा उत्तर है तथा इसे चर-कर्म के लिए प्रयोग में लाया जाता है। साधनोपरान्त इस यन्त्र को बहते हुए पानी में बहा देना चाहिए।

'[illegible]' यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनता है—

[illegible]	१	८
[illegible]	५	४
[illegible]	९	३

४०

٦	١	٨
٧	٥	٢
٤	٩	٣

४१

इस यन्त्र की राशियाँ मेष, सिंह तथा धनु मानी गईं। इन राशियों के मुवक्किल क्रमशः (१) इस्राफील, (२) जहराईल तथा (३) सरताईल हैं। इस यन्त्र को नील, कपूर तथा स्याही से लिखना चाहिए। इस यन्त्र की दिशा पूर्व है तथा इसे शत्रुता के लिए प्रयोग में लाया जाता है। साधनोपरान्त इस यन्त्र को अग्नि में जला देना चाहिए।

पन्द्रह के यन्त्र के कोठे के मन्त्र

मन्त्र—अजबो या इस्राफील बहक्क या अल्ला हो ॥१॥
अजबो या जिब्राईल बहक्क या बुद्दूह ॥२॥
अजबो या किलकाईल बहक्क या जामिओ ॥३॥
अजबो या दरदाईल बहक्क या दाहमो ॥४॥
अजबो या दौराईल बहक्क या हादियो ॥५॥
अजबो या रफ्ताईल बहक्क या रज्जाको ॥६॥
अजबो या सरफाईल बहक्क या बुद्दूह ॥७॥
अजबो या तन्काफील या बहक्क या हलीमो ॥८॥
अजबो या इस्माईल बहक्क या ताहिरो ॥९॥

पन्द्रह के यन्त्र के प्रत्येक कोठे के अलग-अलग मन्त्र इस प्रकार हैं –

याबुद्दूह ६	या रज्जाके २	याबुद्दूह ७
या अल्लाह १	याहादियो ५	याताहिरो ६
या हलीमो ८	या जामिओ ३	यादाइमो ४

४२

یا بدوح ۴	یا رزاق ۲	یا بدوح ۷
یا اللہ ۱	یا ہادیو ۵	یا طاہرو ۹
یا حلیمو ۸	یا جامع او ۳	یا دائمو ۶

४३

विधि—किसी शुभ महीने के पहले वृहस्पति को कूर्मचक्र के अनुसार आसन बिछाकर, शुभ वार, दिशा, चन्द्रमा आदि का विचार करके बैठें। योगिनी पीठ पीछे रहनी चाहिए। फिर पानी भरा घड़ा तथा दीपक जला कर सामने रखें तथा लोबान की धूनी देकर सफेद कागज पर काली स्याही से यन्त्र को लिखना आरम्भ करें। (कूर्मचक्र के विषय में हमारी पुस्तक 'हिन्द तन्त्र-शास्त्र' का अध्ययन करना चाहिए।)

[illegible] दिनों तक यन्त्र को लिखें। प्रत्येक कोठे को लिखते समय [illegible] उच्चारण करते जाना चाहिये। प्रतिदिन १०१ यन्त्र लिखने [illegible]। आखिरी यन्त्र पर फूल, मिठाई, इत्र आदि को सभी कोठों पर [illegible] पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर एक-एक यन्त्र को १०१-१०१ [illegible]। यन्त्र के आदि तथा अन्त में ११-११ बार 'दरूद' [illegible] दिनों तक नियमित साधन करते रहने पर, प्रयोग [illegible] साधक की मनोकामना पूर्ण हो [illegible]।

यन्त्र लिखने की क़लम

[illegible] मनोभिलाषाओं की पूर्ति हेतु १५ के यन्त्र को विभिन्न [illegible] की क़लम से लिखा जाता है। जैसे –

[illegible] कार्यों की सिद्धि के लिए—चमेली की लकड़ी की क़लम से।
[illegible] के लिए—जामुन की लकड़ी की क़लम से।
[illegible] के लिए बरगद की लकड़ी की क़लम से।
वशीकरण के लिए कुश की क़लम से।
शुभ कार्य के लिए सोने अथवा चाँदी की क़लम से।

लिखने की स्याही के रूप में केशर, चंदन, अगर, कपूर तथा कस्तूरी के अतिरिक्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु अन्य वस्तुओं का प्रयोग भी किया जाता है। इसी प्रकार भोजपत्र तथा कागज के अतिरिक्त विभिन्न [illegible] के पत्तों पर भी इन्हें लिखने का नियम है। यथा –

सन्तान-प्राप्ति के लिए शतावर के पत्ते पर।
[illegible]-वृद्धि के लिए—बरगद के पत्ते पर।
[illegible]-प्राप्ति के लिए कमल के पत्ते पर।
[illegible] के लिए काँसी के पत्ते पर।
[illegible]-प्राप्ति के लिए केले के पत्ते पर।

पन्द्रह के यन्त्र के विविध प्रयोग

१. पन्द्रह के यन्त्र को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की क़लम से [illegible] के ऊपर १००० की संख्या में लिखने से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का लाभ होता है।

२. अनार की क़लम से पृथ्वी के ऊपर १००० की संख्या में लिखने से [illegible] बन्धन से छूट जाता है तथा सेवक की स्वामी से मित्रता होती है।

३. पीपल की क़लम से लिखने पर दरिद्रता का नाश होता है।

४—गोमूत्र, मैनसिल, कपूर, तगर तथा गोरोचन की स्याही बना कर पीपल की जड़ की क़लम से, भोजपत्र के ऊपर १००० की संख्या में इस यन्त्र को लिखने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

५—बेल के पत्तों का रस, हरताल और मैनसिल—इन सबके मिश्रण द्वारा बेल की कलम से २००० की संख्या में यन्त्र किसी एकान्त तथा शुभ स्थान में बैठकर पृथ्वी पर लिखने से मनोभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

६—आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर ही १०८ की संख्या में यन्त्र लिखकर कीकर (बबूल) के वृक्ष में बाँध देने से इन्द्र जैसे प्रबल शत्रु को भी ज्वर तथा देहशूल का शिकार बनना पड़ता है।

७—हल्दी को पानी में घिसकर, उसके द्वारा पत्थर के ऊपर [illegible] यन्त्र लिखकर, उसे दुश्मन के घर की चौखट के नीचे गाड़ देने से, उसकी अपने बेटे, भाई, संबंधी आदि से कलह होने लगती है।

८—अपामार्ग (ओंगा, चिरचिटा या अजाझारा) के रस से भोजपत्र के ऊपर यह यन्त्र लिखकर ज्वर-रोगी के गले में बाँध देने से तिजारी, चौथैया आदि हर प्रकार के पारी के ज्वर दूर हो जाते हैं।

९—मोंगरे के रस से भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखकर भुजा तथा हृदय पर धारण करने से शास्त्रार्थ में विजय होती है।

१०—पन्द्रह के यन्त्र की सवा लाख गोलियाँ तय्यार करके उन्हें अलग-अलग आटे की गोलियों में बन्द करें तथा गोलियों को मछलियों को खाने के लिए पानी में डाल दें तो सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

११—आक के पत्तों पर पन्द्रह दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में इस यन्त्र को लिखें तथा यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिखकर उन यन्त्र-लिखित पत्तों को अग्नि में जला दें तो शत्रु का नाश हो जाता है।

अन्य नियम

१—कार्य सिद्धि के लिए पन्द्रह के यन्त्र को लिखते समय उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए तथा अनार की क़लम से लिखना चाहिए।

२—शत्रु को कष्ट पहुँचाने अथवा मारण-कर्म के लिए पन्द्रह के यन्त्र को लिखते समय दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए तथा लोहे की क़लम से लिखना चाहिए। यन्त्र को १०१ बार लिखकर मिटाना चाहिए तथा बैरी के नाम का संकल्प करना चाहिए।

३—शुभ-कार्य के लिए लिखना हो तो पहले संकल्प करके शुक्ल पक्ष में किसी उत्तम दिन से यंत्र को लिखना आरम्भ करना चाहिए।

४—अशुभ कार्य के लिए लिखना हो तो कृष्ण पक्ष में किसी अशुभ दिन से यंत्र को लिखना आरम्भ करना चाहिए।

५—पन्द्रह के यन्त्र का साधन करते समय ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए एवं केवल मूँग की दाल तथा चावल का भोजन करना चहिए।

[illegible] यंत्र को लिखने के बाद नदी में बहा देना चाहिए। जो यंत्र [illegible] निकलकर बाहर किनारे पर आ पड़े उसे अपने पास रखना चाहिए। [illegible] प्रभाव से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती रहेंगी।

यन्त्र लेखन संख्या

विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए १५ का यंत्र निम्नलिखित [illegible] लिखना चाहिए—

(१) [illegible] के लिए—२०००
(२) रोग-मुक्ति के लिए—६०००
(३) वशीकरण के लिए—३०००
(४) ईश्वर की प्रसन्नता के लिए—४०००
(५) देवता की प्रसन्नता के लिए—५०००
(६) रोजगार प्राप्ति के लिए—४०००
(७) परदेश गये हुए को घर बुलाने के लिए—२०००
(८) बाँझ स्त्री को गर्भ-धारण के लिए—५०००
(९) मनवांछित कार्य के लिए—१५०००
(१०) खेती के उत्पादन में वृद्धि के लिए—५०००
(११) मित्र से मिलाप के लिए—२०००
(१२) मन्त्र की सिद्धि के लिए—३०००
(१३) प्रेत को भगाने के लिए—२०००
(१४) गई-वस्तु को प्राप्त करने के लिए—५०००
(१५) शत्रु को वश में करने के लिए—२०००
(१६) बन्धन-मुक्ति के लिए—६०००
(१७) विष-नाश के लिए—२५००
(१८) सरस्वती की प्रसन्नता के लिए—१०००
(१९) शत्रुता दूर करने के लिए—२०००
(२०) औषधि की सिद्धि के लिए—१०००
(२१) तिजारी दूर करने के लिए—६०००
(२२) दुःख दूर करने तथा सुख-प्राप्ति के लिए—२०००
(२३) राजसभा को मोहित करने के लिए—२०००
(२४) राजा को प्रसन्न करने के लिए—४०००
(२५) अनहोनी बात करने के लिए—१०००००

वारानुसार यन्त्र-प्रयोग

विभिन्न वारों (दिनों) में १५ के यन्त्र को विभिन्न भाँति से लिखने

पर विभिन्न कामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस सम्बन्ध में निम्नानुसार समझना चाहिए –

रविवार रविवार के दिन आक के दूध में मरघट की भस्म मिलाकर पन्द्रह का यन्त्र लिखें तथा उसके नीचे शत्रु का नाम लिखकर चिता की अग्नि में डाल दें। ऐसा १०८ बार करने से शत्रु विक्षिप्त हो जाता है।

सोमवार – सोमवार के दिन सफ़ेद दूब, केशर, सफेद निरमिटी तथा कपिला गाय का दूध – इन सबको मिला कर संध्या के समय [illegible] यन्त्र को विलोम रीति से लिखकर बाहु अथवा कंठ में बाँध लें तो राजा भी वशीभूत हो जाता है अन्य लोगों के विषय में तो कहना ही क्या है?

मंगलवार – मंगलवार के दिन कौए के पंख की कलम द्वारा कौए के ही रक्त से, मुर्दे के कफ़न के ऊपर साध्य-व्यक्ति के नाम सहित यन्त्र को लिखकर, उसी (साध्य-व्यक्ति) के दरवाजे पर गाड़ दें तो साध्य-व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

बुधवार बुधवार के दिन नाग केशर तथा गोरोचन से यन्त्र को कागज पर लिखकर बत्ती बनालें फिर उसे सरसों के तेल के दीपक में जलाकर मनुष्य की खोपड़ी में काजल पारें तथा उस काजल को अपनी आँखों में लगाकर जिस साध्य स्त्री-पुरुष के सामने जायेंगे, वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

गुरुवार गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन तथा घी – इन सब वस्तुओं के मिश्रण से यन्त्र को लिखकर उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें फिर उस यन्त्र को अपने बैठने के आसन के नीचे दबावें तो साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

शुक्रवार शुक्रवार के दिन कपूर बच, कूठ और शहद – इन सब वस्तुओं को मिलाकर यन्त्र को लिखें तथा उसे कंठ अथवा भुजा में बाँधलें तो साध्य स्त्री अपने तन-मन एवं धन सहित साधक के समीप चली आती है।

शनिवार शनिवार के दिन चिता की लकड़ी की कलम तथा मुर्गे के रक्त द्वारा उल्टा यन्त्र लिखकर उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें, फिर उसे मरघट में गाड़ देने से साध्य-व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

यन्त्र-लेखन के विषय में अन्य ज्ञातव्य

किसी भी यन्त्र को लिखते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करना आवश्यक है

१. यन्त्र लेखन से पूर्व शौच-स्नानादि से निवृत्त हो जाना आवश्यक है।

२. किसी पवित्र स्थान में, शुभ मुहूर्त का विचार करके 'कुमसिन' की विधि से बैठकर ही यन्त्र लिखना चाहिए।

३. जितने दिनों तक यन्त्र-साधन करें, उतने दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा हर प्रकार की बुराई, पाप-कर्म- असत्य-भाषण, हिंसा, निन्दा, ईर्ष्या, क्रोध आदि से दूर रहना चाहिए।

४. यन्त्र लिखने का समय निश्चित कर लेना चाहिए अर्थात् प्रति-[illegible] कार्य करना चाहिए।

५. यन्त्र से पूर्व पानी से भरे कलश (घड़े) को अपने सामने स्थापित कर लेना चाहिए अथवा रात्रि में लिखना हो तो सामने दीपक जला लेना चाहिए।

६. यदि एक से अधिक संख्या में यन्त्र लिखने हों तो अन्तिम बार लिखे जाने वाले यन्त्र का विधिवत् पूजन करना चाहिए। जहाँ केवल एक ही यन्त्र लिखने का विधान हो, वहाँ पहले ही यन्त्र का विधिवत् पूजन करना चाहिए। यन्त्र पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि का होना आवश्यक है।

७. मुस्लिम-विधि में यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखा जाता है। हिन्दू-विधि में यन्त्र लिखने के विभिन्न प्रकारों के विषय में पहले बताया जा चुका है।

८. मित्रता के लिये यन्त्र लिखना हो तो मुँह में मिश्री अथवा गाय का घी रखकर लिखना चाहिए तथा अगर-तगर, चन्दन चूरा, गूगल, मिश्री, गाय का घी, शहद, कपूर, दाल चीनी, जायफल तथा मेवा – इन सबको मिलाकर धूप देनी चाहिए।

९. मारण-उच्चाटन के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में मोम रख लेना चाहिए तथा उसी (मोम) की धूनी देनी चाहिये।

१०. यदि स्वप्न बन्द करने के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में केवल नमक रखना चाहिए तथा उसी (नमक) की धूनी देनी चाहिए।

११. यन्त्र लिखने वाले तथा साध्य-व्यक्ति की राशि का मिलान करके यन्त्र लिखना उचित है। यदि साधक की राशि 'आबी' तथा साध्य की 'आतशी' हो तो 'आबी' यन्त्र लिखना चाहिए। क्योंकि जल अग्नि से प्रबल होता है। इसी प्रकार साधक की राशि 'बादी' और साध्य की 'खाकी' हो तो 'बादी' यन्त्र लिखना चाहिए।

४ | कार्य-साधक एवं रोजी-दायक प्रयोग

इस प्रकरण में मनोकामना-पूरक, दरिद्रता नाशक, रोजी-दायक, कार्य-साधक तथा दूकान की बिक्री खोलने से सम्बन्धित कतिपय मुख्य प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है।

इन प्रयोगों में 'अन्तिम से पूर्व के दो प्रयोग',—'कार्य साधन मन्त्र तथा 'मुसीबत टालने का मन्त्र,'—ये तीनों शुद्ध 'इस्लामी प्रयोग' न होकर लोक प्रचलित हैं, परन्तु इन्हें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही प्रयोग में लाते हैं, अतः उनका उल्लेख भी साथ ही कर दिया गया है।

'मनोकामना पूरक यन्त्र' तथा 'रोजी मिलने का प्रयोग संख्या (४)' इन दोनों में पहले में केवल यन्त्र का साधन किया जाता है तथा दूसरे में यन्त्र तथा मन्त्र—दोनों की साधना की जाती है। शेष सभी प्रयोग केवल मन्त्र-साधन के हैं, अतः जिस प्रयोग के साथ जिस विधि का उल्लेख किया गया है, उसका यथोचित रूप में साधन करना चाहिए।

जैसा कि प्रथम प्रकरण में ही बताया जा चुका है कि किसी भी मुसलमानी मन्त्र का साधन करते समय सर्वप्रथम पूरी 'बिस्मिल्लाह' को पढ़ना आवश्यक है, तदुपरान्त मन्त्र के आरम्भ तथा अन्त में 'दरूद' पढ़ना भी निहायत जरूरी है। अतः इस नियम का पालन अवश्य करना चाहिए। 'बिस्मिल्लाह' तथा 'दरूद' पढ़ने की आवश्यकता का उल्लेख अधिकांश प्रयोगों में साथ ही कर दिया गया है, परन्तु जहाँ ऐसा निर्देश न हो, वहाँ भी इस नियम का पालन करना आवश्यकहै।

मनोकामना पूरक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर गूगल तथा लोबान की धूनी देने के बाद ताबीज में भरकर जिस व्यक्ति की बाँह में बाँध दिया जाता है, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

इस यन्त्र को ताबीज में भरकर गले या भुजा में बाँधने से धन, यश तथा स्वास्थ्य का लाभ होता है एवं शत्रु मित्र बन जाता है।

इस यन्त्र को पानी में घोलकर रोगी-व्यक्ति को पिलाने से उसका रोग दूर हो जाता है।

टिप्पणी—किसी ग्रहण के समय इस यन्त्र को १०००० बार कागज पर लिखकर पूजन करने से यन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

हुसैनआला ३०	१२ ७२९३ २९	१६ ८९७ २	२९ ९११९४२५ ८	अलमुहम्मद फ[illegible]हुसैन
४१९१९४१ २३ ३	४९८ ९	४३०४ १५	७२९१ १६	९०० २३
७२ ८९ ११	८९५ १८	४२६२९९ १९ २३	४५६ ४	२३०७ १५
४५९	१३०५	४७९६	८९६	४२४१९९ १९४०
अस्करी मुहम्मद आला ८९९	५ २३४१९९ १९४	६ ४५७	१२ १३०८	मूसा काजम अली मूसा रजा मुहम्मद २७९.

४४

حسین آلہ	۱۲	۱۶	۲۹	ال محمد فاطمہ حسین
۳۰	۷۲۹۳ ۲۹	۸۹۷ ۲	۹۹۱۹۴۲۵ ۸	
۴۱۹۱۹۴۱ ۲۳ ۳	۴۹۸ ۹	۴۳۰۴ ۱۵	۷۲۹۱ ۱۶	۹۰۰ ۲۳
۷۲۸۹ ۱۱	۸۹۵ ۱۸	۴۲۶۲۹۹ ۱۹ ۲۳	۴۵۶ ۴	۲۳۰۷ ۱۵
۴۵۹	۱۳۰۵	۴۷۹۶	۸۹۶	۴۲۴۱۹۹ ۱۹۴۰
عسکری محمد آلہ	۵	۶	۱۲	موسیٰ کاظم علی موسیٰ رضا محمد
۸۹۹	۲۳۴۱۹۹ ۱۹۴	۴۵۷۴	۱۳۰۸	۴۷۹

۶۵

मनोकामना पूरक प्रयोग

सर्वप्रथम उर्दू के सवा पाव आटे में खमीर उठाकर तथा उसकी रोटी बनाकर उसे दो तह वाले एक सफेद रूमाल में रक्खें। फिर उसमें से चौथाई रोटी की जंगली झरबेरी के बराबर की १०१ गोलियाँ बनाकर प्रत्येक गोली को निम्नलिखित मन्त्र से ग्यारह-ग्यारह बार अभिमन्त्रित करें, तदुपरांत शेष रोटी सहित सभी गोलियों को किसी नदी में मछलियों को खाने के लिए डाल दें। इस प्रकार ४० दिन तक प्रयोग करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं तथा रोजी भी प्राप्त होती है।

मन्त्र—"या इस्राफ़ील बहक्क या अल्लाहो।"

उक्त मन्त्र के आरम्भ में एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा आदि और अन्त में ७-७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

दरिद्रता-नाशक प्रयोग

प्रातःकाल किसी से बातचीत करने से पूर्व, हाथ-मुँह धोकर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बाद निम्नलिखित मन्त्र का १२०० बार जप करें—

मन्त्र—"या क़वीयो या ग़नीयो या मलीयो या बक़ीयो।"

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में २१-२१ बार 'दरूद' का पाठ भी अवश्य करना चाहिए।

इस प्रयोग को निरन्तर ४० दिनों तक करते रहने से दरिद्रता दूर होती है। यदि इस प्रयोग को प्रतिदिन किया जाय तो दरिद्रता से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है।

रोजी मिलने का प्रयोग (१)

रोजी मिलने के लिये सर्वप्रथम पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर नीचे लिखे मन्त्र को ७ दिनों तक, नित्य १००० की संख्या में जपना चाहिए। मन्त्र-जप के आरम्भ तथा अन्त में तीन-तीन बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

मन्त्र—"या बुद्दूह या या हयियो या क़यियूमो या अल्लाहो या फ़रदो या बितरो या समदो या रहीमो या वारिसो या अहदो या लमयलिदो बलम युलद बलमयक़ुन लुहू कुफ़्वन अहद।"

उक्त मन्त्र के प्रयोग से रोजी प्राप्त होती है। जब रोजी मिलना आरम्भ हो जाय, तब नित्य १०८ बार इस मन्त्र का जप करते रहना आवश्यक है।

रोजी मिलने का प्रयोग (२)

रोजी तथा लाभ पाने के लिए आधी रात के समय सबसे पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को १००० बार पढ़ें—

'या ग़फ़ूरो'

उक्त मन्त्र को पढ़ने के पहले तथा बाद में २१ बार 'दरूद' पढ़ना भी आवश्यक है।

इक्कीस दिनों तक उक्त प्रयोग करने से लाभ तथा रोजी-प्राप्ति की सूरत दिखाई देने लगती है।

जब रोजी मिलने लगे तब इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करते रहना चाहिए।

रोजी मिलने का प्रयोग (३)

मन्त्र— **"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो अल्ला हुस्नसल्ला मुहम्मद नव धारक नसल्लम।"**

विधि—शुक्रवार या बृहस्पति वार से इस प्रयोग को आरम्भ करना चाहिये। सर्वप्रथम सवा पाव उर्द के आटे की दो रोटियाँ हाथ से बनाकर उन्हें एक सफेद रूमाल में रक्खें, फिर उन रोटियों से झरबेर के बराबर की १०१ गोलियाँ बनायें तथा उनमें से प्रत्येक गोली को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। तदुपरान्त उन गोलियों तथा शेष बची हुई रोटी को रूमाल में रखकर किसी नदी के किनारे पहुँचे और गोलियों को नदी की धारा में फेंक कर, शेष बची रोटी को टुकड़े-टुकड़े करके पक्षियों को खिला दें।

उक्त प्रयोग को ४० दिनों तक नित्य नियमित रूप से करते रहने पर रोजी प्राप्त होती है।

मन्त्र के आरम्भ में पहले एक बार पूरा 'बिस्मिल्लाह' तथा शुरू एवं आखीर में ७-७ बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिये।

रोजी मिलने का प्रयोग (४)

सर्व प्रथम महीने के पहले वृहस्पतिवार को सूर्योदय से पहले सफेद कागज पर नई स्याही से नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखें—

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

६६

٥	٤٨	١٨
·٣٥	٢٤	١٢
٣٠		٤٢

४०

इसके बाद किसी नदी या तालाब में नाभि के बराबर पानी में पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके खड़े हो जायें तथा एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर, नीचे लिखे मन्त्र को ४४४४ या ३३३३ बार पढ़ें—

मन्त्र—**"अजिबो या जिब्राईल बहक्क या बासितो।"**

उक्त मन्त्र के आदि तथा अन्त में ७१-७१ बार 'दरूद' पढ़नी चाहिए। दरूद का मन्त्र इस प्रकार है—

दरूद— **"अल्ला हुम्मासल्ले अल्ला मुहम्मदिन व अलआले मुहम्मदिन व बारिक वसल्लम्।"**

उक्त प्रकार से नित्य ७२ दिनों तक मन्त्र जप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

यन्त्र को प्रतिदिन एक धागे में पिरोकर अपने घर के दरवाजे पर टाँग देना चाहिए और दूसरे दिन आटे में गोली बाँधकर, उस गोली को बूरे (चीनी) में लपेट कर यन्त्र को नदी में बहा देना चाहिए। ७२ दिन पीछे एक यन्त्र लिखकर ७२ मन्त्र जप लेने चाहिये। इस प्रयोग को आरम्भ करने के १० दिन बाद ही रोजी प्राप्त होने लगती है। ७२ दिन के बाद फकीरों को खाना खिला दें।

रोजी मिलने का प्रयोग (५)

नीचे प्रदर्शित 'या बुद्‌ूह यन्त्र' को किसी शुभ महीने के पहले वृहस्पतिवार को, ग्रहण के दिन अथवा दिवाली की रात को लिखना चाहिए।

पहले चमेली के तेल का दीपक जलाकर, उसके सामने सवा पाव मिठाई तथा सुगन्धित इत्र रखकर, लोबान की धूनी दें। फिर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को १६ बार अंगुली द्वारा पृथ्वी पर लिखें। एक-एक यन्त्र लिखकर उस पर एक-एक बतासा तथा फूल चढ़ाकर यन्त्र को मिटाते जायें। यन्त्र लिखते समय 'या बुद्दूह' यह मन्त्र पढ़ते जायें।

बीसवें यन्त्र को सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से लिखें तथा उस पर बची हुई मिठाई, फूल, इत्र आदि सबको चढ़ा दें। फिर दीपक की लौ के ऊपर यन्त्र को रखकर, लोबान की धूनी दें।

फिर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर २१ बार 'दरूद' तथा ४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ें। बड़ा मन्त्र इस प्रकार है—

"या जिब्राईल या दरदाईल या रफ्ताईल तन्काफील बहक्क या बुद्दूह।'

यन्त्र का स्वरूप यह होगा—

या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह
या बुद्दूह	६२ ल	६४ ल	या बुद्दूह
या बुद्दूह	६४ ल	६२ ल	या बुद्दूह
या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह	या बुद्दूह

४८

फिर बीस हजार बार छोटा मन्त्र 'या बुद्दूह' पढ़ें, फिर ४० बार बड़ा मन्त्र तथा २१ बार 'दरूद' पढ़कर, यन्त्र को सोने अथवा चाँदी के ताबीज में भरकर दायें हाथ में बाँधें तथा प्रतिदिन ताबीज को लोबान की धूनी देकर, दो हजार बार 'या बुद्दूह' इस मन्त्र को पढ़ लिया करें तो बिना किसी सन्देह के रोजी प्राप्त होती है।

उदर पूर्ति के लिए इस यन्त्र को नित्य एक बार कागज पर लिख कर, उसका धूप-दीप, नैवेद्य, फूल आदि से पूजन कर उस पर दृष्टि जमाये [illegible] १००१ बार पूर्वोक्त मन्त्र का जप करें तो रोजी खुल जाती है तथा उदर-पूर्ति होती है।

يا بدوح	يا بدوح	يا بدوح	يا بدوح
يا بدوح	۵۲ ل	۵۸ ل	يا بدوح
يا بدوح	۵۸ ل	۵۲ ل	يا بدوح
يا بدوح	يا بدوح	يا بدوح	يا بدوح

४६

दरिद्रता-नाशक ७८६ का यन्त्र प्रयोग

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखें। यन्त्र के सबसे ऊपरी हिस्से में 'बिस्मिल्लाह' लिखें, इस यन्त्र का पूजन आदि पूर्वोक्त 'या बुद्दूह, यन्त्र की भाँति ही करें।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनेगा—

१९८	२०२	२०५	१९१
२०४	१९२	१९७	२०३
१९३	२०७	२००	१९६
२०१	१९५	२९४	२०६

५०

۱۹۸	۲۰۲	۳۰۵	۱۹۱
۲۰۹	۱۹۲	۱۹۷	۲۰۳
۱۹۳	۲۰۸	۲۰۰	۱۹۹
۲۰۱	۱۹۵	۲۹۴	۲۰۶

५१

यन्त्र लेखनोपरान्त पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ें, फिर १००१ बार निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ें—

"या अल्लाहो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कैयूमो ।"

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ग्यारह-ग्यारह बार 'दरूद' पढ़ें। तत्पश्चात् यन्त्र को सोने या चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर अपनी दाँई भुजा में धारण कर लें। साथ ही प्रति दिन प्रातःकाल यन्त्र को लोबान की धूनी अवश्य देते रहें।

इस प्रयोग से रोजी प्राप्त होने लगती है तथा दरिद्रता दूर हो जाती है।

मुसीबत टालने का मंत्र

मन्त्र— "शेख फरीद की कामरी और अँधियारी निसि।
[illegible] आग ओला-पानी बिस ॥

विधि—यदि रास्ते में आग लग पाय या पानी बरसने लगे या ओले पड़ें या किसी के द्वारा जहर देने का भय हो तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर ताली बजाने से मुसीबत टल जाती है।

दूकान की बिक्री खोलने का यन्त्र

यदि किसी ने जादू-टोना अथवा तांत्रिक प्रयोग करके दूकान की बिक्री बन्द कर दी हो तो निम्नलिखित यन्त्र का साधन करने से बिक्री खुल जाती है तथा माल खूब बिकने लगता है।

विधि—शुक्ल पक्ष के पहले वृहस्पतिवार को कूर्म चक्र की रीति से आसन पर बैठकर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर स्याही से ७ बार लिखें। फिर यन्त्र पर फूल रखकर लोबान की धूनी दें, तदुपरांत एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर ११ बार 'दरूद' पढ़ें, फिर निम्नलिखित मन्त्र को १०१ बार पढ़ें—

मन्त्र— "बिर्रिज्कुलफत्तह दूकान फलाने की बिसुतन फलाने का जारीगर्दी बहक्क या फत्ताहो या बासितो।"

उक्त मन्त्र को १०१ बार पढ़ने के बाद फिर ११ बार 'दरूद' पढ़ें। प्रतिदिन आखिर में लिखे हुये एक मन्त्र का फलीता बनाकर उसे मीठे तेल के दीपक में, दूकान में ७ दिन तक जलायें तो दूकान की बिक्री खुल जाती है।

विशेष—यन्त्र के नीचे उक्त मन्त्र को लिखना भी आवश्यक है। यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

४२

۸۲۹	۸۲۶	۸۳۰	۸۱۴
۸۲۹	۸۱۶	۸۲۳	۸۲۸
۸۱۸	۸۲۳	۸۲۵	۸۲۲
۸۲۴	۸۲۱	۸۱۹	۸۳۱

४३

कार्य-साधन मन्त्र (१)

मन्त्र—"ओम् नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा, सुलेमान पैगम्बर के चारों दिक चार मवक्किल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया, एक मवक्किल पूरब को धाया, देव-दानवों को बाँधि लाया, दूसरा मवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत को बाँधि लाया, तीसरा मवक्किल उत्तर को धाया अऊत-पितर को बाँधि लाया, चौथा मवक्किल दक्खिन को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ लाया। चार चार मवक्किल चहुँ दिशि धावे, छल-छिद्र कोऊ रहन न पावे, रोग दोष सब दूर बहावे। शब्द साँचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।"

 आधी रात के समय चारों कोनों में गाड़ दें, फिर धूप-दीप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र को जपें तो इच्छित-कार्य सिद्ध होता है। पहले इस मन्त्र को ग्रहण, दिवाली या होली की रात में एक लाख की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए।

कार्य-साधन मन्त्र (२)

मन्त्र—"ओम् नमो बिस्मिल्लाहि रहिमान रहीम गजनी सों चला मुहम्मदा पीर, चला चला सवासेर का तोला खाय, अस्सी कोस का धावा जाय, सफेद घोड़ा सफेद पलान, जापै चढ़ा मुहम्मदा ज्वान, नौ सौ कुत्तक आगे चलें, कुत्तक पीछे चलें, काँधा पीछे भारत डाला, ध्याया चलै चालि-चालि रे मुहम्मदा पीर, तेरे सम नहीं कोई बीर, हमारे चोर को ल्याव, सात समुद्र की खाई सों ल्याव, ब्रह्मा के वेद सों ल्याव, काजी की कुरान सों ल्याव, अठारह पुराण सों ल्याव, जाव जाव जहाँ होय तहाँ सों गढ़ा सों पर्वत सों कोट सों किला सों ल्याव, मुहल्ला गली सों ल्याव, कूँचा चौराहा सों ल्याव, श्वेत खाना सों ल्याव, बारह आभूषन सोलह सिंगार सों ल्याव, काजल कजरौटा सों ल्याव, मढ़ी की मीढ़ सों, हाट-बाजार सों ल्याव, खाट सों, पाया सों, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा की घूमती बलाय सों ल्याव, हाजिर करौ, हाड़-हाड़ चाम-चाम निख-सिख रोम-रोम सों ल्याव, रे ताहया सिलार जिन्द पीर मारती पीटती तोड़ती पछाड़ती हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तीक उल्टा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सीम खिलाय कैसे कैसे हू ल्याव, बिन लिये मत आव, ओम् नमो आदेस गुरू को।"

विधि—रात के समय गोबर का चौका लगाकर धूप-दीप, चन्दन, माला तथा नैवेद्य चढ़ाकर, सवा सेर मोहन भोग का भोग लगाकर, इस मन्त्र को १०८ बार जपा जाय तो सिद्ध हो जाता है।

जब किसी काम को सिद्ध करना हो उस समय इस मन्त्र को पढ़कर उड़द को मस्तक पर रक्खें तो कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र से भूत-प्रेत आदि को भी दूर किया जा सकता है।

पीर का क़लमा

मन्त्र—"या जरव्वाजखिज्र मैं तेरा इलियास लिल्लामकादिल चित्त मेरे पास।"

विधि—कुएँ के ठाणे पर रात्रि के समय एकान्त-स्थान में लोबान की धूप देते हुए इस मन्त्र को उल्टी माला पर १०८ बार पढ़ने से २१ दिन के भीतर पीर प्रत्यक्ष आकर प्रश्न का उत्तर देता है।

---

५ | भूत, प्रेतादि दोष-निवारक प्रयोग

[illegible] आदि के अस्तित्व के विषय में हिन्दुओं की मान्यता तो है ही, मुसलमानों में भी जिन, परी, खईस आदि के रूप में इनका अस्तित्व स्वीकारा जाता है तथा इनके द्वारा किसी स्त्री-पुरुष को परेशान किये जाने पर गण्डे, तावीज तथा यन्त्र-मन्त्रादि के प्रयोग किये जाते हैं।

इस प्रकरण में भूत-प्रेत, जिन, परी आदि के प्रकोप से मुक्ति दिलाने वाले कतिपय प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इनमें से सभी प्रयोग ऐसे हैं, जो हिन्दू तथा मुसलमान दोनों समुदायों में प्रचलित हैं। इन प्रयोगों के कुछ मन्त्रों में 'मुहम्मदावीर' का नाम है, वहीं कुछ का प्रारम्भ 'ओम्' या 'ओम् नमो आदेश गुरू को' इस वाक्य के साथ हुआ है। कुछ के अन्त में 'फुरोमन्त्र ईश्वरोवाचा' वाक्य भी आता है। परन्तु ये सभी मन्त्र-यन्त्र प्रभावशाली हैं तथा हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही द्वारा मान्यता प्राप्त हैं, अतः उन्हें इस प्रकरण में स्थान दिया गया है।

यन्त्रों का प्रयोग करने से पूर्व यह आवश्यक है कि उन्हें किसी ग्रहण के अवसर पर १००८ की संख्या में काली स्याही द्वारा सफेद कागज पर लिखकर पूजनादि के द्वारा सिद्ध कर लिया जाय, तदुपरांत आवश्यकता के समय प्रयोग में लिया जाय। मन्त्र-प्रयोग एवं साधन के विषय में जहाँ जैसा निर्देश है, तदनुरूप ही कार्य करना चाहिए।

बच्चों के लिए आरामदायक गंडा देने का मन्त्र

मन्त्र—"बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, कीड़े और मकोड़े का बंध, ताप और तिजारी का बंध, जूड़ी और बुखार का बंध, नजर और गुजर का बंध, दीठ और मूठ का बंध, कीये और कराये का बंध, भेजे और भिजाये का बंध, नावत पर हाथन का बंधन बंध तो बांध मौला मुर्त्तजा अली का बंध, राह और बाट का बंध, जमीन और आसमान का बंध, घर और बाहर का

बंध, पवन और पानी का बंध, कूवा और पनिहारी का बंध, लौह और कलम का बंध, बंध तो बंध मौला मुर्त्तजा अली का बंध।"

विधि—रोगी को एड़ी से चोटी तक डोरे से नापकर, इस मन्त्र द्वारा उसमें ७ गाँठ लगायें तथा सवा पाव मिठाई मंगाकर मुर्त्तजा अली के नाम से बालकों को बाँट दें। फिर गंडे को लोबान को धूनी देकर रोगी-बालक के गले में बाँध दें।

प्रत्येक गण्डे को इसी विधि से बाँधना चाहिए।

भूतादि दोष-निवारण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को काली स्याही से सफेद कागज पर लिखकर तथा लोबान की धूप देकर बालक के गले में बाँध देने से भूत-प्रेत आदि के दोष दूर हो जाते हैं।

या कर्माईल	२	या जिब्राईल
३	१०	७
या दरदाईल	८	या तिनको फ़ाईल

२४

یا کرمائیل	۲	یا جبرائیل
۳	۱۰	۷
یا دردائیل	۸	یا تنکوفائل

२५

भूतादि दोष-निवारक फ़लीता

नीचे प्रदर्शित यन्त्र का फ़लीता बनाकर भूतादि ग्रस्त रोगी की नाक में धूनी देने से भूत-प्रेत आदि भाग जाते हैं।

इस यन्त्र में जहाँ 'फलाना-फलानी के बेटा' लिखा है, वहाँ भूत-ग्रस्त रोगी के माता-पिता का नाम लिखना चाहिए।
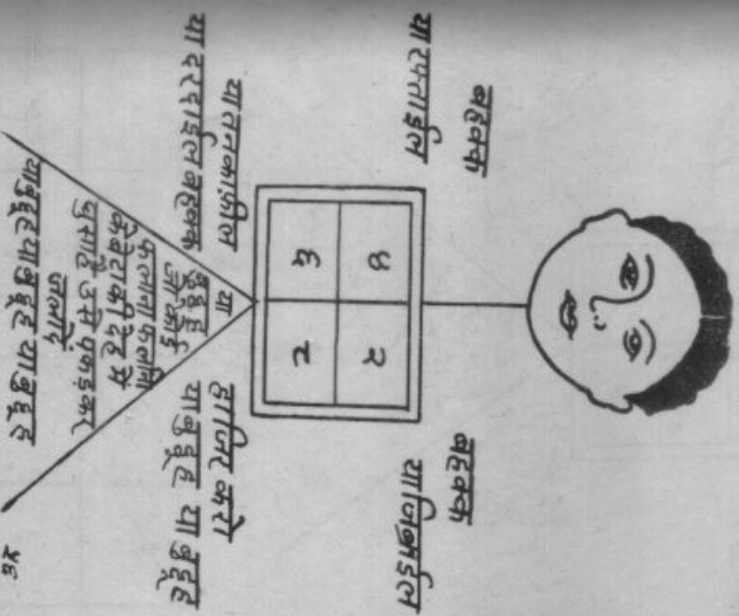
२६

भूत-जिन उतारने का यन्त्र

१२	११
३	३

۱۲	۱۱
۳	۳

पिछले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, फ़लीता बनायें तथा उसमें राई भरकर जलायें एवं रोगी को नाक में धूनी दें तो भूत-जिन आदि उतर जाते हैं।

प्रेत निवारण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर के द्वारा लिखकर बत्ती बना लें, फिर उसे दीपक में डालकर रोगी के सामने जलायें तो प्रेत उतर जाता है।

प्रेत निवारण-यन्त्र का स्वरूप हिन्दी तथा उर्दू भाषा में आगे के चित्रों में दिखाये अनुसार समझ लेना चाहिए—
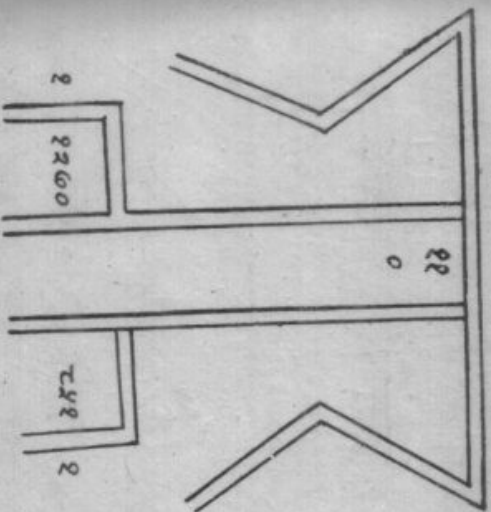
(प्रेत निवारण-यन्त्र, हिन्दी)
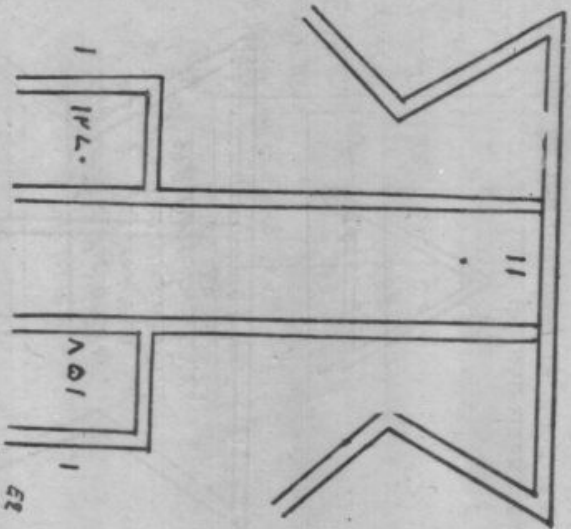
(प्रेत निवारण-यन्त्र, उर्दू)

भूतादि दोष-निवारण यंत्र

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र अब्दुल क़ादर जीलानी को सलाम करके सफेद कागज के ऊपर केसर से लिखना चाहिए।

यन्त्र में ऊपर अथवा नीचे भूत-प्रेतादि से ग्रस्त रोगी का नाम भी लिखना चाहिए। यन्त्र में जहाँ 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ भी रोगी का नाम लिखना चाहिए।

या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत

११	१४	१	८
४	५	१०	१५
६	३	१६	९
१३	१२	७	२

या हू या हू या हू या हू या हू या हू या हू

या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत या वसत

बहक्क या जिब्राईल
या मीकाईल या इस्राफील या इज्राईल
जो कोई फलाने की देही को दुःख
दे रहा है, उसे इस फ़लीता से जला दीजिए
नाम

(भूतादि दोष-निवारण यन्त्र, हिन्दी)

लेखनोपरांत यन्त्र पर पान-फूल चढ़ायें तथा धूप-दीप देकर पूजा करें, फिर उसे एक नये सफेद कपड़े में लपेट कर बत्ती बना लें तथा दीपक में चमेली का तेल भरकर उसमें वह बत्ती डालकर पोता मिट्टी द्वारा लीपे गए पवित्र स्थान पर रखें।

दीपक के सामने फूल तथा मिठाई भी रक्खें। जब दीपक जल जा[ए] तब भूत ग्रस्त रोगी को अपनी निगाह दीपक की लौ पर जमाने के लि[ए] कहें। इस प्रयोग से भूतादि दूर भाग जाते हैं।

(भूतादि दोष-निवारण यन्त्र, उर्दू)

परियों का खलल दूर करने का मंत्र

मन्त्र—"ओम् महकूब कूबमह विमलमह बड़ी मड़ी में चार दे[व] कौण-कौण अहंकार महंकार मुहम्मदा वीर ताइया सिलार बजा[ऊं] ख्वाजे मुअय्युद्दीन तुम्हारी खुशबोई में चढ़ी कमाण सुलैमान प[री] लंक परी को हुकम कीजै कौन कौन परी स्याह परी सबज परी ह[रि]

परी अर्श कुर्स की लाऊली बीबी फातमा कीली कीली आयना पाना फत्र आय लेना सवा सेर शर्बत का प्याला आप ले आप हाजिर होना मीर मुहीमुद्दीन मखदूम जहानी या शेख सरफ अहिया पठाण आप हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामनगीर हूँगा।'

विधि—प्रयोग की जगह को अच्छी तरह से झाड़कर, वहाँ आटे का [...] पान का बीड़ा लेकर तथा शर्बत का कच्चा प्याला भरकर, जिस रोगी पर परियों का खलल हो, उसे चौराहे पर खड़ा करके, इन वस्तुओं का उतारा करके मन्त्र से १५ बार झाड़ा दें, फिर सब वस्तुओं को कुएँ की मेंड़ पर रख आयें तो परियों का खलल दूर हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के लिये आते-जाते समय बोलना नहीं चाहिए।

भूत वगैरह का गण्डा

मन्त्र—"ओम् नमो आदेश गुरू को लड़गड़ी सों मुहम्मद पठाण चढ़या श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भूत बांधि प्रेत बांधि काचिया मसाण बाँधि चौंसठ जोगिनी बांधि अड़सठ स्याना बांधि, बांधि, बांधि रे चोखी तुरकिनी का पूत बेगि बांधि जोतू न बांधे तो अपनी माता की सैया पर पांव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—पांच पैसे की (अब सवा रुपये की) मिठाई तथा दीपक को सामने रखकर लोबान की धूनी दे तथा रोगी की चोटी से लेकर एड़ी तक एक सतलड़ा डोर को नापकर, उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए उसमें २१ गाँठें लगायें। फिर उसे रोगी के गले में बाँध दें। इस गण्डे को धारण करने से भूत-प्रेतादि का दोष दूर हो जाता है।

मुहम्मदापीर का मंत्र

मन्त्र—"ओम् नमो हाकान्त जुगराज फाटंत काया जिस कारण जुगराज में तोकों ध्याया, हंकारत जुगराज आया घारंत आया, सिर के फूल बखेरत आया, और की चौकी उठावन्त आया, आपकी चौकी बैठावंत आया, और का किवाड़ तोड़ता

आया, आपका किवाड़ भेड़ता आया, बाँधि बाँधि किसको बाँधि, भूत को बाँधि प्रेत को बांधि, देव-दानव को बांधि, उड़न्त गड़ंत योगिनी को बांधि, चौर-चिरणागार को बांधि, तिरसठ कलुवा को बांधि, चौसठ जोगिनी को बांधि, बावन वीर को बांधि, आकाश की परियों को बांधि, डाकिनी-शाकिनी को बांधि, चेटक को बांधि, छल को बांधि, विद्र को बांधि, द्वार को बांधि, हाट को बांधि, [illegible] बांधि, गिरारे को बांधि, किया को बांधि, कराये को बांधि, अपनी को बाँधि, पराई को बाँधि, लीली को बाँधि, पीली को बाँधि, स्याह को बाँधि, सफेद को बाँधि, लाली को बाँधि, बाँधि २ रे गढ़ गजनी के मुहम्मदापीर चलै तेरे संग सत्तर सौ बीर, जो बिसरि जाय तौ सौ राजा हलाल जाय, उल्टी मार, पछाड़ मार, धाड़ मार, कजा चढ़ाय, मुड़िया हलाय, शीश खिलाय, शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—किसी ग्रहण की रात में इस मन्त्र को १००८ की संख्या में जपे तथा मांस-मदिरा का भोग लगायें तो मुहम्मदापीर आकर उपस्थित होता है और प्रार्थना करने पर भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी आदि को भगा देता है।

आफ़त दूर करने (दिग्बन्धन) का मन्त्र

मन्त्र—"याहि सार सार जिन्न देव परी जबर कुफार एक खाई दूसरी गिर्द पसार गिर्द बगिर्द मलायक असवार दायें दस्त रखे जिब्राईल, बाँये दस्त रखे मीकाईल, पीठ रखे इस्राफील, पेट रखे इज्राईल, दस्त चपटसन दस्त रास्त हुसैन पेशवा मुहम्मद गिर्द बगिर्द अली ला इलाह कोट इल्लिल्लाह की खाई हजरत अली की चौकी बैठी मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।"

विधि—इस मन्त्र को ७ बार पढ़ कर चारों ओर हाथ फिराकर चुटकी बजाने से दिशा-बन्धन होता है अर्थात् सब ओर की आफतें दूर होती हैं। इस मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर लकीर खींचकर उसके घेरे में बैठने अथवा सोने से देह-रक्षा होती है। मसान आदि का प्रकोप होने पर इस मन्त्र का उच्चारण करने से संकट दूर हो जाता है।

---

६ | मोहन एवं वशीकरण प्रयोग

मोहन तथा वशीकरण

मोहन, आकर्षण तथा वशीकरण—इन सभी का उद्देश्य किसी अन्य व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर, उसके द्वारा इच्छित अभिलाषा की पूर्ति करना है।

आकर्षण तथा वशीकरण के प्रयोग प्रायः सभी धर्म-सम्प्रदायों में पाये जाते हैं। हिन्दू तांत्रिकों के अतिरिक्त मुस्लिम-तांत्रिक भी इन प्रयोगों को अमल में लाते हैं।

प्रस्तुत प्रकरण में मोहन तथा वशीकरण सम्बन्धी कतिपय विशिष्ट प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इनमें से कुछ विशुद्ध मुस्लिम मत के हैं और कुछ ऐसे हैं, जिनका प्रयोग हिन्दू तथा मुसलमान—दोनों मतों के तन्त्रज्ञों द्वारा समान रूप से किया जाता है।

मोहन तथा वशीकरण सम्बन्धी प्रयोगों का दुरुपयोग न किया जाय, इस सम्बन्ध में सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है। मात्र वासना-पूर्ति के उद्देश्य से इन साधनों का प्रयोग हर्गिज नहीं करना चाहिये, अन्यथा परिणाम हानिकारक भी सिद्ध हो सकता है। पतिव्रता स्त्रियों, क्वारी-कन्याओं तथा सच्चरित्र महिलाओं अथवा पुरुषों पर इनका वासनाजन्य दुर्भावनापूर्ण प्रयोग स्वयं के लिये अहितकर सिद्ध होगा।

प्रत्येक प्रयोग के साथ जैसा निर्देश दिया गया है, उसी के अनुसार साधन करने से सफलता-प्राप्ति सम्भव होती है।

स्त्री-वशीकरण कारक यन्त्र-तन्त्र

विधि—चाँद की पहली अथवा दूसरी तारीख को एक कौए को पकड़कर पिंजड़े में बन्द कर दें और उसे सामान्य दाना-पानी देते रहें। फिर जब शनिवार आये, तब उस दिन किसी एकांत तथा शांत कमरे में बैठकर निम्नलिखित प्रयोग करें—

सर्वप्रथम गीली मट्टी से एक नया दीपक बनाकर उसमें तिल का

तेल भरकर रक्खें, फिर एक सफ़ेद कागज के ऊपर काली स्याही से नीचे प्रदर्शित यन्त्र लिखें—

९ काला कलवा	२२ जो न लावे	१९ खड़ीको दौड़ा	१६ लाव फलानी
२० हाल लाव	२५ कलवा वीर	१० काली रात	३१ फिलहाल लाव
१४ तन मुझ लागे सारी रात	१८ बैठी को उठा लाव	६ सेज पर पग धरे	११ काला भेजूं
२३ तो सगी बहिन भांजी के	१२ आधी रात	१३ जब वह आवे आधी रात	५ सोती को जगा लाव

६४

۹ کالا کلوا	۲۲ جو نہ لاوے	۱۹ کھڑی کو دوڑا لاوے	۱۶ فلانی کو
۲۰ حال لاوے	۱۵ کلوا بیر	۱۰ کالی رات	۳۱ فلحال لاوے
۱۴ تن مجھ لاگے ساری رات	۱۸ بیٹھی کو اٹھا لاوے	۶ سیج پر پگ دھرے	۱۱ کالا بھیجوں
۲۳ تو سگی بہن بھانجی کے	۱۲ آدھی رات	۱۳ جب وہ آئے آدھی رات	۵ سوتی کو جگا لاوے

६५

यन्त्र लिखकर कागज को लपेटकर बत्ती जैसा बना लें। फिर कागज की उस बत्ती के चारों ओर सफेद रुई से लपेटकर, उसे बत्ती की भाँति बँट दें। इस प्रकार लिपटी हुई रुई से जो बत्ती तैयार हो, उसे पूर्वोक्त तेल से भरे हुये दीपक में डाल दें। फिर कौए को पिंजड़े के ठीक बीचों-बीच लाकर, उक्त दीपक को पिंजड़े के ऊपर रखकर जला दें। फिर स्वयं पिंजड़े के सामने बैठकर निम्नलिखित मन्त्र को उच्च स्वर से ४१ बार पढ़ें—

मन्त्र—"काला कलवा आधी रात।
काला भेजूँ आधी रात॥
जब वह आवे आधी रात।
तन मुझ लागे सारी रात॥
[illegible] अमुक को लाव।
बैरी को उठा लाव॥
सोती को जगा लाव।
खड़ी को दौड़ा लाव॥
हाल लाव फिलहाल लाव।
जो न लावे तो सगी बहिन।
भाँजी के सिर पर पग धरे॥"

जब मन्त्र जप की संख्या ४१ पूरी हो जाय, तब दीपक की बत्ती को थोड़ा-थोड़ा बढ़ाकर सारे तेल का सफाया कर दें तथा दीपक को पिंजड़े के ऊपर से उठाकर, सावधानी पूर्वक अलग रख दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल जंगल में जाकर उस दीपक को पृथ्वी के भीतर कहीं गाड़ दें तथा दूसरे दिन नया दीपक बनाकर पूर्वोक्त सभी क्रियाओं को दुहरायें। इस प्रकार २१ दिन तक सभी क्रियाओं को दुहराते रहें तथा दीपकों को प्रतिदिन जंगल में दबा आया करें।

इक्कीस दिन का प्रयोग पूरा हो जाने पर एक अन्य यन्त्र कागज पर लिखें तथा यन्त्र को पिंजड़े में बन्द कौए के दांये पाँव में बांध दें तथा रात्रि को १२ बजे बाद, उस कौए को उसी स्थान पर ले जाकर छोड़ दें, जहाँ से कि उसे पकड़ा था। कौए को छोड़ने के बाद मुँह को पीछे घुमाये बिना अर्थात् रास्ते में कहीं भी मुड़कर पीछे की ओर न देखते हुए, सीधे अपने घर चले आयें तथा बिस्तर पर पहुँचकर सो जायें।

उक्त प्रयोग की समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर ही अभिलषित स्त्री कैसी भी पत्थर-दिल क्यों न हो, आकर्षित होकर स्वयं ही साधक के पास चली आती है।

टिप्पणी—पूर्वोक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा यन्त्र में भी 'अमुक' शब्द के स्थान पर साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

वशीकरण यन्त्र (१)

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफ़ेद कागज पर काली स्याही से लिखकर उसका फलीता बनायें, फिर उसे लोबान की धूप देकर, एक कोरे दीपक में रोगन चमेली (चमेली का तेल) भरकर, उसमें फलीता को डालकर जलायें। यन्त्र में जिस जगह 'माशूका' और उसकी माँ का नाम' लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री तथा उसकी माता के नामों को लिखना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

७८६

३५२१	३५१८	३५१५
३५१६	माशूका और उसकी माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

६६

۷۸۶

٣٥٢١	٣٥١٨	٣٥١٥
٣٥١٤	ماشوقہ اور اس کی ماں	٣٥٢٠
٣٥١٩	٣٥١٢	٣٥١٧

६७

उक्त प्रयोग लगातार ११ दिन तक नित्य करते रहने से मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

वशीकरण यन्त्र (२)

नीचे पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को सफ़ेद कागज पर काली स्याही से लिखकर, फलीता बना लें। फिर एक कोरे शकोरे में रोगन कुरंज भरकर उसमें फलीता [illegible] जलायें। जिस व्यक्ति को वश में करना

७८६

११	८	१	१०
२	१३	१२	७
१९	३	६	९
५	१०	१५	४०

६८

۷۸۶

١١	٨	١	١٠
٢	١٣	١٢	٧
١٩	٣	٤	٩
٥	١٠	١٥	٢٠

६९

हो, दीपक का मुंह उसके घर की ओर रखना चाहिए। ११ दिनों तक नियमित प्रयोग करने से मनोकामना पूर्ण होती है तथा अभिलषित-व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) साधक के पास स्वयं चला आता है।

प्रेमिका-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिख कर फलीता बना लें तथा उसे कोरे शकोरे में कुरंज का रोगन भरकर, पूर्वोक्त विधि से जलाकर प्रयोग करें। ११ दिन तक नियमित प्रयोग करते रहने से मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

५८२४२	५८२४२	५८२४०
५८२४४	५८२४२	५८२४६
५८२४९	५८२४७	५८२४५

६०

۵۸۲۶۲	۵۸۳۶۲	۵۸۲۵۰
۵۸۲۶۶	۵۸۲۵۲	۵۸۲۶۴
۵۸۲۶۹	۵۸۲۶۷	۵۸۲۶۵

६२

पति-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को प्रातःकाल सफेद कागज पर काली स्याही से अथवा भोजपत्र पर केसर से लिखकर, धूप या लोबान की धूनी दें। फिर उस यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दें तो जब तक यन्त्र जमीन में गड़ा रहेगा, तब तक पति अपनी पत्नी के वशीभूत बना रहेगा।

यह प्रयोग पत्नियों (स्त्रियों) को अपने पति को वशीभूत रखने के लिए करना चाहिए।

८	३	४	अल डुब फतां	६	७	२
१	५	९	वन फला अला डुब	१	५	९
६	७	२	फलावन कलां	८	३	४

६२

۸	۳	۴	ال حبب فتح	۶	۷	۲
۱	۵	۹	ون فلاح الله حبب	۱	۵	۹
۶	۷	۲	فلاں ون فلاں	۸	۳	۴

६३

---

७ | विविध कार्य-साधन प्रयोग

दुश्मन को जूती मारने का तन्त्र

किसी निकृष्ट महीने के आखिरी मंगलवार को, फौलाद की छुरी से, कच्ची ईंट के ऊपर एक ओर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को लिखें तथा उसी ईंट के दूसरी ओर सिर्फ दुश्मन का नाम लिखें।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

द	स	म	म	म	ल	व	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	ब	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	न	अ	य	न	ग
अ	अ	म	ब	त	ब	व	ह	ल
य	ब	अ	अ	द	य	त	व	त

७४

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद एक बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर ४१ बार 'दरूद' पढ़ें, फिर १००० बार निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ें—

मन्त्र—"या कह हारो या इतराइलो या दौराइलो या अम वाकिलो फलाने के सारे जिस्म और मुँह को मेरी जूती की चोट से घायल करो बहक्क या कह हारो।"

ا	ح	ب	ل	م	م	م	س	د
ح	چ	و	ف	ے	ج	ے	د	ح
ت	ح	ح	م	ا	ل	ت	ا	ل
[illegible]	ا	ح	[illegible]	د	ا	م	ر	ا
خ	ل	ے	م	ا	ر	ا	د	ا
ح	و	م	ا	ک	س	و	س	ے
گ	ن	ے	ا	ن	ح	م	ا	ل
ل	ح	و	ب	ت	ب	م	ا	ا
ت	و	ت	ے	د	ا	ا	ب	ے

७५

मन्त्र के जप के अन्त में पुनः ४१ बार 'दरूद' को पढ़ना चाहिए।

उक्त विधि से दस दिनों तक नित्य १००० की संख्या में मन्त्र का जप करें, परन्तु हर १०० बार मन्त्र को पढ़ने के बाद शत्रु का नाम लिखे हुए एक कागज पर ५ बार जूती अवश्य मारनी चाहिए। मन्त्र जप करते समय यन्त्र लिखित ईंट को अपने सामने रखना चाहिये तथा तेल का चिराग भी जलाये रखना चाहिए।

आखिरी अर्थात् दसवें दिन जब मन्त्र का जप पूरा हो जाय, तब आधी रात के समय यन्त्र-लिखित ईंट के सामने असली घी का चिराग जलाकर उस पर फूल, इत्र तथा मिठाई चढ़ावें, फिर मन्त्र का जप शुरू करें तथा हर बार १०० मन्त्र जपने के बाद ईंट के जिस ओर शत्रु का नाम लिखा हो, उस पर पाँच-पाँच जूतियाँ मारते जायें।

इस प्रयोग से शत्रु के ऊपर जूते पड़ते हैं तथा उसे कष्ट प्राप्त होता है।

जिह्वा-स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र—"अलफ अलफ अलफ दुश्मन के मुँह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर।"

विधि—शनिवार के दिन से आरम्भ करके ७ दिन तक एक घी का दीपक जलाकर एक कागज के टुकड़े पर इस मन्त्र को लिखें, फिर उस पर फूल माला, फल तथा बतासा चढ़ायें, तुदुपरांत उस कागज के १० टुकड़े करके, प्रत्येक टुकड़े को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अग्नि में डालते जायें तो ता मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर बात करे तथा दुश्मन की ओर फूंक मारे तो दुश्मन का बोल न निकल सके। किसी अर्जी पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे और उसे लोबान की धूनी देकर हाकिम के हाथ में दे दें तो मनोरथ पूरा हो।

शत्रुनाशक प्रयोग

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर फलीता बनायें। फिर एक कोरे शकोरे से रोगन तल्ख़ (सरसों का तेल वग़ैरह) भरकर, उसमें फलीते को डालकर जलायें। दीपक का मुँह शत्रु के घर की ओर रहना चाहिए।

१६५६१८	१६५६२१	१६५६२५	१६५६११
१६५६२४	१६५६१२	१६५६१७	१६५६२२
१६५६१३	१६५६२७	१६५६१९	१६५६१६
१६५६४०	१६५६१५	१६५६१४	१६५६२६

७६

उक्त प्रयोग को २१ दिनों तक लगातार करते रहने से शत्रु का नाश हो जाता है।

١٤٥٤١٨	١٤٥٤٢١	١٤٥٤٢٥	١٤٥٤١١
١٤٥٤٢٩	١٤٥٤١٢	١٤٥٤١٦	١٤٥٤٢٢
١٤٥٤١٣	١٤٥٤٢٦	١٤٥٤١٩	١٤٥٤١٤
١٤٥٤٩١	١٤٥٤١٥	١٤٥٤١٩	١٤٥٤٢٤

७७

कैदी को छुड़ाने का प्रयोग

यदि कोई आदमी कैद (जेलखाने आदि) में पड़ा हो तो उसे छुड़ाने के लिए निम्नलिखित प्रयोग करना चाहिए—

७८६

या हाफ़िज़	३३२	३३८	२२१०
या हाफ़िज	३३२	३३४	२३६
££	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम कैदी के वालिद का नाम	या हाफ़िज़	याहाफ़िज़	याहाफ़िज़

७८

रविवार के दिन एक जंगली काला कबूतर पकड़ लायें, फिर प्रद- शित यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, धूप-दीप देने के बाद, उस कबूतर के गले में बाँध दें तथा उड़ा दें।

यन्त्र में जिस जगह कैदी का नाम तथा उसके पिता का नाम लिखा है, वहाँ कैदी तथा उसके पिता नाम लिखना चहिए।

۷۸۶

یا حافظ	۳۳۲	۳۳۸	۲۲۱۰
یا حافظ	۳۳۲	۳۳۹	۲۳۴
۹۹	۳۳۷	۳۳۰	۳۳۵
قیدی کا نام قیدی کے والد کا نام	یا حافظ	یا حافظ	یا حافظ

۶۴

चोरी का पता लगाने का प्रयोग

मन्त्र –"उद्मुद्जल्लजलाल पकड़ चोटी धर पछाड़ मेज कुद्दा ल्याव मुद्दा या कहूहारो या क़हूहारो।"

प्रयोग विधि—किसी नदी अथवा कुएँ के किनारे बैठकर इस मन्त्र को १२१ बार पढ़कर वहीं सो जाय। एक सप्ताह तक नित्य इसी नियम

का पालन करे तो इसी अवधि में किसी दिन स्वप्न के माध्यम से चोरी का सारा भेद मालूम हो जाएगा। जो व्यक्ति चुरा ले गया होगा, उसका तथा जहाँ पर चोरी का माल रक्खा होगा, उसका—सब बातों का हाल मालूम हो जाएगा।

तिजारी का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखें या भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखें और जिस आदमी को तिजारी बुखार आता हो उसकी दाँई भुजा में बाँध दें तो तिजारी ज्वर आना बन्द हो जाता है।

۹۲	۹۲	۹۲
۹۲	۹۲	۹۲
۹۲	۹۲	۹۲

۸۰

۷۱	۷۱	۷۱
۷۱	۷۱	۷۱
۷۱	۷۱	۷۱

۸۱

८ | वशीकरण सम्बन्धी विशिष्ट प्रयोग

वशीकरण सम्बन्धी कुछ प्रयोगों का उल्लेख पिछले प्रकरणों में किया जा चुका है। इस प्रकरण में अमलियात-ए-मुहब्बत अर्थात् प्रेमी-प्रेमिका वशीकरण सम्बन्धी कुछ ऐसे विशिष्ट प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्हें पहुँचे हुए कमिलों की मेहरबानी द्वारा बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया जा सका है।

वशीकरण सम्बन्धी ये प्रयोग यन्त्र-साधन की श्रेणी में आते हैं। इनमें से किसी भी प्रयोग को करने से पूर्व निम्नलिखित हिदायतों पर अमल करना आवश्यक है।

भविष्य मालूम करने का तरीका

अमलियात-ए-मुहब्बत (वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग) के लिए सर्व-प्रथम ताला (भाग्य या भविष्य) मालूम करना आवश्यक है। इसकी विधि निम्नानुसार है—

जिस किसी का भविष्य मालूम करना हो, उसके नाम के अदद तथा उसकी मां के नाम के अदद निकाल कर जमा करें (जोड़ लें), फिर उसमें १२ से तरह (भाग) दें। यदि १ बचे तो 'हमल', २ बचे तो 'शवर', तीन बचे तो 'जोजा', चार बचे तो 'सरतान', पाँच बचे तो 'असद', छह बचे तो 'सनबाला', सात बचे तो 'मेजान', आठ बचे तो 'अक़रब', नौ बचे तो 'क़ौस', दस बचे तो 'जदी', ग्यारह बचे तो 'दलो' और ० (शून्य) बचे तो 'हवत' है—यह समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए—तालिब प्रेमी का नाम 'मोहम्मद दीन रहमत' है। इसके ७४६ (सात सौ छियालीस) अदद होते हैं। इनमें जब १२ का भाग दिया गया तो शेष २ बचे। इसका ताला (भविष्यत्) बुर्ज (राशि) 'शवर' है। इसी तरह मत्लूब (प्रेमिका) के नाम के अदद निकाल कर उसका बुर्ज (राशि) मालूम कर लें। यदि आशिक की राशि 'आत्शी' और माशूक की राशि 'आबी' है तो 'आतिश' अर्थात् अग्नि और 'आब' अर्थात् 'पृथ्वी'—ये दोनों एक दूसरे के मुखालिफ (विरोधी) होंगे, ऐसी स्थिति में दो ताबीज (यन्त्र) लिखने चाहिए—एक 'आत्शी' और दूसरा 'आबी'। अगर ताला आशिक 'बादी' है और ताला माशूक 'खाकी' है तो इसमें

मुआफ़क़त (अनुकूलता) होने के कारण एक ताबीज ही काफी रहेगा। जैसा मिजाज हो, उसके मुआफ़िक (अनुसार) ताबीज लिखना चाहिए। आत्शी के लिए आत्शी और आबी के लिए आबी।

ताबीज की किस्में

ताबीज चार किस्म (प्रकार) के होते हैं—(१) आत्शी, (२) बादी, (३) आबी और (४) खाकी।

ताबीज 'आत्शी' उसे कहते हैं जिसे कागज या कोरी ठोकरी या हिरन की खाल पर या चीनी की तख्ती आदि पर लिखकर आग में डाला जाता है या चूल्हे के नजदीक (समीप) गाड़ दिया जाता है।

'बादी' ताबीज उसे कहते हैं, जिसे लिखकर दरख्त (वृक्ष) अथवा किसी अन्य ऊँचे स्थान पर लटका दिया जाता है, ताकि वह हवा से हिलता रहे।

'आबी' ताबीज को लिखकर तालाब, नदी या कुएँ, जलाशय आदि में डाला जाता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध पानी से है।

'खाकी' ताबीज वह है, जिसे लिखकर चौखट, चौराहे या कब्रिस्तान वगैरह में दफ़न किया (गाड़ा) जाता है।

अब ताबीज की किस्में मालूम हो गईं, लिहाजा इसके लिए एदाद हरूफ़ का इल्म जरूरी है।

जद दिल अब्ज (वर्णमाला) इल्म जफर (कामयाबी) से है। इसके सात कलमे हैं और हर कलमे के चार हरूफ़ हैं और हर एक का सवा स्यार: से ताल्लुक है। इन हरूफ़ों में जो हरूफ़ जिस शख्स के सरे असम पड़े, उसका और उसके नाम का ताल्लुक जिस सितारे से होगा, उसी के मुआफ़िक नजवर (धूनी) जलाने से बहुत जल्द असर होता है।

किस सितारे के आत्शी, बादी, आबी तथा खाकी के हिसाब से किस हरूफ़ के कितने अदद (संख्या) होते हैं, इसे आगे प्रदर्शित चित्र संख्या ८२ और ८३ में बताया गया है। नाम के हरूफ़ों को अरबी अक्षरों के आधार पर ही लेना चाहिए। अन्य किसी भाषा के आधार पर नहीं।

ضطغ	قرشت	سعفص	کلمن	حطی	ہوز	ابجد	ستارہ
قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	سبع
ذ ۷۰۰	ش ۳۰۰	ف ۸۰	م ۴۰	ط ۹	ہ ۵	ا ۱	آتشی
ض ۸۰۰	ت ۴۰۰	ص ۹۰	ن ۵۰	ی ۱۰	و ۶	ب ۲	بادی
ظ ۹۰۰	ث ۵۰۰	ق ۱۰۰	س ۶۰	ک ۲۰	ز ۷	ج ۳	آبی
غ ۱۰۰۰	خ ۶۰۰	ر ۲۰۰	ع ۷۰	ل ۳۰	ح ۸	د ۴	خاکی

८२

ज़ग़ा	करशात शत्रुव	तायुस	मन	हतीक्रल	हौज	अब्जद	सितारा
क़मर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	सबा
ज़ 700	श 300	फ़ ८०	म ४०	त ९	ह ५	अ १	आतशी
ज़ ८००	त ४००	स ९०	न ५०	ई १०	व ६	ब २	बादी
ज़ ९००	स ५००	क़ १००	स ६०	क 20	ज़ ७	ज 3	आबी
ग़ १०००	ख़ ६००	र २००	ऐ ७०	ल 30	ह ८	द ४	ख़ाकी

८३

तालिब (प्रेमी) जब तावीज लिखे तो जिस सितारे की साइत में लिखने का इत्तफ़ाक हो, उसके मुआफ़िक नजवर (धूनी) जलायें। हर सितारे के नजवरात (धूनियाँ) अलग-अलग होते हैं। यदि धूनी सितारे के मुआफ़िक न होगी तो फ़ायदा भी नहीं होगा।

किस सितारे के नजवर (धूनी) क्या-क्या हैं, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

(१) **जौहाल**—अबर, लोबान, राल, करनफल।

(२) **मुश्तरी**—मुश्क, जौ दाना, काफ़ुर, कपूर, सन्दल सुर्ख (लाल चन्दन), अबद कक्कार (खांड़ या चीनी)।

(३) **मिर्रीख**—लोबान, अबद, राल।

(४) **शम्स**—दारचीनी, अबद, मुश्क (कस्तूरी), जाफ़रान (केशर)।

(५) **जोहरा**—अबद, इब्ज, मुश्क, संदल सफेद (सफेद चन्दन), काफ़ूर, असपदं।

(६) **अतारद**—संदल सुर्ख, करनफल, काफ़ूर, नमकसंग, अबद।

(७) **क़मर**—शहद, काफ़ूर, अबद।

सितारों के विषय में

 (…ता) अलग-अलग है। कोई सईद (शुभ) है तो कोई नह्‌स (अशुभ) है। किसी की कुछ तासीर है, किसी की कुछ है। हर एक सितारा एक वक्त का हाकिम होता है। इसलिये आमिलों ने सितारे की साईत (मुहूर्त) देखना मुकर्रर किया है यानी शुभ-अशुभ मुहूर्त देखकर ताबीज (यन्त्र) लिखना चाहिए, ताकि मेहनत बर्बाद न हो। हर सितारे की साइत एक घण्टा होता है। इब्तिदा (प्रारम्भ) सुबह ७ बजे से मुकर्रर की गई है अर्थात् सितारों का मुहूर्त प्रातः सात बजे से आरम्भ होता है।

नीचे सितारों की साइत (मुहूर्त) का नक्शा दिया जा रहा है, इसके आधार पर किस वक्त (समय) का हाकिम (अधिपति) कौन सा सितारा है, यह मालूम करने के बाद उसी के मुताबिक (अनुसार) नजवर (धूनी) जलानी चाहिए।

	پاس اول			پاس دوم			پاس سوم			پاس چہارم		
شب روز	ساعت ۱	ساعت ۲	ساعت ۳	ساعت ۴	ساعت ۵	ساعت ۶	ساعت ۷	ساعت ۸	ساعت ۹	ساعت ۱۰	ساعت ۱۱	ساعت ۱۲
شب شنبہ	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر
روز شنبہ	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ
شب یکشنبہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ
روز یکشنبہ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل
شب دوشنبہ	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد
روز دوشنبہ	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس
شب سہ شنبہ	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری
روز سہ شنبہ	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر	زحل	مشتری	مریخ	شمس	زہرہ	عطارد	قمر

८४

पास-चहारम			पास सोयम			पास दोयम			पास अव्वल			
१२ साअत	११ साअत	१० साअत	९ साअत	८ साअत	७ साअत	६ साअत	५ साअत	४ साअत	३ साअत	२ साअत	१ साअत	शब रोज़
कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	शब शम्बा
ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	रोज़ शम्बा
मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	शब यकशम्बा
ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	रोज़ यकशम्बा
अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	शब दोशम्बा
शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	रोज़ दोशम्बा
मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शब सहशम्बा
कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	रोज़ सहशम्बा

८५

پاس چہارم			پاس سوم			پاس دوم			پاس اول			
ساعت ۱۲	ساعت ۱۱	ساعت ۱۰	ساعت ۹	ساعت ۸	ساعت ۷	ساعت ۶	ساعت ۵	ساعت ۴	ساعت ۳	ساعت ۲	ساعت ۱	شب روز
زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	شب چہارشنبہ
مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	روز چہارشنبہ
زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	شب پنجشنبہ
عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	روز پنجشنبہ
شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	شب جمعہ
مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	شمس	مریخ	مشتری	زحل	قمر	عطارد	زہرہ	روز جمعہ

पास-चहारम			पास सोयम			पास दोयम			पास अव्वल			
१२ साअत	११ साअत	१० साअत	९ साअत	८ साअत	७ साअत	६ साअत	५ साअत	४ साअत	३ साअत	२ साअत	१ साअत	शबरोज़
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	शब चारशम्बा
मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	रोज़ चारशम्बा
ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	शब पंजशम्बा
अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	रोज़ पंजशम्बा
शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	शब जुमा
मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	शम्स	मिर्रीख	मुश्तरी	ज़ोहल	कमर	अतारद	ज़ोहरा	रोज़ जुमा

८६

अमल (साधना) सम्बन्धी नियम

अमल सम्बन्धी निम्नलिखित नियमों का पालन करना अति आवश्यक है—

१—अयल (प्रयोग अर्थात् यन्त्र अथवा मन्त्र-साधन) के लिए कोई एकांत-स्थान निश्चित कर लेना चहिये और जब तक प्रयोग सिद्ध न हो जाय, तब तक उसी स्थान पर साधना करते रहना चाहिए।

२—अमल (प्रयोग) बिना नागा प्रतिदिन मुकर्रर वक्त (निश्चित समय) पर उसी जगह करना चाहिए, जहाँ पहले दिन शुरू किया गया हो। यदि म्याद (सम्पूर्ण अवधि) से एक दिन भी छूट गया तो सम्पूर्ण **साधना** निष्फल हो जायेगी।

३—अमल (प्रयोग साधन) की अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णरूपेण पालन करना चहिये तथा स्त्री के साथ हमबिस्तर नहीं होना चाहिए।

४—जिस अमल में जानवर की खाल की मनाही की गई हो, उसका साधन करते समय न तो चमड़े के जूते पहनने चाहिये और न किसी ऐसी वस्तु से हाथ लगाना चाहिए, जो किसी जानवर के चमड़े द्वारा निर्मित हो।

५—अमल के दौरान किसी से लड़ाई-झगड़ा करने से परहेज लाजमी है। अमल की अवधि में ऐसी कोई हरकत नहीं होनी चाहिए, जिसके कारण किसी के दिल पर ठेस पहुँच सके।

६—अमल के दौरान अपने परिवारीजनों, विशेषकर वालदैन (माता-पिता) का प्रसन्न बन रहना आवश्यक है।

७—अमल के दौरान जो भी शुभ काम किये जा सकते हों, उन्हें अवश्य करते रहना चाहिये।

८—अमल के दौरान यदि कोई साइल (याचक) अपने दरवाजे पर आकर सवाल (याचना) करे तो उसे महरूम (निराश) नहीं लौटाना चाहिए। उसे कुछ-न-कुछ देना आवश्यक है।

यदि उक्त नियमों का पालन नहीं किया गया तो अमल की अवधि में किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है तथा मनोभिलाषा की पूर्ति नहीं हो पाती। परन्तु यदि उक्त हिदायतों का पूरा-पूरा पालन किया जाय तो इंशा अल्ला ताला मकसद में कामयाबी जरूर हासिल होती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी प्रयोग का साधन करने के बावजूद भी सफलता नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में प्रयोगकर्ता को यह देखना चाहिए कि जिन नियमों का पालन करने की हिदायत दी गई है, उनमें कौन सी त्रुटि रह गई। जब वह त्रुटि पकड़ में आ जाय, तब उसका निराकरण करते हुए दुबारा प्रयोग आरम्भ करना चाहिये तो उसमें सफलता मिलने की आशा रहेगी। यदि दूसरी बार भी असफलता हाथ लगे तो अपनी कमियों पर नजर दौड़ानी चाहिए, क्योंकि बिना कोई कमी रहे असफलता मिलने का सवाल ही नहीं उठता। अतः उस कमी को जानकर और उसे दूर करते हुये तीसरी बार फिर प्रयोग आरम्भ करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी त्रुटि के कारण एक बार असफलता मिलने पर प्रयोग बन्द नहीं कर देना चाहिये, अपितु हिम्मत एवं श्रद्धा-विश्वास के साथ उसे बार-बार दुहराना चाहिए। पूरे आत्म-विश्वास एवं श्रद्धा के साथ तथा नियमों का पालन करते हुये जो अमल किया जाता है, उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रहता। इल्तजा कभी नाकाम नहीं होती। अगर मकसद में नाकामी हुई तो समझ लेना चाहिये कि तुम्हारी ही कोई गलती है, क्योंकि इन्सान से भूल अक्सर हो जाया करती है।

अमल पढ़ने से पहले आमिल की ख़सूसियात

प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व प्रयोगकर्त्ता को अपनी योग्यता पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। यदि अपने भीतर कुछ कमियाँ दिखाई दें तो उन्हें दूर कर देना चाहिए, क्योंकि किसी काम को शुरू करने से पहले ही जो इन्सान अपनी खामियों और कमजोरियों पर नजर डालता है और

उन्हें दूर कर देता है तो उसका दिल बेख़ौफ़ हो जाता है और उसे अपने मकसद (लक्ष्य) में कामयाबी (सफलता) भी हासिल (प्राप्त) होती है। अतः आमिल के लिये यह आवश्यक है। कि वह अमल शुरू करने से पहले उसूलों की पाबन्दी करे।

अमलियात (प्रयोगों) के सिलसिले में उस्तादों ने अपने तजुर्बात के आधार पर कुछ नियम तथा सिद्धान्त निश्चित किये हैं, ताकि अमल करने वालों को सुविधा हो और उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न उठानी पड़े, परन्तु प्रायः देखने में यह आता है कि अमल के शौकीन लोग आवश्यक नियमों का पालन तो करते नहीं हैं, अपनी सुविधानुसार जैसा चाहते हैं, वैसा करना आरम्भ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते और उनका सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ चला जाता है। इस प्रकार अपनी ही ग़लती का वे ख़ामियाजा उठाते हैं। यदि सही तरीके से उसूलों का पालन किया जाय तो उनकी मेहनत बर्बाद नहीं होगी।

अतः अमलियात के सिलसिले में आमलीन ने जो शरायत और तरीके अपने अथक परिश्रम तथा अनुभवों के बाद निश्चित किये हैं, उन उसूलों पर पूरी तरह से अमल करना निहायत जरूरी है। ऐसा न करने वालों को कभी कामयाबी नहीं मिल सकती।

आमलीन के लिए शराइत

अमलियात के उस्तादों ने लिखा है कि जो लोग अमल करना चाहते हों उनके लिये निम्नलिखित शर्तों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है

१—आमिल इस्लाम की शराइत का पाबन्द हो अर्थात् इस्लाम मजहब के हर नियमों तथा उसूलों को मानने वाला हो। शक्लो-सूरत मोमिन मुसलमान जैसी तथा नमाज़ और रोजे का पाबन्द हो।

२—हराम चीजों को करीब न आने दे।

३—जनाकारी (व्यभिचार) तथा बदकारी (दुष्कर्म) वगैरा: से अहतराज करे अर्थात् दूर रहे।

४—हलाल तरीके से रोजी कमाने का आदी हो।

५—झूठ बोलने से कतई परहेज करे।

६ मजहब के नियमों का पालन करे।

७—चुगली, बदजबानी खराब खसलतों और तमाम बुरी बातों से तौबा करे।

८—अमल शुरू करने से पहले आमिल को चाहिए कि गुस्ल करके पवित्र वस्त्रों को धारण करें और उन पर इत्र लगाये।

९—अमल शुरू करने से पहले खुशबूदार धूनी, मसलन—लोबान, अबद, अगरबत्ती या इसी किस्म की कोई और चीज जैसा कि पहले बताया जा चुका है, सुलगा कर जगह को पवित्र एवं सुगंधित बनायें।

१०—अक्सर अमलियात (तांत्रिक-प्रयोगों) में तर्क हैवानत (पशु से परहेज) की शर्त भी जरूरी होती है, अतः ऐसे प्रयोगों में, जिनमें जन्तुओं से बचाव आवश्यक बताया गया हो, यह जरूरी है कि प्रयोगों की अवधि में गोश्त, दूध, घी, अण्डा, मछली, लहसुन, प्याज और इसी किस्म की दूसरी चीजें हरगिज-हरगिज इस्तैमाल न की जाँए। अगर इनके खिलाफ़ चला जायगा तो खुद को शदीद खतरा हो सकता है।

११—गरीब एवं मोहताजों के साथ नेक सलूक करे तथा खैरातों-जका (दान-पुण्य) से हाथ न रोके।

१२—खयाल रहे कि हर अमल बेरोज माह की पहिली जुमेरात को जिसे नौचंदी जुमेरात कहते हैं, शुरू किया जाय।

१३—अमल पढ़ने (तांत्रिक-साधन करने) के लिए सबसे बेहतर वक्त नमाज-ए-इशा (रात की नमाज) के बाद माना गया है।

शुभ साइत (मुहूर्त)

मुश्तरी, जोहरा, अतारद और शम्स की साइतें अमलियाते-मोहब्बत और ताबीजाते-मोहब्बत के लिए बेहतरीन (शुभ) हैं। जुमा, जुमेरात, बुद्ध और पीर के दिन बेहतर हैं। अरबी महीने की तारीखों में जो शुभ हों, उन्हीं में अमल शुरू करना चाहिए और ताबीज (यन्त्र) लिखना चाहिए।

जो तारीखें अशुभ हैं उनका नक्शा नीचे दिया जा रहा है। इन तारीखों में कोई अमल नहीं करना चाहिए।

ربیع الآخر	ربیع الاول	صفر	محرم
۱۸ - ۱	۲۰ - ۱۰	۳ - ۱	۱۱ - ۱۲
شعبان	رجب	جمادی الثانی	جمادی الاول
۸ - ۳	۱۵ - ۱۳	۸ - ۲	۱۱ - ۲
ذی الحجہ	ذی قعدہ	شوال	رمضان
۷ - ۳	۵ - ۳	۷ - ۴	۲۰ - ۵

८६

रबि-उल आखीर	रबिउल अव्वल	सफ़र	मुहर्रम
१८-१	२०-१०	३-१	११-१४
शाबान	रजब	जमादि-उल सानी	जमादिउल अव्वल
८-३	१४-१३	८-२	११ २
[illegible]	[illegible]	शव्वाल	रमज़ान
७-३	५-३	७-४	२०-५

८८

हरूफ तहजीब के हिसाब से अदद (संख्या) निकाल कर जब ताला मालूम हो तो इल्म-ए-फ़न की किताबों के मुताबिक ताला आत्शी, आबी, खाकी ओर बादी के माह जलाली (सौभाग्यशाली महीना) दर्याफ्त करें। शुरू में माह-ए-जलाली मुहर्रम उल अहराम का महीना है। इल्म-ए-नारह मुहर्रम को 'नूरोज' भी कहते हैं और तमाम साल की कैफ़ियत इसी से बनाते है। आसानी के लिये माह जलाली का दायरा (नक्शा) आगे दिया जा रहा है।

ربیع الاول برج جوزا طالع بادی اور نر ہے	صفر المظفر برج ثور طالع خاکی مادہ ہے	محرم الحرام منسوب برج حمل طالع آتشی اور نر ہے
جمادی الثانی برج سنبلہ خاکی اور مادہ ہے	جمادی الاول برج اسد آتشی اور نر ہے	ربیع الثانی برج سرطان آبی اور مادہ ہے
رمضان المبارک برج قوس آتشی اور نر ہے	شعبان المعظم برج عقرب آبی اور مادہ ہے	رجب المرجب برج میزان بادی اور نر ہے
ذی الحجہ برج حوت طالع آبی مادہ ہے	ذی القعدہ برج دلو بادی اور نر ہے	شوال المکرم برج جدی خاکی اور مادہ ہے

९०

इस मुख्तसर कायदे के मुताबिक हरूफ-तहजीब के हिसाब से नाम मतलूब के आयदाद से बुर्ज (राशि) मालूम करें और सितारा देखें। फिर साइत वक्त और साइत तारीख (मुहूर्त का समय और तारीख) को जिस अमल की मुनासियत समझें. करें या ताबीज-ए-मोहब्बत (वशीकरण यन्त्र) लिखें और उसी के मुताबिक धूनी जलाएँ। इंशा अल्लाह ऐसा करने से जल्द असर होगा और महबूब बेक़रार होगा।

रबी उल अव्वल बुर्ज सौर तालेह बादी और नर है	सफर उल मुजफ्फर बुर्ज सुर तालेह खाकी और मादा है	मुहर्रम उल हराम मंसूब बुर्ज हमल तालेह आतशी और नर है
जमादि उल सानी बुर्ज सन, बलहा खाकी और मादा है	जमादि उल अव्वल बुर्ज असद आतशी और नर है	रबि उल सानी बुर्ज सरतान आबी और मादा है
रमजान उल मुबारिक बुर्ज कौस आतशी और नर है	शाबान उल मोअज्जम बुर्ज अकरब आबी और मादा है	रजब उल मरज्जब बुर्ज मीजान बादी और नर है
जी उल हज्जा बुर्ज हूत ना अल्लेहू आबी और मादा है	जी उल कायदा बुर्ज दलू बादी और नर है	शव्वाल उल मुकर्रम बुर्ज जदी खाकी और मादा है

९१

नक्श-ए-मोहब्बत

नक्श (१) (वशीकरण यन्त्र)

आगे दिया हुआ नक्श (यन्त्र संख्या ९२, ९३) वशीकरण के लिए बहुत प्रभावशाली है। यदि माशूक नाराज हो गया हो या मोहब्बत न करता हो तो बस साइत सइद मशल जौहरा ओ मुश्तरी इस नक्शे आजम को कागज के पुर्जे पर बाएहतियात (सावधानीपूर्वक) लिखें और ताबीज में भरकर, उसे लोबान की धूनी देकर आशिक अपने बाजू पर बाँधे तो माशूक वशीभूत होकर आज्ञाकारी बन जायेगा।

नक्श इस प्रकार है—

١٢	١٥	١٨	٥
[illegible]	[illegible]	[illegible]	۶۴
۴۶	۸۰	۶۳	۶۰
۶۲	۴۹	۴۸	۶۹

९२

९२	९५	९८	५
७७	६६	७१	७६
६७	८०	७३	७०
७४	६९	६८	७९

९३

नक्श (२)

आगे प्रदर्शित नक्श (यन्त्र संख्या ९४, ९५) को कागज पर लिखकर उसे शर्बत से धोएँ। फिर वह शर्बत माशूक को पिला दें तो वह मोहब्बत में बेकरार हो जाएगा।

९०० नक्श लिखने होंगे। रोजाना लिखे हुये नक्शों को गेहूँ के आटे की गोलियों में भरें तथा उन गोलियों को दरिया में डाल दिया करें तो माशूक मोहब्बत में बेकरार हो जाएगा।

ح	و	د	ب
٢	١٤	٥	٨
٥	٨	٢	١٤
١٤	٢	٨	٥

९८

हे	वाव	दाल	बे
२	४	६	८
६	८	२	४
४	२	८	६

९९

नक्श (५)

अगर किसी को अपने सामने हाजिर करना हो तो हिरन की खाल पर मुश्को-जाफ़रान (कस्तूरी और केशर) से एक दायरा खींचें और उस पर नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १००, १०१) बनाकर, उसके ऊपर एक छोटी सी मेख गाढ दें तथा 'या वुद्दूह' या वुद्दूह' को पढ़ें। इस प्रयोग से मतलूल (माशूक) बेकरार हो, सामने आकर हाजिर हो जाता है।

٧٨٦

٣٩٨٣	٣٩٨٥	٣٩٨١	٣٩٨٧
٣٩٨٨	٣٩٨٤	٣٩٨١	٣٩٨٧
٣٩٨٦	٣٩٩١	٣٩٨٩	٣٩٨٠
٣٩٨٣	٣٩٨٢	٣٩٨٦	٣٩٩٠

१००

७८६

२४८३	२४८६	२४८९	२४७४
२४८८	२४७६	२४८१	२४८७
२४७७	२४९१	२४८४	२४८०
२४८५	२४७९	२४७८	२४९०

१०१

नक्श (६)

आगे प्रदर्शित दोनों नक्शों (संख्या १०२, १०३ तथा १०४, १०५) को एक कागज पर लिखकर गोली बना लें फिर उसे कन्द सफेद (सफेद शक्कर) की गोली में भर दें तथा वह गोली मतलूब को खिलायें तो उसे

٧٨٦

٨	١١	١١١٢	١
١١١١	٢	٧	١٢
٣	١١١٤	٩	٦
١٠	٥	٤	١١١٣

१०२

७८६

८	११	१११२	१
११११	२	७	१२
३	१११४	९	६
१०	५	४	१११३

१०३

ᐱ ।ᐱ ॥ ● ।ᐱ।ᐱ ॥
।।।ᐱ ॥ ९।।
।।। ९।। ।।९ ।।।
॥ ।।ᐱ ।। ।।
।। ९। ● ॥ ।।
ᐱ।● ॥ ॥ ।ᐱ
ᐱ۵ا ساثث
فلاں بن فلاں علی حب فلاں بن فلاں

१०८

ट १ट ११ है १ट १ट ११
१११ट ४ ८११ हमला
है ११ हम ११ ४ ११६ ११
११ हमला ११ट ४
१ , २६१ है ८१ है
८१ - ४ ११ ८ १ट
४ट उल्न स्याहता
फलां बिन फलां अली हुब फलां बिन फलां

१०९

ऊपर प्रदर्शित तिलिस्म (यन्त्र संख्या १०८, १०९) को जुमे की रात को मतलूब (माशूक) के पहिने हुए पुराने कपड़े पर लिखें, फिर उसका फलीता बनाकर, कोरे चिराग में रोग़न ख़ुशबूदार भरकर जलायें। चिराग का रुख खाना मतलूब (माशूक के घर) की तरफ रहना चाहिए। फलीता के रौशन होते ही मतलूब बेकरार हो जाएगा।

नक्श (९)

आगे प्रदर्शित इलामत (चित्र संख्या ११०, १११) को कागज पर लिखें और इत्र-ओ-शहद कागज पर मलकर, पाक रुई में लपेटकर, ख़ुशबूदार तेल कोरे चिराग में डालकर रौशन करें। चिराग का रुख खाना मतलूब की तरफ़ करें और खुद हाजिर रहें।

अगर मुतवातिर (लगातार) एक हफ्ते तक शबे-रोज (रात-दिन) फलीता रोशन (जलता) रहे तो मतलूब बेक़रार होगा और हाजिर होगा।

दूसरी तरकीब यह है कि शाना गो सफ़ज पर लिखकर, शहद मल कर, आग के नीचे दफ़न कर दें तथा आग एक हफ्ते तक हर वक्त रौशन (जलती) रहे तो मतलूब बेकरार होता है।

ᐱᐱ ᐱᐱᐱ ।ᐱ۵.. ᐱ۵।ᐱ
يس ٩١١٠٨ يا او ساه يا ح
ᐱ।। ᐱ ।।।ᐱ
على حب فلاں بن فلاں
على حب فلاں بن فلاں

११०

तीसरी तरकीब यह है कि कोरी ठीकरी पर इसे लिखकर आग के नीचे रक्खें तो भी मतलूब बेकरार होगा। इसे साइत अफताब में शाना

स्म तोय २८२२ १ट १०० २२८
०स ओ ९ ६११०ट मैं
वैव तोय १ट वाव, ०११, ९११ट
अलीहुब फलां बिन फलां
अलीहुब फलां बिन फलां

१११

गो सफन्द पर लिखकर चूल्हे के नीचे दफ्न करें और इसे आग में जलायें तो मतलूब बेकरार होकर हाजिर होता है।

नक्श (१०)

नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या ११२, ११३) को कोरे चिराग पर तीन बार या सात बार लिखें, फिर उसे रोगन (तेल) और खुशबू डालकर रौशन करें या इस नक्श को कागज पर लिखकर फलीता बनालें। चिराग में गाय का घी या कोई दूसरा खुशबूदार तेल भरकर रौशन करें। इन्शा अल्लाह मतलूब बेकरार होकर हाजिर होगा।

११२

फलां बिन फलां अली हुब
फलां बिन फलां बेकरार करो
ब हक्क या बुद्दूह ११३

नक्श (११)

इतवार की रात को साइत अदद आगे प्रदर्शित तिलस्म (संख्या ११४, ११५ और १६६, ११७) को मुश्क-ओ-जाफ़रान-ओ-गुलाब से साइत मुश्तरी में लिखें और साइत आफ़ताब में फलीता बनाकर रोगन खुशबूदार में जलायें। अगर महबूब पास आ जाए तो उससे बात न करें, बस कुछ ही देर में वह आपका फर्माबदार हो जाएगा, किसी दूसरे के पास नहीं जाएगा अर्थात् आमिल मजकूर के इश्क में ही दीवाना रहेगा।

११४

११५

११६

फ़ला बिन फ़ला अली हुब फला बिन फला

११७

नक्श (१२)

अगर कोई शख्स किसी से मोहब्बत रखता हो तो एक रात, तीन रात या पाँच रात में नीचे प्रदर्शित नक्श (यन्त्र संख्या ११८, ११६) को कागज पर लिखकर उसका फलीता बनायें, फिर उसे खुशबूदार रोगन में रौशन करें (जिलायें)। चिराग का रुख खाना मतलूब की तरफ रहे। इस अमल से इंशा अल्लाह माशूक हाजिर होगा और अताइत करेगा।

مسجد	سلع	هو	سلم
سمع	بلاء	سلع	هو
اسلم	سلع	سلع	طلس

१२८

मस्जिद	सलह	हो	सलह
समा	बला	सलह	हो
असलम	सलह	सलह	तिलिस

१२९

नक्श (१३)

आगे प्रदर्शित इलामत (यन्त्र संख्या १२०, १२१) को माशूक के पहने हुए कपड़े पर लिखें और कोरे चिराग़ में तिलों का तेल डालकर, उसका फलीता बनाकर रोशन करें तो माशूक कदमों में आ हाजिर होगा।

فلاں بن فلاں علی حب فلاں ابن فلاں یا بنتِ فلاں

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१२०

[illegible]

१२१

नक्श (१४)

नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १२२, १२३) को चिराग पर लिखकर उसमें रोग़न खुशबूदार भरें। फिर कागज पर भी लिखकर फलीता बनायें और चिराग का रुख खाना-ए-मतलूब की तरफ रखें। खाने में तालिब का नाम यथास्थान लिखें।

१२२

नक्श (१५)

मोहब्बत के लिए प्रदर्शित नक्श (संख्या १२४, १२५) को मय चारों नामों (अपना, अपनी माँ का, माशूका का और उसकी माँ का) के किसी दरख्त के पत्ते पर लिखकर, आग के नीचे दफन करें तो मुराद पूरी होती है।

नक्श (१६)

आगे प्रदर्शित तिलिस्म (संख्या १२६, १२७) को कागज के ऊपर मुश्क-ओ-जाफ़रान से लिखकर अपने पास रक्खें। इंशा अल्लाह मतलूब मोहब्बत में बेकरार होकर सामने हाजिर हो जाएगा।

नक्श (१७)

नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १२८, १२९) को कपड़े पर लिखकर और फलीता बनाकर चिराग में जलायें तो मतलूब बेकरार होगा।

नक्श (१८)

आगे प्रदर्शित तिलिस्म (संख्या १३०, १३१) को उजाले पखवाड़े में शुभ साइत में लिखकर आग में डालने से मतलूब बेकरार होकर हाजिर होता है।

٧٨٦

٧٤٣٨	٧٤٤١	٧٤٤٤	٧٤٣١
٧٤٤٣	٧٤٣٣	٧٤٣٠	٧٤٤٣

१३०

७८६

७४३८	७४४१	७४४४	७४३१
७४४३	७४३३	७४३०	७४४३

१३१

नक्श (१६)

आगे प्रदर्शित नक्श (संख्या १३२, १३३) को कागज पर लिखकर फलीता बनायें और चिराग में रौशन करें। चिराग का रुख खाना मतलूब की तरफ रखना चाहिए। इससे मतलूब बेकरार होकर मोहब्बत कबूल करता है।

٧٨٦

٢٧٤	٢٧٧	٢٨٠	٢٦٧
[illegible]	[illegible]	[illegible]	٢٧٨
٢٦٩	٢٨٢	٢٧٥	٢٧٢
٢٧٦	٢٧١	٢٧٠	٢٨١

१३२

७८६

२७४	२७७	२८०	२६७
२७९	२६८	२७३	२७८
२६९	२८२	२७५	२७२
२७६	२७१	२७०	२८१

१३३

नक्श (२०)

मतलूब को मोहब्बत से बेकरार करने लिए शर्फ़ आफ़ताब में सोने की लोह (ताबीज) तैयार करें और उस पर आगे प्रदर्शित नक्श (संख्या १३४, १३५) कुन्दा करें। फिर उस पर अपना नाम और माशूक का

नाम लिखकर आग में जलायें। फिर जब मतलूब हाजिर हो, तावीज को बाजू में बाँध लें तो वह हमेशा खिदमत को तैयार बना रहेगा।

۴ ۴۷۱	۱۸	۳ ۲۰۰۱۰۵۰۵
۸۰۱۰۹۳۰ ۳	۲۰۰۱۰۹۰۲ ۸	۷ ۲۰ ۱۰۲ ۲۰۰
۸ ۱۰۴۱۰۰ ۲۰۰	۱۱۹	۵ ۲۰۰ ۱۰ ۱۲

१३४

४ ४३१	१८	३ २००१०६०६
८०१०९३० ३	२००१०९०२ ८	७ २० १०२ २००
८ १०४१०० २००	११९	५ २००१२ १०

१३५

नक्श (२१)

अगर किसी को इश्क में मुब्तिला करना हो तो घोड़े का ऐसा नाल लायें, जिसमें ६ सूराख हों और उस पर मतलूब और उसकी माँ के नाम के साथ नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १३६, १३७) लिखें और लिखने के बाद उस नाल को आग में इस तरह गाड़ दें कि वह हमेशा गर्म बना रहे। इससे मक़सद हासिल होगा।

۲۳۷۲	۲۳۷۵	۲۳۷۰	۲۳۶۵
۲۳۷۷	۲۳۶۶	۲۳۷۱	۲۳۷۶
۲۳۶۷	۲۳۸۰	۲۳۷۳	۲۳۷۰
۲۳۷۸	۲۳۶۹	۲۳۶۸	۲۳۷۹

१३६

२३७२	२३७५	२३७०	२३६५
२३७७	२३६६	२३७१	२३७६
२३६७	२३८०	२३७३	२३७०
२२७४	२३६९	२३६८	२३७९

१३७

नक्श (२२)

मतलूब की मोहब्बत बढ़ाने के लिए जोहरा व मुश्तरी की तशलीस में तांबे की पट्टी बनवाकर उस पर आगे प्रदर्शित नक्श (संख्या १३८, १३९) खुदवायें।

٢٥٩٨	٢٥٩١	٢٥٩٤	ياحنان
٢٥٩٣	٢٥٩٥	٢٥٩٧	يامنان
٢٥٩٦	٢٥٩٩	٢٥٩٢	ياديان
طليقا	طيقا	عليقا	يابرهان

يابدوح يابدوح يابدوح

१३८

२६९८	२६९१	२६९६	या हन्नान
२६९३	२६९४	२६९७	या मन्नान
२६९४	२६९९	२६९२	या दायान
नसीकानत	कैकानत	अलीकानत	या बुरहान

१३९

अपने और अपनी मां, महबूबा और उसकी मां—इन नामों के अदद भी निकालें और आयत करीमा के अदद से मिलाकर तकसीर करें और सदर मोखर को नक्शे मरबा के चारों ओर लिखें और रोगन शतूर-व-शहद

में फलीता बनाकर जलायें। मतलूब हाजिर होगा। जो नक्श तांबे की पट्टी पर खुदवाया गया हो, उसे ताबीज की तरह दाहिने बाजू पर बांधना चाहिए।

नक्श (२३)

आगे प्रदर्शित ताबीज-ए-मुबारिक (चित्र संख्या १४०, १४१) को, निहायत ही फ़ायदा बख्श है, मोहब्बत के लिए मतलूब (माशूक) का तसव्वुर (ध्यान) करके लिखें और अनार के दरख्त के साथ बांध दें। इस अमल से इंशा अल्लाह मोहब्बत पदा होगी। इसको सिरहाने रखना भी मुफ़ीद है।

यहाँ पर औरों की तरह इस नक्श के उर्दू तथा हिन्दी—दोनों के चित्र दिए जा रहे हैं। इनमें किसी को भी अमल में लाया जा सकता है।

يلد	لم	الصمد	الله	احد	الله	هو	قل
ولم	يلد	لم	الصمد	الله	احد	الله	هو
يولد	ولم	يلد	لم	الصمد	الله	احد	الله
ولم	يولد	ولم	يلد	لم	الصمد	الله	احد
يكن	ولم	يولد	ولم	يلد	لم	الصمد	الله
له	يكن	ولم	يولد	ولم	يلد	لم	الصمد
كفوا	له	يكن	ولم	يولد	ولم	يلد	لم
احد	كفوا	له	يكن	ولم	يولد	ولم	يلد

१४०

(नक्श २३ का उर्दू स्वरूप)

यलिद	लम	उस्समद	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	कुल
वलम	युलद	लम	अल्लसम द	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
यलुद	वलम	यलिद	लम	उस्समद	अल्लाह	अहद	अल्लाह
वलम	युलद	वलम	यलिद	लम	अल्लसमद	अल्लाह	अहद
यकुन	वलम	युलद	वलम	यलिद	लम	उस्समद	अल्लाह
लहू	यकुन	वलम	युलद	वलम	यलिद	लम	उस्समद
कुफ वअन	लहू	यकुन	वलम	युलद	वलम	यलिद	लम
अहद	कुफ वअन	लहू	यकुन	वलम	युलद	वलम	यलिद

१४१

(नक्श २३ हिन्दी स्वरूप)

नक्श (२४)

अगर औरत और खाविन्द के दरम्यान नाचाकी (मनमुटाव) रहती हो तो नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १४२, १४३) ताबीज लिखकर दोनों को पिलाने से दोनों में मोहब्बत पैदा हो जाती है।

LΛЧ

414ΔΓ	414dΛ	414ΔΔ
414Δd	414ΔΓ	414Δ·
414d9	414Δ4	414Δ/

१४२

७८६

६१६४३	६१६४८	६१६४४
६१६४४	६१६४२	६१६४०
६१६४६	६१६४५	६१६४१

१४३

नक्श (२५)

नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १४४, १४५) को जुमे के दिन सूरज निकलते वक्त लिखकर आग में फेंक दें तो मतलूब ताबां होगा और आशिक के पीछे जाएगा और तालिब को कहीं खफ्त न होगी। इस नक्श की असनाद बहुत सी खायात से साबित है।

ع	٤	٢٧	١١٩٨١	١١١
ع،	٩٩	ع٢١١	ع٩١١	١١
ع	٢١١	ع ٩١١	ع ٩١	ع١٨٩
ع	١٩	٩١٩١٠	ع ١١٩	٤٩١٠
٢	٥١١٩	١٨	٨ ع	ع٨

[illegible]

१४४

७८६

हम	७	८८	[illegible]	९९९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९९
हम	२९९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
हम	९६	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	९ है	[illegible]	हम है

[illegible]

१४५

नक्श (२६)

नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १४६, १४७) को मतलूब के कपड़े पर लिखें और उसकी बत्ती बनाकर चिराग में रख कर जला दें। चिराग का मुँह मतलूब के घर की तरफ़ रखना चाहिए। इंशा अल्लाह मतलूब बेकरार होकर आशिक की मुराद पूरी करेगा।

فلاں ابن فلاں علی حب فلاں ابن فلاں

१४६
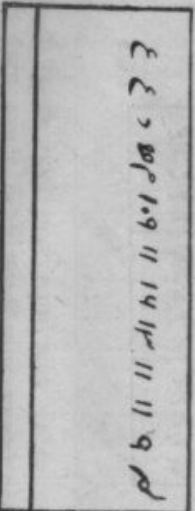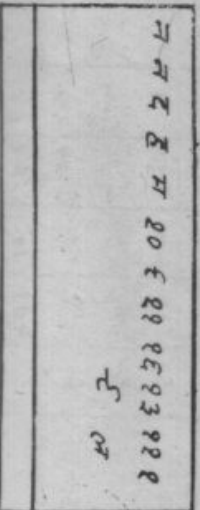
फलां इब्न फलां अल हुब्बे फलां इब्ने फलां

१४७

नक्श (२७)

यह नक्श (संख्या १४८, १४९) हुब्ब के लिए निहायत मुज्जरब है। सूरज की धूप में बकरी के शाने पर चारों के नाम लिखें और तनवर या चूल्हे के तले दफ़न करें और आग में जलायें। इंशा अल्लाह तआसाई मोहब्बत मतलूब के दिल में जगेगी और वह बेक़रार होगा।

حب فلاں ابن فلاں

علی حب فلاں ابن فلاں

१४८

हुब फलां इब्ने फलां

अलीहुब फलां इब्ने फलां

१४९
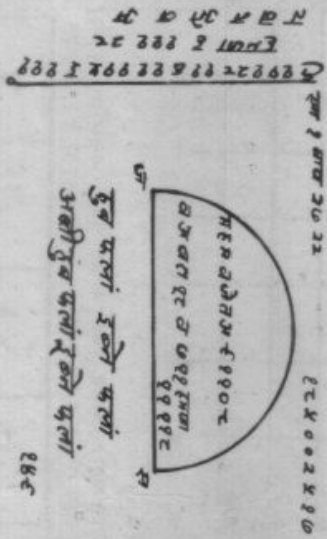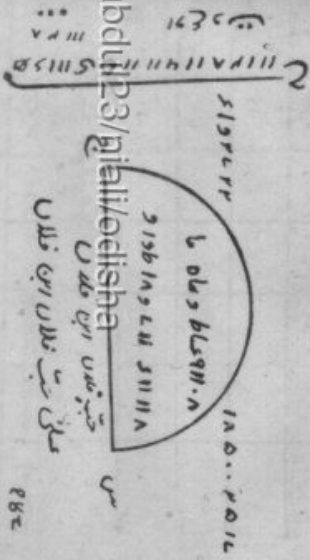
नक्श (२८)

अगर जरूरत हो और किसी को अपनी मोहब्बत करानी मंजूर हो तो एक टुकड़ा मतलूब के लिबास (कपड़े) का लेकर हफ्ते के दिन बाद नमाज अज़र टुकड़े पर आगे प्रदर्शित नक्श (संख्या १५०, १५१) को लिखें और बत्ती बनाकर भैंस के घी में तर करें, फिर फलीते को जला दें तो मतलूब को मोहब्बत होती है।

१५०

१५१

नक्श (२९)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५२) कलम शरीफ, जो तमाम नक्श से बढ़कर है, यह कई मुरादों को पूरा करता है। मोहब्बत के लिए

الله	الا	الله	لا
محمد	الله	الا	الله
رسول	محمد	الله	الا
الله	رسول	محمد	الله

१५२

इसे तीन रोज लिखें तथा हर रोज मतलूब को पिलायें तो मोहब्बत होगी और मुराद हासिल होगी। महबूब दीवाना होकर सामने हाजिर होगा। बस अजीब अल करिश्मा है।

नक्श (३०)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५३) भी ऊपर कहे गए नक्श [illegible] शरीफ के एदाद का है। इसको मोहब्बत के लिए मरकूजा (उपर्युक्त) तरकीब ही इस्तैमाल कर सकते हैं।

ميكائيل	١٥٨	٧٨٥	جبرائيل
١٥٥		١٤١	١٢٧
١٤	١٣٨	١٥٣	١٥٩
١٢٩	١٤٣	١٦٤	١٥٣
١٥٧	١٥١	١٥٠	١٤٢
عزرائيل			اسرافيل

१५३

नक्श (३१)

नीचे प्रदर्शित अलामत (चित्र संख्या १५४) को मतलूब के पुराने कपड़े पर इसी तरह लिखें और नये चिराग में तिल का तेल डालकर, फलीता बनाकर जलायें। मतलूब जरूर हाजिर होगा।

१५४

नक्श (३२)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५५) को कागज पर लिखकर मिट्टी के शकोरे में रक्खें, और उस पर शक्कर डाल दें। फिर उसे आग के नीचे इस तरह दफ़न करदें कि आग की गर्मी नक्श मजकूर तक पहुँचती रहे। इंशा अल्ला मतलूब बेकरार होगा।

٣٤٢	٣٤٥	٣٤٩	٣٦٥
٣٤٨	٣٦٦	٣٤١	٣٤٦
٣٦٤	٣٨١	٣٤٢	٣٤٠
٣٤٧	٣٦٩	٣٦٨	٣٨

१५५

नक्श (३३)

नीचे प्रदर्शित नक्श शरीफ (चित्र संख्या १५६) को लिखकर चर्खे के साथ बांध दें और चर्खे को कातते रहें। यह मुहब्बत के लिए बेनजीर है।

[illegible]	١١	٦	٢	٣	٩	[illegible]	[illegible]	[illegible]	٢	٣	٣

१५६

नक्श (३४)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५७) को लिखकर मतलूब के दरवाजे पर, जहाँ से वह हर वक्त गुजरता हो, इस तरह गाड़ें कि वह इससे ऊपर होकर गुजरे तो इंशा अल्लाह मुराद पूरी होगी।

فلاں ابن فلاں	سوع	ال	ن
طالب	١٥	٤٤ع	ط
فلاں بنت	٢ح	٢ح	طا
فلاں	٨٧	-	٢ح

१५७

नक्श (३५)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५८) को सात अदद बतरीक जील बाद अज नमाज पेशीन लिखकर आग में डालते जायें। इंशा अल्लाह मतलूब मोहब्बत करेगा।

१५८

नक्श (३६)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १५९) हुब के लिए निहायत दर्जा मुफीद है। इसको नक्श मसलत भी कहते हैं। इस नक्श का अमल चालीस रोज की जकवः निकाल कर एक कामिल बुजुर्ग की इजाजत से हासिल किया गया है। हर एक काम के लिए मुफीद है। हुब के लिए बतरीक़ जील लिखें। इंशा अल्लाह् कामयाबी होगी। लिखकर अपने पास रक्खें।

٢	٧	٦
٩	٥	١
٤	٣	٨

१५९

नक्श (३७)

अगर किसी शख्स को कोई अजीज दोस्त या बीबी नफरत करती हो, या किसी लड़की से शादी करने की तमन्ना हो और वह लड़की और

उसके अज़ीजो-अकारब सब खिलाफ हों, तब नीचे प्रदर्शित नक्श (यन्त्र संख्या १६०) को काम में लायें। इंशा अल्लाह कामयाबी होगी। यह खयाल रहे कि खिलाफ-ए-शरह काम के लिए इस नक्श से हरगिज हरगिज काम न लें, क्योंकि ऐसी सूरत में खुद को शदीद खतरे का अंदेशा है।

يا ودود	ن	١٢٢
ح	ف	ق
خ	ش	ط

१६०

इसका तरीका यह है कि चाँद रात (अमावस) के रोज या इससे एक रोज पहले नक्श मजकूरा वाला तेरह अदद के खाने जाफ़रान और रायल के कलम से दशीदा करके रख लें और जिस रोज चाँद दिखाई दे, फौरन खाकों को जो पहले से तैयार किए रखे हैं, नक्श के मुताबिक पुर कर लें (भर लें)। इन खाकों को भरने में इतनी जल्दी करें कि चाँद गरूब (छुप) न हो जाय। अगर इत्तफाकन चाँद गरूब हो गया और वह खाके जो पहले से तैयार करके रख लिए हैं, भरे न जा सके तो फिर अगले माह चाँद के रोज ही दुबारा यह अमल करना होगा। हाँ, अगर सात या नौ नक्श चाँद के गरूब होने (छिपने) से पहले भरे जा चुके हों तो भी कोई हर्ज नहीं है—अमल कामयाब होगा और आइन्दा माह के लिए मुल्तवी नहीं करना पड़ेगा।

जब नक्श पुर हो जाएं तब सुबह होने पर नाम उस शख्स का, जिससे कोई काम लेना हो। या उस लड़की का जिससे शादी करना मकसूद हो लिखें और आटे में गोली बनाकर दरिया, नहर या कुएं में डाल दें। इस तरह हर रोज यह अमल करते रहें, जब तक कि यह नक्श यानी कि तेरह या सात खता न हो जाँय। इंशा अल्लाह यकीनी कामयाबी होगी।

नोट—तेरह अदद नक्शों की लकीरें इन खाकों की पेशानियों पर ७८६ की संख्या पहले ही लिखकर रख लें और इनको भरने में शीघ्रता करें, क्योंकि पहले दिन का चाँद बहुत जल्दी ही छिप जाता है। मतलूब का नाम दरिया में डालने से पहले हर रोज लिख लिया करें। इन शर्तों की पाबन्दी जरूरी और लाजमी है।

नक्श (३८)

नीचे प्रदर्शित नक्श (यन्त्र) चित्र संख्या १६१ व १६२ बिस्म अल्लाह को जो कोई मुश्क (कस्तूरी), जाफ़रान (केशर) तथा अर्क गुलाब के मिश्रण से लिखकर अपने पास रखेगा, वह किसी अमर का

बिस्म ७८६ अल्लाह

१ बिस्म	१ अल्लाह	११ अलरहमान	१ अलरहीम
१२ अलरहीम	१ अलरहमान	२ अल्लाह	२३ बिस्म
६ अल्लाह	९ बिस्म	१६ अलरहीम	१ अलरहमान
१५ अलरहमान	३ अलरहीम	५ बिस्म	१ अल्लाह

१६१

اللّٰه ٧٨٦ بسم

الرحیم ١	الرحمن ١١	اللّٰه ١	بسم
بسم ١٣	اللّٰه ٢	الرحمن ١	الرحیم ١٢
الرحمن ١	الرحیم ١٤	بسم ٩	اللّٰه ٤
اللّٰه ١	بسم ٨	الرحیم ٣	الرحمن ١٠

الرحیم १६२ الرحمن

मोहताज न रहेगा। अगर चालीस दिन तक सात सौ छियासी (७८६) नक्श लिखकर और उन्हें आटे की गोलियों में भरकर दरिया में डालेगा तो तमाम मुश्किलें आसान होंगी और जिस काम का क़स्द करेगा, उसको सहल कर लेगा और वह शख्स अजीज खलायक (सर्वप्रिय) बन जायेगा।

नक्श (३९)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६३, १६४) को कागज पर लिखकर जो शख्स अपने पास रखता है, उसे ग़ैब से रोजी मिलती है।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

४	९	१
२	५	७
८	या महाव	६

१६३

٢	٩	١
٣	٥	٧
٨	يا وهاب	٤
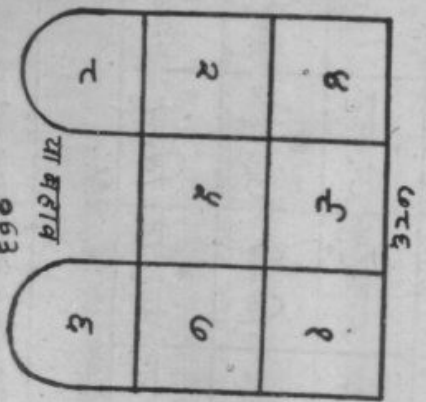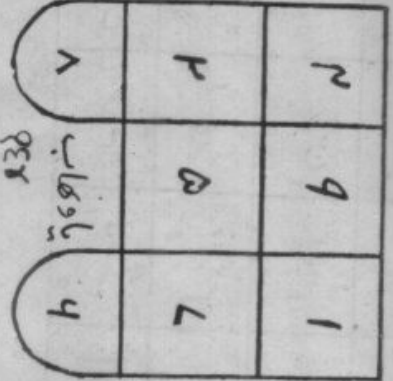
१६४

नक्श (४०)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६५ और १६६) को कागज पर बीस की संख्या में लिखकर तथा उसे आटे की गोलियों में भरकर दरिया में डालता है, उसकी सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं—

नक्श का स्वरूप इस प्रकार है—

७८६

६ २

३ ९   ८ १

२ ४

१६५

٧٨٦

٥ ٢

٣٩   ٨١

٧ ٢

१६६

नक्श (४१)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६७ और १६८ को लिखकर अपने पास रखने वाले की सभी कामनाएँ पूरी होती हैं। परेशानियाँ दूर होंगी, रंज मिटेगा, हाकिम जलिम या उसका कोई उदू हो तो मसख्खर हो जायेगा। बीमार के गले में बाँधने से बीमारी दफा हो। आसेब का खलल हो तो साठ रोज तक लिखकर, घोल कर पिलाने से आसेब दूर हो। नक्श का गुमान हो तो इसे गले में बाँध दें।

नक्श मुकर्रम इस प्रकार है—

२७३८१	२७३८४	२७३८७	२७३७४
२७३८६	२७३७५	२७३८०	२७३८५
२७३७६	२७३८९	२७३८२	२७३८९
२७३८३	२७३७८	२७३७७	२७३८८

१६७

٢٨٣٨١	٢٨٣٨٩	٢٨٣٨٨	٢٨٣٧٩
٢٨٣٨٤	٢٨٣٧٥	٢٨٣٨٠	٢٨٣٨٥
٢٨٣٧٤	٢٨٣٨٩	٢٨٣٨٢	٢٨٣٨٩
٢٨٣٨٣	٢٨٣٧٨	٢٨٣٧٧	٢٨٣٨٨

१६८

नक्श (४२)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६९, १७०) की बहुत सी खसूसियतें हैं। जिस असर के लिए अपने पास रखेगा, बहुत जल्द फ़ायदा होगा। तंगदस्ती से फ़रागत मिलेगी। रिज्क़ से मालामाल होगा। यह नक्श जिसके पास होगा उसका दुश्मन दोस्त बन जाएगा। जिस अमीर के पास जायेगा, वह उसकी इज्जत करेगा। बीमार होगा तो सेहत पायेगा। जमील [illegible]

नक्श मोअज्ज़म यह है—

१४९८	१५०१	१५०४	१४९१
१५०४	१४९२	१४९७	१५०२
१४९३	१५०७	१४९९	१४९६
१५००	१४९५	१४९८	१५०६

१६९

١٣٩٨	١٥٠١	١٥٠٥	١٣٩١
١٥٠٢	١٣٩٢	١٣٩٦	١٥٠٣
١٣٩٣	١٥٠٧	١٣٩٩	١٣٩٤
١٥٠٠	١٣٩٥	١٣٩٧	١٥٠٤

१७०

नक्श (४३)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १७१, १७२) को कागज पर लिख- कर, जिस शख्स की दुकान की बिक्री कम होती हो, उसके दरवाजे पर चस्पा करे तो खरीदार ग़ैब से आवे, माल बिकने लगे, बखूबी नफ़ा हो तथा रोज-ब-रोज माल बढ़ता जाए।

नक़्श मोअज्जम व मुकर्रम इस प्रकार है—

७८६

८०	८३	६	७३
८५	७४	९	८४
७५	८८	८१	७८
८२	७७	६	८७

१७१

٧٨٦

٨٠	٨٣	٥	٧٣
٨٥	٧٤	٩	٨٤
٧٥	٨٨	٨١	٧٨
٨٢	٧٧	٥	٨٧

१७२

नक्श (४४)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १७३, १७४) को कोरे सकोरे में लिखकर मरघट या क़ब्रिस्तान में दफ़न करने से जिन दो दोस्तों के बीच अदावत करना मंजूर हो, उनमें आपस में दुश्मनी पैदा हो जाती है। सकोरे को दफ़न करते वक्त दोनों दोस्तों का जिनके बीच अदावत करानी [illegible]

नक्श इस प्रकार है—

१८	३	२३	११
२३	१२	१७	२२
१३	२६	१९	१६
२०	१५	२४	२५

१७३

١٨	٣	٢٣	١١
٢٣	١٢	١٤	٢٢
١٣	٢٤	١٩	١٤
٢٠	١٥	١٢	٢٥

१७४

नक्श (४५)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १७५, १७६) को कागज पर लिख कर, उस कागज को शर्बत में धोकर, शबत अपने माशूक को पिलाये। नक्श लिखने से पहले 'या शफ़ीयां' इस वाक्य का कई बार उच्चारण करके कागज पर फूँक मारे तो इस तरकीब से माशूक वश में हो जाता है।
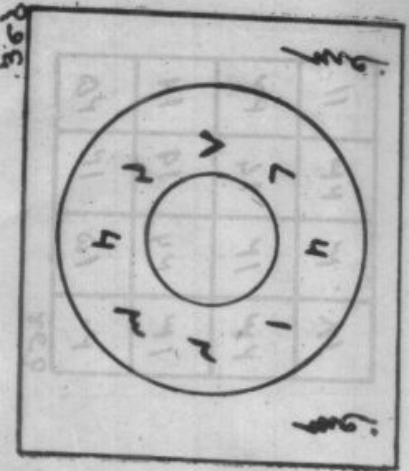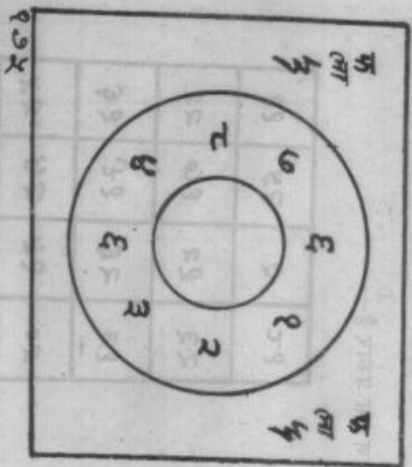
नक्श (४६)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १७७, १७८) को लिखकर पानी में डाल दें फिर उस पानी को खेत में डालें तो फ़सल को नुकसान न हो और नक्श को लिखकर माल में रखें तो माल को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचेगा।
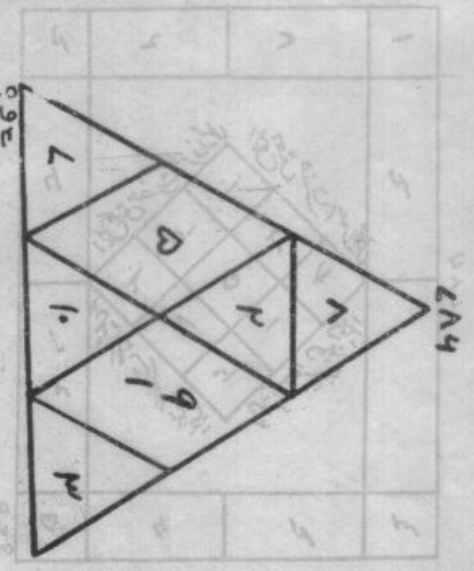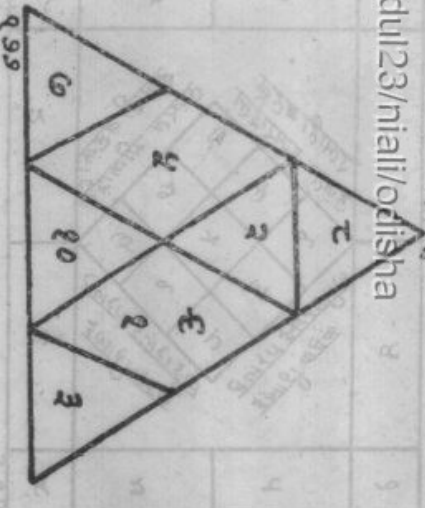
नक्श (४७)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १७९, १८०) बीस की तादाद (संख्या) में लिखकर, आटे की गोलियों में मार कर, दरिया में डालने से तमाम मुश्किलें दूर हो जाती हैं।

१७९

१८०
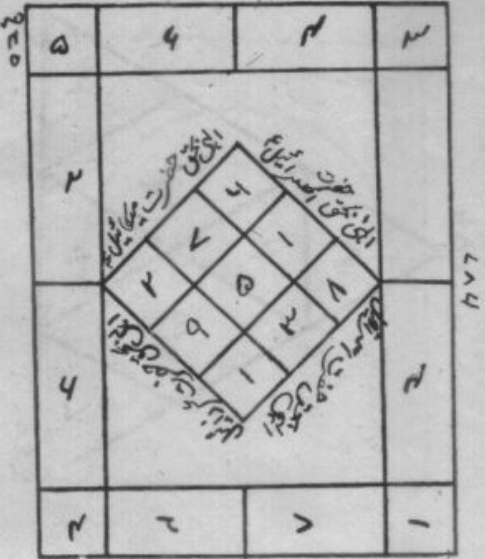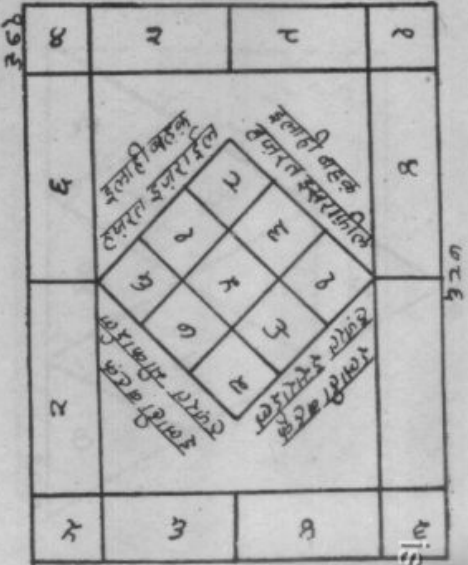
नक्श (४८)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १८१, १८२) को कागज या भोज पत्र पर लिखकर अपने बाजू पर बाँधने से हर तरह की मुसीबत से छुटकारा मिलता है।

१८२
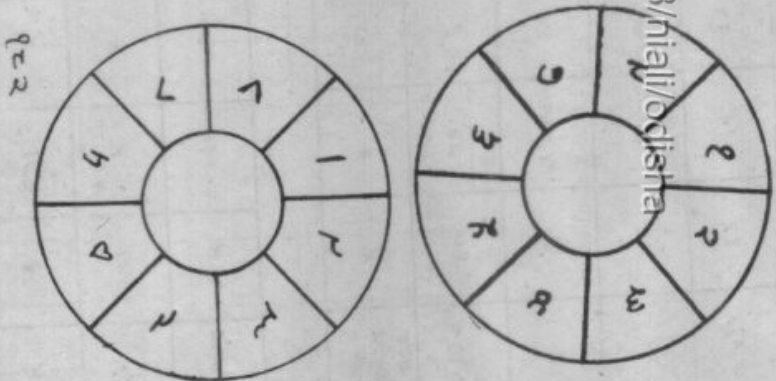
नक्श (४९)

आगे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १८३, १८४) को कागज पर लिखकर आग में दफ़न करने से सताने वाले शख्स (जालिम) के हाथों से निजात मिलती है, इस नक्श के लिखने से पहले ७८६ बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर आखीर में यह दुआ ७० बार पढ़नी चाहिए—बिस्मिल्लाह रहमानुर्रहीम अल्लँजो अनत अह्न जोइ व खुशअत लहु अलासू अल दो जलत मिनु अलु-

कालु व अन तसल्ली व तसल्लम अला सैय्यद नाम मोहम्मद व्व अलेह व सह बह व अन तक़सी फ़ी हुलाक फलां या कुद्दार या क़ाहिर या क़ाबिर या मुक़्तदर या मुन्तक़िम या अल्लाह या अल्लाह।

७८६

७ बदूह	१३	१९	२४	१
२०	२१	२	८	१४
३	६	१५ अल्लाह	१६	२२
११	१७	२३	४	१०
२४ अदद फलां बिन फलां	५	२	१३	१८

१८३

٧٨٦

بدوح ٢٤	١٣	١٩	٢٥	١
٣٠	٢١	٢	٨	١٤
٣	٩	١٥ اللّٰہ	١٦	٢٢
١١	١٧	٢٣	٤	١٠
عدد ٢٣ فلاں بن فلاں	٥	٦	١٣	١٨

१८४

'फलां' के स्थान पर ज़ालिम शख़्स का नाम लेना चाहिए। यह ख़त्म बिलानाग़ा ११ रोज़ तक पढ़े तो ज़ालिम के हाथ से हक़ताला निजात देगा।

नक्श (५०)

[illegible] नक्श (चित्र संख्या १८५, १८६) को कागज पर लिखकर हवा में लटका दें। जब हवा से यह नक्श हिलेगा, तब मतलूब (माशूक) बेक़रार होगा। नक्श मुकर्रम व मोअज्जम इस प्रकार है—

७८६

८	१	६	अलहब फलां बिन फलां	६	१	८
३	५	७	अल हबफमां बिन फलां	७	५	३
४	६	२		२	६	४

१८५

٧٨٦

٨	١	٩	المحب فلاں بن فلاں	٩	١	٨
٣	٥	٧	علی حب فلاں بن فلاں	٧	٥	٣
٤	٩	٣		٢	٩	٤

१८६

नक्श (५१ तथा ५२)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १८७, १८८) तथा (१८६ १९०)—इन दोनों को कागज पर लिखकर, शर्बत में घोल कर माशूक को पिला देने से वह, हर वक़्त खिदमत में हाजिर बना रहता है। नक्श [illegible] ५२ में नीचे माशूक के नाम के साथ अपना नाम लिखना चाहिए।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

२१९२	२१८७	२१९४
२१९३	२१९१	२१८९
२१८८	२१९०	२१९०

१८७

٧٨٦ (1)

٢١٩٢	٢١٨٧	٢١٩٤
٢١٩٣	٢١٩١	٢١٨٩
٢١٨٨	٢١٩٠	٢١٩٠

१८८

७८६

९८४	९८०	९८७
९८६	९८५	९८२
९८१	९८८	९८३

अलहब फलां बिन फलां
अलैहब फलां बिन फलां

१८९

٧٨٦ (2)

٩٨٥	٩٨٠	٩٨٧
٩٨٤	٩٨٦	٩٨٢
٩٨١	٩٨٨	٩٨٣

المحب فلان بن فلان على حب فلان بن فلان

१९०

नक्श (५३)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६१, १६२) वास्ते मुहब्बत के, जुमेरात के दिन जाफ़रान से लिखकर जलाये तथा थोड़ा सा गाय का दूध उसके आगे रखे। नक्श लिखने से पहले ७८६ मर्तबा 'बिस्मिल्लाह' पढ़नी चाहिए। इससे माशूक खिदमत में खड़ा रहता है।

११ ४ / १ १० / २ १२ / ८ ५ ७

अहद या जिबराईल अ.

१६१

١١ ٣ / ١ ١٠ / ٢ ١٢ / ٨ ٥ ٤

اجب یا جبرئیل

१६२

नक्श (५४)

आगे प्रदर्शित नक्श चित्र संख्या (१६३, १६४) को कागज पर लिख कर फ़लीता बनाये, फिर कोरे सकोरे में रोगन चमेली भरकर उसमें फ़लीते जल ये तो माशूक क़दमों में आ हाज़िर होता है। यह नक्श मोहब्बत के वास्ते बड़ा कारगर है।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

३५२१	३५२८	३५१५
३५१६	नाम मतलूब	३५२०
३५१९	३५२२	३५१७

१६३

٧٨٥

٣٥٢١	٣٥١٨	٣٥١٥
٣٥١٤	نام مطلوب	٣٥٢٠
٣٥١٩	٣٥٢٢	٣٥١٧

१६४

नक्श (५५)

आगे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६५, १६६) को जो शख्स जिस काम के वास्ते लिखेगा, वह काम अवश्य होगा। इसे लिखकर अपने बाजू पर बाँधने से किसी आफत में नहीं फँसेगा और अगर दंगदस्त होगा तो रज्ज़ाक मुतलक रोजी गैब से देगा, कभी मोहताज न रहेगा। साहबे तौकीर हो तो दुश्मन उसका दोस्त होगा। अगर बीमार के बाजू पर इसे बाँधा जाय या पानी में घोल कर पिलाया जाय तो मर्ज दूर होगा और मरीज शफ़ा पावेगा। अगर ज़ालिम हाकिम से डरता हो तो इसे अपनी टोपी या पगड़ी में रख कर उसके सामने जाय तो वह इस पर मेहरबान होगा। इस नक्श की बहुत सी खसूसियतें है।

नक्श (५६)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १९७, १९८) को वास्ते मोहब्बत के लिखकर फ़लीता बनाकर कोरे सकोरे में रौगन कुंजद डालकर पाक जगह में रौशन करे और मुँह चिराग का मत्तलूब की तरफ हो और "फलां बिन फलां भला हुआ फलां बिन फलां,' लिख दें। जब चिराग गुल हो जावे तो शीरीन पर फातेहा हज़रत महबूब सुबहानी और शाह मुहम्मद वारिस अली के नाम की लेकर तक़सीम करदें। मगर इस नक्श मुतबर्रक को हराम के लिए हरगिज न करे वरना तासीर न करेगा।

७८६

११	८	१	१४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९
५	१०	१५	४

१९७

۷۸۶

۱۱	۸	۱	۱۴
۲	۱۳	۱۲	۷
14	۳	۶	۹
۵	۱۰	۱۵	۴

१९८

नक्श (५७)

१९९

१९९

२००

ऊपर प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या १६६, २००) को अक़ीक़ पर कुन्दह कराके अँगूठी में पहने तो कभी किसी का मोहताज न रहे। इस शक्ल को चाँदी की अँगूठी पर खुदवा कर भी पहना जा सकता है।

नक्श (५८)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २०१, २०२) को काग़ज़ या भोज पत्र पर लिखकर आग में दफ़न करे। नक्श के बीच में अपना और माशूक का नाम लिखना चाहिए। यह नक़्श मोहब्बत के मामले में क़ामयाबी दिलाता है।

३	७	६	अल हब फलां बिन फलां	४	३	८
९	५	१	अल हब फलां बिन फलां	९	५	१
४	२	८		२	७	६

२०१

٣	٤	٩	الحب فلان بن فلان	٢	٣	٨
٩	٥	١	علی حب فلان بن فلان	٩	٥	١
٢	٣	٨		٢	٤	٩

२०२

नक्श (५९)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २०३, २०४) को कागज पर लिखकर बाजू पर अथवा गले में बाँधने से सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

	६	
९	४	७
१	३	५
१०	२	८
	५	

२०३

	٤	
٩	٢	٧
١	٣	٥
١٠	٢	٨
	٥	

२०४

नक्श (६०)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २०५, २०६) वास्ते शौहर है। शौर

७८६

६	७	२
१	शेन	९
८	३	४

२०५

۷۸۶

۶	۷	۲
۱	۵	۹
۸	۳	۴

२०६

गैर मुल्तफ़त के लिए इसे लिखकर शौहर के बाजू [पर बांधे तथा अपने बाजू पर भी बाँधे तो मुराद पूरी होगी।

नक्श (६१)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २०७, २०८) वास्ते तुब के हरफ़] अलिफ़ को जबके बुर्ज हमल में क़मर तुलू करे, सीसा की तख्ती पर कन्दह करावे।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

८१	८६	७९
८०	८२	८४
८५	८७	८३

२०७

۷۸۶

۸۱	۸۶	۷۹
۸۰	۸۲	۸۴
۸۵	۸۷	۸۳

२०८

नक्श (६२)

नीचे]प्रदर्शित नक्श चित्र (संख्या २०९ ,२१०) नक्श तरफ़ 'बे' को

७८६

२०५	२१०	२०३
२०४	२०६	२०८
२०९	२०२	२०७

२०९

۷۸۶

۲۰۵	۲۱۰	۲۰۳
۲۰۴	۲۰۶	۲۰۸
۲۰۹	۲۰۲	۲۰۷

२१०

जबकि क़मर बुर्ज दिलू में तुलू करे गधे की पोस्त पर लिखकर अपने पास रखें तो मुराद पूरी होगी।

नक्श (६३)

नीचे प्रदर्शित नक्स (चित्र संख्या २११, २१२) के हर्फ़ 'सीन' की जौजा में जब क़मर तुलू करे, मुर्ग के अंडे पर लिखे। यह भी मोहब्बत के लिए कारगर है।

७८६

२३३	२३८	२३१
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२११

٧٨٦

٢٣٣	٢٣٨	٢٣١
٢٣٢	٢٣٤	٢٣٦
٢٣٧	٢٣٠	٢٣٥

२१२

नक्श (६४)

आगे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २१३, २१४) हरफ़ 'शीन' को जब बुर्ज असद में तुलू करे। यह भी मोहब्बत के लिए कारगर है।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

१३०	१२५	१२८
१२९	१३१	२३३
१३४	१२७	१३२

२१३

٧٨٦

١٣٠	١٢٥	١٢٨
١٢٩	١٣١	٢٣٣
١٣٤	١٢٧	١٣٢

२१४

नक्श (६५)

आगे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २१५, २१६) नक्श हरफ़ 'लाम' को जब क़मर बुर्ज कौस में तुलू करें, सिफ़ाल आवनारसीदा पर लिखें। यह भी मुहब्बत के लिए है।

नक़्श इस प्रकार है—

۷۸۶

۳۹۶	۴۰۱	۳۹۴
۳۹۵	۳۹۷	۳۹۹
۴۰۰	۳۹۳	۳۹۸

२१५

७८६

३९६	४०२	३९४
३९५	३९७	३९९
४००	३९३	३९८

२१६

नक्श (६६)

आगे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २१७, २१८) हरफ़ 'मीम' को जब

क़मर बुर्जे जोज़ा में तुलू करें गन्ने के टुकड़े पर लिखकर मतलूब को देना चाहिए।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

[illegible]	[illegible]	१५२
१५३	१५५	१५७
१५८	१५१	१५६

२१७

۷۸۶

۱۵۲	۱۵۹	۱۵۴
۱۵۳	۱۵۵	۱۵۷
۱۵۸	۱۵۱	۱۵۶

२१८

नक्श (६७)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २१९, २२०) हरफ़ 'नून' को जब क़मर बुर्ज असद में तुलू करें, कागज पर लिखे। यह भी मोहब्बत के लिए है -

नक्श इस प्रकार है—

७८६

३५	४०	३३
३४	३६	३८
३९	३२	३७

२१९

٧٨٦

٣٥	٤٠	٣٣
٣٤	٣٦	٣٨
٣٩	٣٢	٣٧

२२०

नक्श (६८)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २२१, २२२) तरफ 'वाओ' को बुर्ज असद में जब क़मर तुलू करे, तांबे की तख्ती पर कुन्दह करावे। यह भी मोहब्बत के लिए है।

नक्श इस प्रकार है--

७८६

३४	३९	३२
३३	३५	३८
३८	३१	३६

२२१

٧٨٦

٣٤	٣٩	٣٢
٣٣	٣٥	٣٨
٣٨	٣١	٣٦

२२२

नक्श (६९)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २२३, २२४) हरफ़ 'छोटी हे' को जब क़मर बुर्ज सौर में तुलू करे। पोस्त आहू पर लिखे। यह भी मोहब्बत के लिए है।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

२३८	२४३	२३६
२३७	२३९	२४१
२४२	२३५	२४०

२२३

٧٨٦

٢٣٨	٢٤٣	٢٣٦
٢٣٧	٢٣٩	٢٤١
٢٤٢	٢٣٥	٢٤٠

२२४

नक्श (७०)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २२५,२२६) हरफ 'ये' को बुर्ज कौस में जब क़मर तुलू करे, रेशमी कपड़े पर लिखें। यह भी मोहब्बत के लिये है।

नक्श इस प्रकार है—

७८६

१९१	१९६	१८९
१९०	१९२	१९४
१९५	१८८	१९३

२२५

٧٨٦

١٩١	١٩٦	١٨٩
١٩٠	١٩٢	١٩٤
١٩٥	١٨٨	١٩٣

२२६

नक्श (७१)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २२७, २२८) को शरबत में घोल कर पिला देने से माशूक हर वक़्त खिदमत में खड़ा रहता है।

नक्श इस प्रकार है—

९	१२	१५	२
१४	३	८	१३
४	१७	१०	७
११	६	५	१६

२२७

٩	١٢	١٥	٢
١٤	٣	٨	١٣
٤	١٧	١٠	٧
١١	٦	٥	١٦

२२८

६ | विविध कामना पूरक प्रयोग

इस प्रकरण में विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति एवं विभिन्न कार्यों [illegible] कतिपय रोग-दोष-निवारक प्रयोगों का उल्लेख भी किया जा रहा है।

इनमें से अधिकांश प्रयोग ऐसे हैं, जिन्हें हिन्दू तथा मुस्लिम तांत्रिकों द्वारा समान रूप से प्रयोग में लाया जाता है। ऐसे प्रयोगों के मन्त्र भी इस प्रकार के हैं कि उनमें मुस्लिम पीर-पैगम्बर तथा हिन्दू देवी-देवताओं आदि के नामों का एक साथ उल्लेख हुआ है।

इन प्रयोगों में से कुछ के मन्त्र तो शुद्ध इस्लामी हैं और कुछ के हिन्दू तथा इस्लामी शब्दों के मिले-जुले हैं।

दूसरे प्रकरण में हाजिरात सम्बन्धी दो प्रयोगों का उल्लेख किया जा चुका है. इस प्रकरण में भी हाजिरात विषयक कुछ अन्य प्रयोग दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त वशीकरण, मोहन, स्वप्न-सिद्धि, शत्रु को कष्ट पहुँचाने, बन्धन-मुक्ति तथा चोरी का पता लगाने आदि विषयों से सम्बन्धित प्रयोगों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

प्रत्येक प्रयोगों का लिखित निर्देशानुसार साधन करना आवश्यक है। जिस प्रयोग के विषय में सामयिक प्रयोग से पूर्व उसे सिद्ध कर लेने का उल्लेख किया गया है, उसे पहले सिद्ध करना आवश्यक होगा, अन्यथा तात्कालिक रूप में वह प्रभावशली सिद्ध नहीं हो सकेगा।

राज सभा-मोहन प्रयोग

पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ७ बार पढ़ने के बाद, दोनों हथेलियों को अपने मुँह पर फेरकर, जिस राज सभा में पहुँचा जायेगा वहीं सफलता प्राप्त होगी तथा सब लोग मोहित (प्रसन्न) हो जायेंगे। मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्रः—"सलामुन कौलुनमिनरबिर्रहीम तनज़ीकुल अज़ीज़ुर्रहीम।"

इस मन्त्र के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

सभा-मोहन प्रयोग

मन्त्र—"कालूँ मुँह धोइ करूँ सलाम मेरी आँखों में सुरमा बसे जो देखे सो पाँयन पड़े दुहाई गौसुल आदम दस्तगीर की छूः छूः छूः ।"

विधि—शुक्रवार के दिन सवा लाख गेहूँ के दाने लेकर एक-एक दाने पर एक-एक मन्त्र पढ़े। फिर उनमें से आधे दानों को पिसवाकर, उस आटे में घी शक्कर मिलाकर हलुवा तय्यार करें और गौसुल आदम दस्तगीर को नियाज देकर, उसे स्वयं खायें। फिर उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर अपनी आँखों में सुरमा आँज कर जिस सभा में भी पहुँचेंगे, वहाँ के सब लोग मोहित हो जायेंगे।

राज्य-कर्मचारी वशीकरण प्रयोग

मन्त्रः—"बिस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलह सख्त तुम हो दाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना ।"

उक्त मन्त्र में जहां 'फलाना' शब्द आया है, वहां जिस राज्य-कर्मचारी को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग विधिः—इकतालीस बिनौले लाकर आधी रात के समय उनमें से एक-एक बिनौले को इकतालीस-इकतालीस बार अभिमंत्रित करके अग्नि में डालता जाय। इस क्रिया को निरन्तर तीन दिनों तक करते रहने से इच्छित राज्य-कर्मचारी वशीभूत हो जाता है।

साधन-विधिः—कार्य-साधन से पूर्व २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को २१ बिनौलों पर २१-२१ बार पढ़कर अग्नि में आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

वशीकरण कारक काले कलवे का प्रयोग

मन्त्रः—"काला कलवा चौसठ बीर मेरा कलवा गंगा तोर जहाँ को भेजूँ वहाँ को जाइ, मास मच्छी को छुवन न जाय, अपना मारा आपहि खाय, चलत बाण मारूँ उलट मूठ मारूँ मार मार कलवा तेरी आस चार चौमुखा दीया न बाती जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी माँ का दूध पिया हराम है ।"

साधन-विधि—घी का दीपक जलाकर गूगल की धूनी दें तथा जोड़ा फूल और मिठाई रखकर २१ दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (१)

सबसे पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिर निम्नलिखित मन्त्र को १००० बार पढ़ें—

मन्त्र—"अल्लाहुस्समद ।"

उक्त मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में ग्यारह-ग्यारह बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

'दरूद' का मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले ही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम ।"

फिर आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़कर अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर फूंक मारें तथा फिर दोनों हथेलियों को बड़ी जोर से फर्श (पृथ्वी) पर मारते हुए इस प्रकार कहें—

"या अल्लाह फलाने (या फलानी) को मेरे बस कर ।"

उक्त 'वाक्य' में जहां 'फलाने (या फलानी)' शब्द आया है, वहाँ साध्य-पुरुष अथवा स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त प्रयोग को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहने से साध्य-व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण प्रयोग (२)

वशीकरण के लिए सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र का २१ दिनों तक नित्य १४४ बार जप करें। मन्त्र जप से पूर्व एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूद' पढ़ना आवश्यक है।

मन्त्र—"लाइलाह इल्लिल्लाह धरती से आसमान तक लाइलाह इल्लिल्लाह अर्श से कुर्सी तक लाइलाह इल्लिल्लाह लोह से कलम तक लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह फलानी के बेटे फलाने को मेरे बस में कर ।"

उक्त मन्त्र में जहां 'फलानी के बेटे फलाने' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो, उसकी मां के नाम के साथ उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब इसी मन्त्र द्वारा ११ बार अभिमन्त्रित पानी या मिठाई को जिस अभिलषित व्यक्ति को खिला-पिला दिया जायेगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगा ।

स्त्री-मोहन प्रयोग

मन्त्र—"अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार । मुझे करे मार मार उसे बाँये कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़ वज्र का बान, बहक्क लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह ।"

विधि—किसी भी शनिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक प्रतिदिन १००१ बार इस मन्त्र का जप करें । जप करते समय घी का दीपक तथा मिठाई अपने सामने रक्खें तथा लोबान की धूप दें । इस प्रकार आठ दिन तक साधन (जप) करने से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा ।

प्रयोग के समय साध्य-स्त्री के बांये पांव के नीचे की मिट्टी लाकर, उसे इस मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करके मस्तक पर डाल देने से वह स्त्री मोहित होकर साधक के वशीभूत हो जाती है ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (१)

मन्त्र—इन्ना आत्वैना शैताना मेरी शिकल बन फलानी के पास जाना, उसे मेरे पास लाना, न लावे तो तेरी बहन मानजी पर तीन सौ तीन तलाक ।"

विधि—एक चारपाई के पाँयते नंगे खड़े होकर, हाथों में गुड़ की एक डेली लेकर, उस डेली पर उक्त मन्त्र को १२१ बार पढ़ कर फूंके, तत्पश्चात् उस गुड़ की डेली को खाट के नीचे रखकर सो जाय । प्रातः-काल वह गुड़ बालकों को बांट दे । इस प्रकार ७ दिन तक यह अमल करे तो साध्य-स्त्री वशीभूत होकर पास आ जाती है । उक्त मन्त्र में जहां 'फलानी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (२)

मन्त्र—"कामरूदेस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने दिया पान का बीड़ा, पहला बीड़ा आती जाती, दूजा, बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाई, फलानी खाय पास चली आई, दुहाई श्री गुरू गोरखनाथ की ।"

विधि दिवाली की रात में यह मन्त्र १४४ बार पढ़ने से सिद्ध हो जाता है । फिर आवश्यकता के समय बिना कट पान के बीड़े का इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगी । इस मन्त्र में जहां 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ अभिलषित स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (३)

मन्त्र—"कामरूप देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल तोड़े लोना चमारी, जो इस फूल की सूँघे बास, तिस का मन रहे हमारे पास, महल छोड़े, घर छोड़े, आँगन छोड़े, लोक-कुटुम्ब की लाज छोड़े, दुहाई लोना चमारी की, धनन्तरि की दुहाई फिरै ।"

विधि—शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक नित्य १४४ बार इस मन्त्र का जप करें तथा धूप, दीप और मदिरा रखकर पूजन करें । इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर किसी फूल को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके साध्य-स्त्री को दे दें तो वह उस फूल को सूँघते ही वशीभूत हो जाएगी ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (४)

मन्त्र—"बड़ पीपल का थान, जहाँ बैठा अजाजील शैतान मेरी शबीह मेरी सूरत बन फलानी को जा रान, जो न राने तो धोबी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पड़े, जो राजा चाहे राजा का, मैं चाहूँ अपने काज को, मेरा काम तो आनसी मैं तेरा दामनगीर रहूँगा।"

विधि :—किसी भी शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक, आधी रात के समय नंगा होकर ११ राई के दाने हाथ में लेकर, प्रत्येक दाने के ऊपर उक्त मन्त्र को ग्यारह-ग्यारह बार पढ़कर आग में डालता जाय। मन्त्र में जिस जगह पर 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त क्रिया को नित्य-नियमित रूप से करते रहने पर साध्य-स्त्री वशीभूत होकर स्वयं सामने आ उपस्थित होती है।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (५)

मन्त्र (१)—"अलफ गुरु गुफ्तार रहमान, जाग जाग रे अलहादीन शैतान सात बार फलानी को जा रान, न राने तो तेरी माँ की तलाक, बहिन की तीन तलाक।"

मन्त्र (२)—'अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान मेरी शकल बन फलानी को जा रान, न राने तो तेरी माँ बहिन को तीन सौ तीन तलाक।''

उक्त दोनों मन्त्रों की प्रयोग-विधि नीचे लिखे अनुसार एक जैसी ही है। उक्त मन्त्रों में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

विधि—बेसन का चौमुखा दीपक बनाकर उसके चारों कोनों पर चीटे का रक्त (खून) तथा अपने दांये हाथ की अनामिका (चौथी) अँगुली का रक्त (खून) लगाकर, उसमें तेल भरकर चार बत्तियाँ रक्खें। फिर नंगे (निर्वस्त्र) होकर, दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाँय तथा दीपक की बत्तियों जलाकर, लोबान की धूप दें। भोग के लिए भुने हुये जौ अपने पास रक्खें। फिर उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी भी एक को १०८ बार जप कर नंगे ही सो जाँय तथा दीपक को जलता हुआ छोड़ दें। इस क्रिया को नित्य ७ दिनों तक करते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत होकर स्वयं साधक के पाँवों पर आ गिरती है।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (६)

मन्त्र—"अलफ गुरु गुफ्तार [illegible] जाग अल्लाउद्दीन शैतान सात बार फलानी के जिया आन जो न माने तो तेरी अम्मा की तलाक हमशीरा की तलाक।"

टिप्पणी—यह मन्त्र भी पूर्वोक्त मन्त्रों के पाठान्तर जैसा ही है। इसकी प्रयोग-विधि भी मिलती-जुलती है, जो निम्नानुसार है—

विधि—बेसन का एक चौमुखा दीपक बनायें, फिर दाँये हाथ की अनामिका अँगुली के रक्त में रुई को भिगोकर बत्ती तय्यार करें, तदुपरान्त दीपक में चमेली का तेल भरकर उसमें पूर्वोक्त बत्ती डालें तथा लोबान की धूप दें। फिर भुने हुए जवला (जौ) का भोग रखकर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठें तथा १००८ की संख्या में मन्त्र का जप करें। ७ दिन तक यह प्रयोग करने से साध्य-स्त्री वशीभूत होकर साधक के पास चली आती है।

प्रयोग विधि—सिद्ध हो जाने पर प्रयोग के समय उक्त मन्त्र को २१ बार सुपारी की छाल पर पढ़ें तथा उसे पान में रखकर अभिलषित व्यक्ति को खिला दें तो मनोभिलाषा की पूर्ति होती है। यह मन्त्र आकर्षण कारक होने के साथ-साथ वशीकरणकारक भी है तथा मूँठ को उल्टी भेजने का काम भी करता है।

सर्व जन-मोहन मन्त्र

मन्त्र—'कामरूदेस कामाख्या देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने बोई बाड़ी, फूल उतारे लोना चमारी। एक फूल हँसे, दूजा विहँसे, तीजे फूल में छोटा-बड़ा नाहरसिंह बसै। जो सूँघे इस फूल की बास, वो आवै हमारे पास। और के पास जाय तो हिया फाटि मरि जाय। मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—रविवार के दिन स्नान करके लौंग, सुपारी, पान, फूल, मिठाई ले, दीपक जला, १०८ सुगन्धित फूलों को घी में सानकर प्रत्येक को १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अग्नि में होम करें। इस प्रकार २१ दिन तक निरन्तर होम करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस अवधि में ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। २२वें दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए।

आवश्यकता के समय किसी सुगन्धित पुष्प को इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को सुँघा दिया जायेगा, वही मोहित हो जायेगा।

स्त्री-मोहन चम्पा फूल मन्त्र

मन्त्र—"कामरूदेस कामाख्या देवी जहां बसै इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुनै लौना चमारी, एक फूल राता, दूजा फूल माता, एक फूल हँसा, दूजा फूल बिहँसा, तहाँ बसै चंपा का पेड़, चम्पा के पेड़ मे रहै काला भैरूँ, भूत प्रेत ये मरें, मसान, ये आवे, किसके काम ये आवे टौना टामन के काम, भेजूँ काला भैरूँ को लावे मुरकें बाँध बैठी हो तो बेगी लाव, सूती हो तो उठा लाव, वह सोवे राजा के महलों, प्रजा के महलों, मुझसे होनी राजी, फूल दूँ उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमको छोड़ पर घर जाय, छाती काटि वहीं मर जाय, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरोमन्त्र ईश्वरोवाचा चूके उमाह सूखे लोना चमारी बहरे जोगी के कुंड में पडे, बाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नार खखार में पड़े।"

विधिः—शनिवार के दिन चम्पा के पेड़ को न्यौत कर उसकी डाली में लाल कलाये का डोरा बाँध आयें। रविवार के दिन प्रातः काल उसी डाली को, उक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर तथा गूगल की धूनी एवं धूप देकर, तोड़कर घर ले आयें। फिर घर लाकर रात के समय डाली के आगे दीपक रखकर भैरव का पूजन करें तथा २१ बार मन्त्र का जप

करें। भोग में शराब, उर्द के बड़े, तैल, गुड़ तथा दही रक्खें। इस प्रकार नित्य २१ दिनों तक साधन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय चम्पा के फूल को इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिस स्त्री को सुँघाया जायेगा, वही मोहित होकर वश में बनी रहेगी।

पीर बिरहना का मन्त्र

मन्त्रः—"पीर बिरहना धुंधु करे सवा सेर सवा तोला खाय अस्सी कोस धावा करे सात सै कुतक आगे चले, सात सै कुतक पाछे चले, छप्पन सै छूरी चले, बावन सै बीर चलें जिसमें गढ़ गजना का पीर चले और की धजा उखाड़ता चले, अपनी धजा टेकता चले, सोते को जगाता चले, बैठे को उठाता चले, हाथों में हथकड़ी गेरे पैरों में बेड़ी गेरे हलाल माहीं दीठ करे मुरदार माहीं पीठ करे कलवान नबी कूँ याद करे ठः ठः ठः।"

विधिः किसी ग्रहण की रात से शुरू करके रोजाना ४० दिनों तक इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करें तथा सुगन्धित तैल का दीपक जला-कर चमेली के फूल चढ़ावें एवं सवा सेर हलुवा का भोग रक्खें तो चालीसवें दिन पीर बिरहना सामने हाजिर होगा। उसे देखकर डरना नहीं चाहिए। अगर डरेंगे नहीं तो फिर वह पीर हमेशा खिदमत में हाजिर रहा करेगा तथा उससे जिस काम के लिए कहा जायेगा, उसे वह पूरा करता रहेगा।

मुहम्मदा पीर का मन्त्र

मन्त्रः—"बिस्मिल्लाहेर्रहमानिर्रहीम पांच घूँघरा कोट जंजीर जिस पर खेले मुहम्मदा पीर, सवा मन का तीर जिस पर खेलता आवे मुहम्मदा वीर, मार मार करता आवे, बांध बांध करता आवे, डाकिनी को बांध कुवा बावड़ी से लावो, सोती को लावो, पीसती को लावो, पकाती को लावो, जल्द जावो हजरत इमाम हुसेन की जांघ से निकाल कर लावो, बीबी फातमा के दामन सूँ खोलकर लावो नहीं तो माता का चूखा दूध हराम करे।"

विधि—इस मन्त्र को नौचंदी जुमेरात की संध्या से जपना आरम्भ करके नित्य १० बार पढ़कर लोबान की धूप देते जांय। इस प्रकार २१ जुमेरात बीत जाने पर मुहम्मदा पीर हाजिर होता है तथा उससे जो काम करने को कहा जाता है, उसे पूरा करता है।

इस मन्त्र को यदि किसी बीमार आदमी के ऊपर पढ़कर फूंक मारी जाय तो उसे आराम मिलता है।

मुहम्मदा पीर का हाजिराती मंत्र

मन्त्र—'बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम मुहम्मदा ताहयासिला रनवलखता जीका असवार यहां चलंता कौन कौन चाल्या, अजैगिर पर पर्वत चले, हाजी चले, गाजी चले, ढोली बाजंत मेरी बाजंत अहेमदा चलंत, महेमदा चलंत, सत्तर सिला चलंत, बहत्तर बल्लम चलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत, बावन वीर चलंत, चौंसठ जोगनी चलंत, नौ नारसिंह चलंत, बारह रावण चलंत चौंसठ मूसा चलंत, सुलेमान पैगम्बर का तखत चलंत, लालपरी चली, सुफ़ेद परी चली, जरद परी चली, स्याम परी चली, सब्ज परी चली, हूर परी चली, जूर परी चली, अलोल परी चली, आसमान परी चली, आकाश से उतरी बराय खुदा मेरे काम कूँ सिताबी उतार ल्यावणा एक चलंता, एक सौ चल्या दोय चलंता दोय सौ चल्या तीन चलंता, तीन सौ चल्या बड़े वेग सूँ चल्या उडा कुडादेव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंका पै रावण चल्या हनुमंत चले घूमन गरसूँ देवी घूमा चली नदी नालेसूँ चली मन्दोदरी रावनपुरी सूँ चली उलटी पाखर सुलटी लागी, जो कोई कहे हमारी बुरी उल्टी सोमरली देखूं तेताल मन्त्र तेरी शक्ति बिस्मिल्लाहहेर्रहेमानिरहीम उत्तर का बाजा बजा उत्तर का बादशाह आया, पश्चिम का बाजा बजा पश्चिम का बादशाह आया, पूरब का बाजा बजा, पूरब का बादशाह आया काले काले के असवार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहाँ हकालै जहाँ हाजिर रहेना दे खुदा मुहम्मदा की सुखीर पीर नीर नीर लीला घोड़ा, नीला जीन जिस पर चढ़ि आया मुहम्मदा पीर रोजा करे निवाज गुजारे अन्न पानी के कने न आवै, खाज खाय अखज पर हरे सो मुसल्मान बिहिस्त में जाय, सवा मन लोहे की जंजीर तोड़तो जाई तोड़तो आव हाथ कुदाड़ी गले जंजीर ऐसी कही सुनी मुहम्मदापीर अपनी [illegible]री, पराई मुदरा तोड़ डाल, हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किले की सवारी ठः ठः स्वाहा।

विधि—सवा हाथ सफेद कपड़ा, गूगल तथा लोबान की धूप दी जाय। फिर सवा सेर चावल की मस्जिद बनाकर, थाली में पानी भरकर रक्खें। मस्जिद के ऊपर चौमुख दिया जलाये। फिर क्वारी कन्या को स्नान करवा के तथा नये कपड़े पहिना कर उसे सामने बैठायें तथा गुड़ की गोली को पूर्वोक्त मन्त्र से १४ बार अभिमन्त्रित कर कन्या को खिलायें। फिर कन्या दीपक के ऊपर दृष्टि जमाये। तदुपरांत उससे जो कुछ पूछा जाएगा, उसका वह सही-सही उत्तर देगी।

हाजिरात का सुलेमानी मन्त्र

मन्त्र—'बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरी सादात फुरो बादना मुरादी बेबुनियादी तुर्कमापरि तायिया सिलार देखूँ तेरी सक्ति बेगि बाँधि ल्लाव नौ नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारह सौ शाकिनी कामन दुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया बैताल बेगि बाँधि लाव जो न बांधि लावै तौ दुहाई सुलेमान पैगम्बर की॥"

विधि—हर शुक्रवार को तेल, इत्र, लौंग, धूप तथा मिठाई से पूजन करके १०८ बार पढ़ने से यह मन्त्र ४० दिन में सिद्ध हो जाता है। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर जब हाजिरात करना हो, तब फ़र्श पर मिट्टी से चौका लगाकर, उस पर चावलों की मस्जिद बनायें। फिर एक लकड़ी के पट्टे

पर त्रिशूल लिखकर, उसके ऊपर क्वारी कन्या को स्नान कराकर तथा स्वच्छ वस्त्र पहिना कर बैठायें फिर कन्या के सामने दीपक जलाकर रखें तथा स्वयं पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़-पढ़कर कन्या के मस्तक पर चावलों को मारें तो कुछ देर बाद ही वह कन्या आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीपक में देखकर दे उठेगी।

हाजिरात का ख्वाजा मन्त्र

मन्त्र—"ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैंदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो हजरत पीर हाजर सो हाजर।"

विधिः—किसी भी शुक्रवार से आरम्भ करके २१ दिन तक इस मन्त्र को नित्य १०८ की संख्या में उल्टी माला पर जपें। लौंग, इलायची और लोबान की धूप देते रहें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग के समय सुबह ८ बजे एक छोटे बच्चे को स्नानादि से पवित्र कर स्वच्छ वस्त्र पहना कर एक लकड़ी के पट्टे पर बैठायें तथा उसके दायें अंगूठे के नाखून पर काली स्याही (काजल) लगा दें और उसमें मुंह देखने को कहें तथा स्वयं आगे बैठकर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए धूप देते रहें।

लड़के को सबसे पहले मैदान दिखाई देगा। जब वह यह कहे कि मुझे मैदान दिखाई दे रहा है, तब आप उससे कहें कि मैदान की जगह चौगान दिखाई देने लगे। फिर लड़का जब चौगान दीखने की बावत कहे, तब आप कहें कि 'दो जने आओ।' जब दो जने आजायें तब कहें कि 'दो और आ जाओ।' जब दो और आजायें, तब कहें कि दो और भी जायें। इस प्रकार चार दफा करें। जब आठ आदमी आ जायें, तब कहें कि झाड़ू वाले को बुलाकर झाड़ू लगवाओ। जब झाड़ू लग जाये तब कहें कि 'भिश्ती को बुला कर छिड़काब कराओ।' जब छिड़काव हो जाये तब कहें कि फर्श बिछवाओ।' जब फर्श बिछ जायं, तब कहें कि 'दो कुर्सी और तख्त मँगाओ।' तख्त तथा कुर्सी आ जाने पर कहें कि गद्दी बिछवाओ, गद्दी बिछ जाने पर कहें कि 'पीर साहब को जाकर हमारी ओर से अर्ज करें कि आपका फलां खादिम आपको याद कर रहा है, इसलिए मेहरबानी करके मुंशी साहब को साथ लेकर यहाँ तशरीफ लायें।' जब मुंशी साहब तथा पीर साहब आ जायें तब मुंशी से कहें कि वह भोग को पीर साहब की नज्र करें– यह कहकर भोग, इलायची, इत्र इन सबको दें। फिर मुंशी

से कहें कि पीरान पीर साहब से हमारी अर्ज करें कि आपका फलां खादिम फलां काम के बारे में पूछ रहा है।' यह कहकर अपना काम बतायें तो लड़के द्वारा उसका जबाब मिलेगा।

यदि लड़का उत्तर को समझ जाय तो ठीक कहे, न समझ सके तो मुंशी से कहे कि मैं नहीं समझा. इसलिए मुझे फलां भाषा में लिखकर लिखदो। यह सुनकर मुंशी उसी भाषा में लिखकर दिखा देगा। इसी विधि से जो कुछ पूछना हो, वह पूछ लेना चाहिए।

स्वप्न सिद्धि मन्त्र (१)

मन्त्र—"बिस्मिल्लाहहुर्रमानुर्रहीम अल्लाहो रब्बीमुहम्मद रसूल ख्वाजे की तस्वीर कुल आलम हजूर भेजेंगे मवक्कल ल्यावेंगे जरूर।"

विधि—इस मन्त्र को पहले सवा लाख की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। मन्त्र का जप बृहस्पतिवार से आरम्भ करना चाहिए तथा पश्चिम की ओर मुंह करके बैठना चाहिए। आवश्यकता के समय ग्यारह सौ से ग्यारह हजार तक की संख्या में, जितना हो सके मन्त्र का जप करना चाहिए। यह क्रम २१ दिन तक जारी रखना चाहिए। इसके प्रभाव से वांछित प्रश्न का उत्तर २१ दिन के भीतर स्वप्न में अवश्य प्राप्त हो जाता है।

इस मन्त्र के अमल के दिनों में हर बार पेशाब करने के बाद इस्तिजा अवश्य करना चाहिए अर्थात् इन्द्री को मिट्टी के ढेले से पोंछ देना चाहिए तथा वृहस्पतिवार के दिन किसी कब्र पर जाकर रक़ाबी, फूल-इत्र तथा मिठाई चढ़ानी चाहिए, लोबान की धूप देनी चाहिए तथा फकीरों को खाना खिलाना चाहिए।

स्मरणीय है कि सभी मुसलमानी मन्त्रों को उल्टी माला फेरते हुए जपा जाता है अतः इस मन्त्र को भी उल्टी माला फेरते हुए ही जपना चाहिए।

स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (२)

मन्त्र—"बिस्मिल्ला हुर्रहेमानुर्रहीम शमशैरव वरैल शलै आदम हजरत महबूब सुभानी हाजर।"

विधि—साधन विधि तथा इस्तिजा आदि के सभी नियम पूर्वोक्त मन्त्र की तरह ही समझना चाहिए। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को नित्य १००० की संख्या में जपने से २१ दिन के भीतर स्वप्न के माध्यम से भविष्य का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (३)

मन्त्र—"या बासितो।"

विधि—पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके बैठें तथा चौमुखा दीपक जलाकर, उल्टी माला पर नित्य ३३००० की संख्या में ४१ दिनों तक उल्टी माला फेरते हुए जप करें तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को नित्य १००० की संख्या में पढ़कर सो जाने पर साधक के प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर स्वप्न में मिल जाता है। इस मन्त्र को अत्यन्त चमत्कारी माना जाता है।

दुश्मन को मारने का प्रयोग

सबसे पहले मोम का एक पुतला बनायें। फिर शनिवार के दिन पहली घड़ी में उस पुतले को १०१ बार निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करें अर्थात् इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर पुतले के ऊपर फूँक मारें—

मन्त्र—"या कह हारो।"

उक्त मन्त्र को पढ़ने में पहले ६ बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' का मन्त्र पढ़ें तथा २ बार निम्नलिखित मन्त्र भी पढ़ें—

"या कह हारो या कहर ताविल कहर्फी कहर।"

मन्त्र के आदि तथा अन्तर में ११-११ बार 'दरूद' भी अवश्य पढ़नी चाहिए।

उक्त प्रकार से मन्त्र-जप करने के बाद झाड़ की सींक का तीर-कमान बनायें, फिर उसे निम्नलिखित मन्त्र से ५०० बार अभिमन्त्रित करें—

"या हूशियन लाइलाहइल्ला अंता सुबहानिका इन्ना कुन्तौ मिनज्जालमीन।"

इस मन्त्र को पढ़ने से पूर्व एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना आवश्यक है।

फिर तीर को कमान पर रखकर नीचे लिखे मन्त्र को ३ बार पढ़ें परन्तु इससे पहले भी एक बार 'बिस्मिल्लाह' अवश्य पढ़नी चाहिए। मन्त्र यह है—

"या कह हारो या इतरालो या टौराइलो या अमवाक़िलो फलाने की छाती और कलेजे को मेरे तीर की जर्ब से जख्मी करो [illegible]।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त प्रकार से मन्त्र को पढ़ने के बाद कमान पर चढ़ाये हुए तीर को पुतले की छाती में मारना चाहिए। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों के भीतर दुश्मन की मृत्यु हो जाती है।

शत्रु-मारण मन्त्र

मन्त्र—**"जल की जोगिनी पाताल का नाग, उठ अबारि जहाँ लगाऊँ तहाँ दौड़ के मार, दौड़ कर दुहाई मुहम्मदाबीर की तुर्कनी के पूत की दुहाई, भोला चक्रषी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"**

विधि—एक पत्ते में थोड़ा सा अबीर लपेटकर, उसे अपने मुँह में रक्खें, फिर पानी में गोता लगाकर ७ बार उक्त मन्त्र का जप करें, फिर मुँह में से पत्ता तथा पत्ते से अबीर निकाल कर, अबीर को गूगल की धूनी देकर ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के मुँह पर डाल दिया जायेगा उसकी मृत्यु हो जायेगी अथवा उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट होगा।

शत्रु-मुख स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र—**"शाह आलम कुत्ब आलम ज़ेर करो दुश्मन दफै करो जालिम।"**

विधि—किसी शुभ महीने के शुक्ल पक्ष की पहली जुमेरात से आरम्भ करके ८ दिनों तक रात के समय दीपक जलाकर तथा फूल, बताशा एवं रेवड़ी चढ़ाकर तथा लोवान की धूप देकर इस मन्त्र का नित्य ४० बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

आवश्यकता के समय शत्रु की ओर ५ बार मन्त्र पढ़कर फूँक मार देने से उसकी जीभ बन्द हो जाती है अर्थात् वह अधिक नहीं बोल पाता।

दाढ़ के दर्द का मन्त्र

मन्त्र—"नमो कामरू देस कामक्षा देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने पाली गाय, नित उठ वन में चरावन जाय। वन में चरै रूखासूखा, घास खाय पी के गोबर किया, जासे निपज्या कीड़ा सात। सूत सुताला पूँछ पुछाला, धड़ पीला मुँह काला। डाढ़ दाँत गालै मसूड़ा पीड़ा करै तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरै। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए लोहे की तीन कीलों को काठ (लकड़ी) पर ठोंक देने से दाढ़ का दर्द दूर हो जाता है।

बावले कुत्ते के काटने का मन्त्र

मन्त्र—'नमो कामरू देस कामाक्षा देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दस काली दस काबरी दस पीली दस लाल। रंग बिरंगी दस खड़ी दस टीको दै भाल। इनका विष हनुमन्त हरै रक्षा करै गुरू गोरखनाथ। सत्य नाम आदेश गुरु को।'

विधि यह मन्त्र ग्रहण की रात्रि में १००० बार जपना चाहिए। जप के समय तैल का दीपक जलाना चाहिए तथा लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जिस आदमी को बावले कुत्ते ने काटा हो, उसके घाव के चारों ओर आरने कण्डों की राख को ७ बार मन्त्र पढ़कर लगा दें। इस क्रिया को तीन दिन तक नित्य करने से लाभ होता है।

बावले कुत्ते का झारा

यदि किसी व्यक्ति को बावले (पागल) कुत्ते ने काट लिया हो तो निम्नलिखित मन्त्र का झारा देने से उसका विष उतर जाता है।

मन्त्र—'ओम् कामरू देस कामाख्या देवी जहाँ बसै इस्माइल जोगी, झामरा कुत्ता सोना की डाढ़ रूपा का कूड़ा बन्दर नाचे रीछ बजावै सीता बैठी औषध बाँटे कूकर का विष भाजे शब्द साचा पिन्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

[illegible] रात अथवा ग्रहण के दिन इस मन्त्र को १०,००० की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए तथा आवश्यकता के समय १०८ बार जपकर रोगी को फूँक मारनी चाहिए।

आधासीसी का झारा

यदि किसी व्यक्ति के आधे सिर में सूर्योदय से सूर्यास्त तक होने वाला आधासीसी का दर्द हो तो नीचे लिखे मन्त्र का झारा देने से दर्द बन्द हो जाता है।

मन्त्र—'काली चिड़िया किलकिली, काले बनफल खाइ।
खड़े मुहम्मद शाह अंक दें, आधासीसी जाइ।"

विधि—पहले ग्रहण के दिन दीवाली या होली की रात को १०,००० की सँख्या में जप कर मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर शनिवार या रविवार को दोपहर बारह बजे के समय रोगी को सूर्य की ओर टकटकी लगाकर देखने को खड़ा कर दें तथा स्वयं इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर उस पर फूँक मार दें तो आधासीसी का दर्द दूर हो जायेगा।

बवासीर का मन्त्र (१)

मन्त्र—'ईसा ईसा काँच कपूर चोर के सीसा अलिफ अक्षर जाने नहीं कोई। खूनी बादी एकु न होई। दुहाई तख्त सुलैमान बादशाह की।"

विधि—उक्त मन्त्र किसी ग्रहण के समय, होली अथवा दीवाली की रात में १०,००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर, इसी मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित पानी रोगी को आबदस्त लेने के लिए दें तथा बाद में रोगी पाखाने के हाथ धोकर, बवासीर के मस्से को हाथ से पकड़कर मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित

जादू-टोने का असर दूर करने का तन्त्र

अमावस की सुबह चार बजे किसी कब्रिस्तान में जाकर, वहाँ के किसी पेड़ के घोंसले में एक कौए को पकड़ लावें। फिर उसे लोहे के पिंजड़े में बन्द करके उसके सिर पर जाफ़रान (केसर) का तिलक लगायें तथा उसके गर्दन के चारों ओर भी केसर से एक घेरा सा बना दें। फिर सूरज निकल आने पर उड़द के आटे का हलुआ असली घी और शक्कर [illegible] तैयार करें। उसी में थोड़ा सा लोबान भी मिला दें। फिर वह हलुआ कौए को खाने के लिए दें। दिन के वक़्त उसे हस्ब मामूल ख़ुराक देते रहें तथा पीने के लिए दही फेंटने से निकला हुआ नीले रंग का पानी दें। ऐसा रोजाना करते रहें। फिर जिस दिन शनिवार पड़े, उस दिन हलुआ, घी और शक्कर की बजाय तेल और गुड़ से तैयार करें। यह हलुआ लोहे की कढ़ाई में, लोहे की कलछी से ही बनाना चाहिए और लोहे के बर्तन में रखकर ही कौए को खाने के लिए देना चाहिए।

इस हलुए को खाने के बर्तन में डालने से पहले उस पर ६ रत्ती सिन्दूर छिड़क देना जरूरी है तथा उस बर्तन में ताँबे का एक छोटा टुकड़ा भी डाल देना चाहिए।

कौआ हलुए को तो खा लेगा परन्तु ताँबे का टुकड़ा उसी बर्तन में पड़ा छोड़ देगा। तब उस टुकड़े को बर्तन में से निकालकर अपने पास अलग रख लें।

कौए को पकड़े हुए जब सात दिन पूरे हो जायें, तब आठवें दिन उसे पिंजड़े से निकालकर आकाश की ओर मुँह करके छोड़ दें। फिर उस ताँबे के टुकड़े को किसी सुनार के पास ले जायें और उससे कहें कि वह उस टुकड़े से एक आदमी जैसी मूरत तैयार कर दे। उस मूरत के एक ओर कौए का तथा दूसरी ओर एक ऐसी तराजू का चित्र खुदवा दें जिसके दोनों पलड़े बराबर के हों।

ऊपर लिखे तरीके से करामाती गंडा तैयार हो जाएगा। अगर कभी अपने ऊपर या किसी दीगर शख्स के ऊपर जादू टोने का असर मालूम हो तो ऊपर कही गई मूरत को धागे में बाँधकर अपने गले में पहन लें या दीगर शख्स के गले में पहना दें। अगर किसी ने मकान में रहने वाले सब लोगों के ऊपर कोई जादू-टोना कर दिया हो तो उस रात को मकान के मुख्य दरवाजे पर गाड़ दें और अगर किसी ने खेत या बगीचे पर जादू-टोना कर दिया हो तो उस मूरत को खेत या बगीचे के बीच में गाड़ दें तो हर तरह के जादू-टोने का असर दूर हो जाएगा। अगर इस मूरत को हर वक्त अपनी जेब में रखा जाएगा तो हर तरह के जादू-टोने से हिफ़ाजत बनी रहेगी।

दफ़ीना (गढ़ा धन) नज़र आने का तन्त्र

(१) [illegible] फल दोनों को खूब बारीक पीसकर आँखों में लगाने से दफ़ीना (गढ़ा धन) नजर आता है।

(२) स्याह मुर्ग की जुबान (जीभ) को तेल में जलाकर उस शख्स की आँखों में लगायें जो उल्टा पैदा हुआ हो तो दफ़ीना (गढ़ा धन) दिखाई देता है।

खर्च किया हुआ रुपया वापिस आ जाना

असाढ़ के महीने में इतवार के दिन दरिया तालाब के किनारे जाकर एक जोड़ा मेढ़क का जुफ़्ती करता हुआ ले और उसे गूगल की धूनी देकर नर के मुँह में रुपया और मादा के मुँह में अठन्नी रखकर दोनों की मलक देकर तालाब या दरिया के किनारे पूरब की ओर मादा और पच्छिम की ओर नर को ऐसी जगह गाड़ दें, जहाँ किसी की आमदरफ़्त न हो अर्थात् पाँव न पड़े। यह काम एकदम नंगा (निवस्त्र) होकर करें। जब आठ दिन गुज़र जायें तब दोनों को खोदकर देखें। अगर रुपया ३३ बार अठन्नी के पास पहुँचे तो रुपया खर्च करना चाहिए और अठन्नी को अपने पास रखना चाहिए और अगर अठन्नी उड़कर रुपया के पास पहुँच जाय तो अठन्नी को खर्च करके रुपया को अपने पास रखना चाहिए। उड़ने वाले को बार-बार खर्च करने से वह पलट-पलट कर खर्च करने वाले के पास आ जाता है।

रोग-दोष मिटाने का उतारा

मिट्टी के सात शकोरे लाकर, उनके ऊपर ढक्कन रखें। फिर सात रेशम लाकर उसके ऊपर सिन्दूर लगायें तथा छार छबीला, कपूर कचरी अगर और कपूर को मिलाकर सात तरह की पुड़िया बनाकर रख लें। फिर लाल, पीला, हरा, गुलाबी, भूरा और सफ़ेद —इन सातों रंगों से शकोरे को रंगें और उनके भीतर कड़ुआ तेल भरकर ढक्कन से मुँह बन्द करके उनके ऊपर पुड़िया रख दें। शाम के वक्त रोगी के सामने इस उतारे को

करके शकोरों को किसी नदी तालाब वगैरह में डाल दें तो रोग-दोष दूर हो जाते हैं।

स्वप्न में भविष्य ज्ञान

जंगल में जाकर जिस पेड़ पर अमरबेल है, पहले उसकी सात परिक्रमा करें उसको अमर बेल युक्त एक लकड़ी तोड़कर ले आयें। फिर उस लकड़ी को धूप देकर जला दें तथा लता को सिरहाने रखकर जिस (बात) का विचार करते हुए सो जाया जायेगा उसके बारे में भविष्य का ज्ञान ख्वाब (स्वप्न में) प्राप्त हो जाता है।

मनवांछित चीज को प्राप्त करना

किसी मनवांछित वस्तु की प्राप्ति तथा अभिलाषा की पूर्ति में निम्नलिखित तान्त्रिक-प्रयोग सहायक सिद्ध होते हैं—

प्रयोग १– माघ महीने के कृष्ण पक्ष की तेरस की रात में किसी जगह पड़ी हुई ऊँट की हड्डी को न्योत आवें। फिर चौदस की रात में उसे घर लाकर धूप-दीप दें। फिर उसे पानी में धोकर सिन्दूर और लाल चन्दन लगायें और उससे मनवांछित वस्तु की याचना करें तो कुछ ही दिनों में अभिलाषा पूर्ण होती है।

प्रयोग २ रविवार के दिन मेढ़े के सींग को न्योत कर घर ले आयें। फिर उसे जलाकर गोली तैयार करें तथा गोली को जमीन में गाड़ कर तेल से सींचें। आधी रात के समय एकान्त में उसके पास बैठकर मन में जिस कार्य की इच्छा करें वह अल्लाह की मेहरबानी से पूरी होती है।

प्रयोग ३ भादों महीने के अँधेरे पाख में भरणी नक्षत्र वाले दिन पानी भरे हुए चार घड़े लेकर जंगल में पहुँचें और उन्हें वहाँ किसी एकान्त जगह में रखकर चुपचाप लौट आयें। फिर दूसरे दिन वहाँ जाकर घड़ों को देखें और उनमें जो खाली मिले उसे लेकर लौट आयें। बाकी घड़ों को खाली खाली करके वहीं छोड़ आयें। घर लाये हुए खाली घड़े को किसी एकान्त कोने में रखकर प्रतिदिन उठकर पूजा करें तो लक्ष्मी प्रसन्न होकर उसके घर में रहने लगती है अर्थात् उस व्यक्ति की गरीबी दूर हो जाती है।

जुए में जीतना

इतवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, तब एक दिन पहले यानी कि शनीचर के दिन पवाड़ के पौधे को न्योत आवें। फिर रविवार की सुबह उसे लाकर अपनी दाईं कलाई में बाँधकर जुआ खेलें तो वह लगातार जीतता चला जायेगा।

गुप्त भेद को जानना

इतवार के दिन घुग्घू का कलेजा निकाल कर ले आयें। फिर उसे धूप लोबान देकर सोते हुए आदमी की छाती पर रख दें तो वह सोते हुए [illegible] भेदों को प्रकट कर देता है।

रात में भी दिन जैसा दिखाई देना

इतवार के दिन मेढक और मेढकी को जोड़ा खाते हुए देखें या किसी पीले मेंढक को दूसरे मेंढक पर चढ़ा हुआ देखें तो उन्हें लाकर, मार कर सुखा लें। फिर उन्हें आग में जलाकर भस्म करें और उसे सुरमे की तरह पीस कर रख लें। इस सुरमे को आंखों में लगाने से अंधेरी रात में भी दिन की तरह दिखाई देता है।

दूर चलने पर भी थकान न आवे

(१) काले तीतर को लाकर तीन दिनों तक भूखा रख चौथे दिन उसे पारा पिला दें। फिर दूध में भिगोये हुए चावल खिलावें। जब तीतर बीठ करे तब उसमें से पारे को निकाल कर गोली बना लें। इस गोली को मुँह में रखकर लम्बी यात्रा करने से भी थकान नहीं आयेगी।

(२) सफेद ककोड़ा, काकजंघा और सरफोंका –इन तीनों की जड़ को पीसकर शहद के साथ पिलाने तथा इन तीनों को पोटली में रखकर कमर में बाँधकर चलने से लम्बी दूरी तक बिना थकान के पैदल चल सकता है।

जमीन में गढ़ी हुई वस्तु दिखाई देना

(१) काले कौए की जीभ और मांस को लेकर आक के सूत में लपेट कर बत्ती बनायें। फिर उसे बकरी के घी में भिगोकर रात के समय दीपक में जलायें और उसमे काजल पारें। इस काजल को आँखों में लगाने से जमीन के भीतर गढ़ी हुई चीजें दिखाई देने लगती हैं।

(२) कमल के सूत की बत्ती बनाकर, उसे अरण्ड के पत्ते के अर्क में भिगोकर सुखा लें। फिर उस बत्ती को अंकोल के तेल में डालकर दीपक

में जलायें और काजल पारें। इस काजल को पुष्य नक्षत्र वाली तेरस के दिन आँखों में लगाने से जमीन के भीतर गढ़ी हुई चीजें दिखाई देने लगती हैं।

(३) शुभ तिथि, नक्षत्र और बार (दिन) में काली गाय के दूध को जीभ पर रखें तथा उसके घी को दोनों आंखो में लगाये तो जमीन में गढ़ा हुआ धन दिखाई देने लगता है।

दीठ-मूठ से सुरक्षा

कृत्तिका नक्षत्र में लोहे की अँगूठी बनवाकर हाथ में धारण करने से दीठ-मूठ से सुरक्षा होती है।

—: ० :—

१० वशीकरण सम्बन्धी कतिपय अन्य प्रयोग

इस प्रकरण में स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी उन मन्त्र-तन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्हें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही साधक प्रयोग में लाते हैं। इन सभी [illegible] के अन्तर्गत की जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"धूली धूलेश्वरी धूलीमाता परमेश्वरी धूली चँवती जै जै कार रन रन चोंच भरे अमुकी छाती छार छार ते न हटैं देता घरबार मरे तो मसान लोटे, जीवे तो पाँव पलोटे वाचा बाँध खती होई तो जगाइ ल्याव माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ठः ठः ठः स्वाहा।"

विधि—इतवार के दिन जो आदमी मरा हो उसकी तीन मुट्ठी राख लाकर शनिवार से शुरू करके ७ दिनों तक रोजाना १४४ बार इस मन्त्र का जप करना चाहिए। जप करते समय उक्त मरघट की राख के ऊपर चिराग जलाकर रखना चाहिए और उसके सामने धूप-गूगल वगैरह रखने चाहिए।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तो चिराग के नीचे रक्खी हुई राख को शीशी में भरकर रखलें। फिर जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके ऊपर राख को २१ बार अभिमन्त्रित करके डाल दें, तो वह साथ-साथ लगी चली आती है।

तन्त्रशास्त्रियों के अनुसार यह प्रयोग बहुत असर कारक है। इसके प्रभाव की परीक्षा करनी हो तो अभिमन्त्रित राख किसी भैंस के ऊपर डालकर देखना चाहिए। अभिमन्त्रित राख के पड़ते ही भैंस राख डालने वाले के साथ चल देगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—'धूली धूली विकट चन्दनी पर मारूँ धूली फिरे दिवानी घर तजे बाहर तजे ठाढ़ा भरतार तजे देवी एक सठी

कलवान तू नाहरसिंह वीर अमुकीं ने उठा इल्याव मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।"

विधि—उक्त मन्त्र का जप करते समय जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसकी प्रयोग विधि यह है कि शनिवार के दिन जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसके पगतल के अंगार को लेकर शकोरे में रखकर उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करें। फिर उस अंगार को पीसकर, वह चूर्ण जिस साध्य-स्त्री के ऊपर डाल दिया जायेगा, वह स्त्री वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—'बाँधूँ इन्द्रक बाँधूँ तारा बाँधूँ बिंद लोही की धारा उठे इन्द्र न घाले ख़त साख पूणी हो जाय । बख ऊपर लो कंकड़ो हीया ऊपर लो ख़त में तो बन्धन बाँधियो सासू सुसर जाला पूत । मन बाँधूँ मन्वन्तर बाँधूँ विद्या देसूँ साथ, चार खूँट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा ।"

विधि—किसी भी शनिवार के दिन से इस मन्त्र का साधन आरम्भ करना चाहिए। किसी स्वच्छ और पवित्र स्थान में एक पुतली बनाकर रखें और उसका विधिपूर्वक पूजन करके गूगल की धूप दें तथा दीपक जलाकर मन्त्र का २१ बार जप करें। मन्त्र में जिस जगह 'फलानी फलाना' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री और पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस क्रिया को आरम्भ करके नित्य नियमित रूप से रात्रि के समय करना चाहिए। मन्त्र-साधन काल में प्रत्येक शनिवार को सवा पाव हलवा और पाँच बताशों का भोग रखना चाहिए। इस प्रकार से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा, तब आवश्यकता के समय किसी भी शनिवार को एक पुतली बनाकर उसके पेट में साध्य-स्त्री का नाम लिखकर, उस पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारनी चाहिए। फिर साध्य-स्त्री के सामने जाकर उस पुतली को अपनी छाती से लगाना चाहिए। ऐसा करने पर साध्य-स्त्री बेचैन होकर साधक के वशीभूत हो जाती है तथा उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—'आकाश की जोगनी पाताल का नाम उड़जा अबीर तू फलानी के लाग, सूते सुख न बैठे सुख, फिर-फिर देखे मेरा मुख, हमकूँ छाँड़ि दूसरा कने जाय तो काढ़ि कलेजा नाहरसिंह वीर खाय । फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।"

[illegible] की धूनी देकर, उसे एक पत्ते में भरकर अपने मुँह में रखें। फिर पानी में गोता लगाते हुए सात बार मन्त्र को जपें तदुपरान्त पानी से बाहर निकलकर अबीर वाले पत्ते को मुँह से बाहर कर, पुनः अबीर को गूगल की धूनी दें। इस अबीर को जिस साध्य-स्त्री के मुँह पर लगाया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

इस मन्त्र में जहाँ 'फलानी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—"नमो काल भैरूँ निशि राती काला आया आधा राती चलती कतार बाँधे तू बावन वीर पर नारी से राखे सीर मन पकरि वाको लावे, सोवती को जगाई लावे, बैठी को उठाइ लावे, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।"

विधि—जब इतवार के दिन होली अथवा दीवाली पड़े, उस रात को नंगा होकर बायें हाथ से लाल रंग के एरण्ड के पौधे को एक झटके में तोड़ लायें तथा मन्त्र का जप करते हुए उसे जलाकर भस्म कर दें। फिर उस भस्म के ऊपर २१ बार मन्त्र पढ़कर, जिस साध्य-स्त्री के सिर पर डाला जाएगा, वह साधक के वशीभूत हो जाएगी।

स्त्री-वशाकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—"फूल-फूल फूल कुमारी रानी । पल-पल में आवो शीघ्र वशमानी । यह फूल मन्त्र पढ़ूँ अमुकी जान । जगत ईश्वर नरसिंह वरदान । यह फूल पढ़ि देऊं अमुकी माथा । हमें छोड़ न जावे दूसरे के साथा । अल्लाह कामरू कामाक्षा माई । अल्ला हाड़ी दासी चण्डी दोहाई ।"

विधि दशमी तिथि को रात के समय १०८ बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर एक चम्पा के फूल को तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के हाथ में दे दिया जाएगा अथवा जिसके मस्तक पर डाल दिया जाएगा वह यदि दुष्ट स्वभाव की तथा घमण्डी हो तो भी अपनी दुष्टता एवं घमण्ड को त्यागकर साधक के वशीभूत हो जाती है।"

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—"धूल-धूल तूँ धूल की रानी जनमोहनी सुन मोर बानी, जब मैं धूला आन पढ़ूँ, तब पार्वती वरदान, धूली पढ़ दूँ अमुकी अंग, जो जलती आती उमंग, उसका मन लावे निकार हमारी वश्यता करे स्वीकार।"

विधि होली के दिन यह मन्त्र १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर रविवार के दिन साध्य-स्त्री के पाँव के नीचे की धूली लेकर, उसे मन्त्र से ३ बार अभिमन्त्रित करके, उसी स्त्री के ऊतर डाल देने से वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (८)

मन्त्र—"नमो गुड-गुड रे तू गुड-गुड तामडा मशान केलि करता जा उसका देग उमा सब हर्षे हमारी आस खसम को देखें जलै बलै हमको देखें रुक-रुक चले चाल-चाल रे कालिका के दूत जोगी जंगम और अवधूत सोती होय जगाय लाव बैठी हो तो उठाय लाव न लावै तो माता कालिका की शय्या पर पाँव धरै। शब्द साँचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।"

विधि इतवार के दिन एक पैसा भर गुड़ को लेकर श्मशान में जायें. वहाँ तेल बाकला से भरव का पूजन करके इस मन्त्र का १००८ की संख्या में जप करें तो गुड़ सिद्ध हो जायेगा। उस गुड़ को जिस साध्य-स्त्री को खिलाया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—"नमो उर्वशी सुपारी काम निगारी राजा परजा खरी पियारी मन्त्र पढ़ि लगाऊँ तोहि हिया कलेजा लावै तोहि जीवता चाटे पगतली मूवा संग मसान जो वश्य न होय तो जती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—जब चन्द्र पर ग्रहण लगा हो उस समय इस मन्त्र को १००८ बार जपे तो यह सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर एक सुपारी को इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य-स्त्री को खिलाया जायगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—"नमो जल की जोगिनी पाताल नाम जिस पर भेजूँ तिसके लाग, सोने न पावै सुख से बैठने न पावै, सुख से घूम फिर-फिर ताके मेरा मुख, जो बाँधी छूटे तो बाबा नरसिंह की जटा टूटे।"

विधि—चार लोगों को एक पत्ते में लपेट कर गूगल की धूनी दें। फिर उसे होठ में दबाकर किसी तालाब के पानी में गोता मारकर सात बार मन्त्र पढ़ें। फिर मुँह से पत्ता निकालकर, उसे सात बार मन्त्र पढ़ कर गूगल की धूनी दें। तदुपरान्त उस लौंग को जिस स्त्री को खिलावें, वहव शीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—"मो कामरू देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने दिये चार लौंग, एक लौंग निसिमाती, दूजी लौंग दिखावे राती, तीसरी लौंग रहे झुलाय, चौथी लौंग मिलन कराय, नहीं आये तो कुआ बावड़ी घट फिरै, रंडी कुवा बावड़ी छिटक मरे। नमो गुरु की अल्ला फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—जिस समय चाँद पर ग्रहण पड़ रहा हो। उस समय चार-लौंग चारों दिशाओं में रखकर बीच में एक चौमुखा दीपक जलाकर विधि-

पूर्वक एक हजार बार मन्त्र का जप करें तो यह सिद्ध हो जायेगा। फिर आवश्यकता के समय एक लौंग पर सात बार मन्त्र पढ़कर उसे जिस स्त्री को खिला दिया जायेगा वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१२)

मन्त्र–"नमो आदेश कामरू कामाख्या का रे तेल झिकमिक **कामरू के दीप में अमुको का मन पड़े, वह तेल के माँझ जरे, मन्त्र ज्योति के रूप से छाड़ि चंचल थिर हो मन स्थिर से मेरा भजन कर काटे जीवन और अरयन करे तन मन आदेस हाड़ी दास चराडी की दुहाई फिरे।"**

विधि–एक चिराग में सरसों का तेल भरकर उसमें बत्ती जलायें तथा १०८ बार मन्त्र का जप करें। मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर उस दीपक के तेल को जिस स्त्री के अंग पर लगा दिया जायेगा, वह यदि महादुष्टा हो तो भी वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१)

मंगलवार या इतवार के दिन अंजीर के पौधे की एक डाली को तोड़ लावें, फिर रतिक्रिया में संलग्न कुतिया के ऊपर उसे मारें। तदुपरान्त उस डाली को जलाकर राख कर लें। फिर उस राख को अपने मूत्र में सानकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर रख लें। उनमें से एक गोली जिस साध्य-स्त्री को खिला दी जायेगी, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (२)

माघ के महीने में शनिवार के दिन जब अष्टमी तिथि हो और स्वाति नक्षत्र हो, उस दिन आक के पौधे को न्योत आवें और रविवार के दिन उसकी कोंपले लाकर, पीस कर रख लें। उस चूर्ण को जिस साध्य-स्त्री के मस्तक पर डाला जाता है, वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (३)

पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायण की जड़ लाकर, उसमें पीपल, सौंठ और कालीमिर्च मिलाकर गाय के दूध में पीस लें, फिर उसकी छोटी-छोटी

गोलियाँ बनाकर रखलें। आवश्यकता के समय एक गोली को चन्दन के साथ घिसकर अपने मस्तक पर तिलक लगायें और अभिलषित-स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो तो वह देखते ही वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (४)

शनिवार के दिन अपने हाथ-पाँव के बीसों नख कटवा कर रख लें। [illegible] तक करें। फिर आठवें रविवार के दिन नख कटवा [illegible] पक्षी के पंजों के नख कटवाकर कर रख तथा उनके [illegible] मिला दें, फिर उन सबको मिट्टी के एक शकोरे में रखकर आग पर तपायें। जब सब जलकर राख हो जायें, तब उस राख को मक्खन में मिलाकर साध्य-स्त्री को खिला दें तो वह वशीभूत होकर साधक के पास चली आयेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (५)

पुष्य नक्षत्र में नदी के किनारे वाले झाऊ (फरास) के वृक्ष की जड़ को निकाल कर ले आयें। फिर उसमे कूड़ की छाल मिलाकर कूट-पीसकर रख लें। फिर इस चूर्ण में चुटकी भर श्मशान की राख मिलाकर जिस साध्य-स्त्री के मस्तक पर डाल दी जायेगी, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (६)

होली के दिन होली को न्योत कर उसकी एक लकड़ी अपने घर ले आयें, फिर उसका धूप-दीप से पूजन करके धोबी के घर ले जायें। वहाँ धोबी की भट्टी में उस लकड़ी को जलाकर राख करलें तथा राख को अपने पास रखलें, जब हस्त नक्षत्र आये तब उस राख को जिस साध्य-स्त्री के मस्तक पर डाला जायेगा, वह वशीभूत हो जायगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (७)

सवा हाथ धुली हुई गजी (खद्दर का कपड़ा लेकर उसे रास्ते में डाल दें। जब वह हवा में उड़ने लगे, तब उसके पीछे-पीछे चला जाय। जिस स्थान पर वह कपड़ा गिरे, वहाँ से उसे उठा लायें। पीछे मुड़कर न देखें। फिर धोबी के कपड़ा धोने के पत्थर पर जाकर, उस गजी के टुकड़े अलग कर दें तथा कपड़े को वहीं धोबी के पत्थर की धूलि-मिट्टी झाड़कर अलग-अलग कर दें तथा कपड़े को वहीं धोबी के पत्थर पर जलाकर उसकी राख को तथा कपड़े से झड़ी हुई धूलि मिट्टी का अलग-अलग इकट्ठा करके घर ले आयें। वहाँ राख तथा धूलि-मिट्टी दोनों को

अलग-अलग गूगल की धूनी देकर रखलें। फिर आवश्यकता के समय जिस स्त्री को वशीभूत करना हो, उसके शरीर पर राख लगा दें तो वह वशीभूत होकर पास चली आयेगी और जब उसके शरीर पर धूलि-मिट्टी लगायी जायेगी, तब वह लौटकर वापिस चली जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (८)

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र की अंधेरी रात में जो बटोही मार्ग में जा रहा हो, उसके पांवों के नीचे की धूलि मुट्ठी भर ले आवें। फिर उसमें मोर की बीट, हरताल और सुहागा मिलाकर एक दीपक के समीप रखदें। तत्पश्चात् संध्या के समय जिस स्त्री के मस्तक पर यह मिश्रण डाला जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (९)

मंगलवार या रविवार के दिन एक चोट में किसी छछूंदर को मार कर उसे चौराहे पर गाड़ दें। सातवें दिन उसे उखाड़ें। उस समय जो एक हड्डी भागने लगे, उसे पकड़लें तथा उसके अतिरिक्त एक अन्य हड्डी को भी, जो अपने स्थान पर ही स्थित रही हो, लेकर घर लौट आयें। वहाँ दोनों हड्डियों को गूगल की धूनी देकर रखलें। फिर आवश्यकता के समय जो हड्डी भागी हो, उसे जिस साध्य-स्त्री के शरीर से स्पर्श कराया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगी तथा जब उसके शरीर से दूसरी हड्डी का स्पर्श कराया जाएगा, तब वह अलग हट जाएगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१०)

पुष्य अथवा श्रवण नक्षत्र में धतूरे की हरी पत्तियाँ तथा मोर की बीट को समभाग लेकर पीस लें फिर उसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर रखलें। आवश्यकता के समय उनमें से एक गोली का धुआँ जिस स्त्री को दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (११)

काकड़ासिंगी, वच, एलुआ और छोटी इलायची—इन सबको समभाग लेकर कूट-पीस कर गोली बनाकर रखलें। आवश्यकता के समय इस गोली को जलाकर अपने कपड़ों में धूप दे दें, फिर साध्य-स्त्री के पास जायें तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१२)

मोर का दाँया और बाँया पंख, काकजंघा एवं पुहकरमूल—इन सबको मिलाकर खूब महीन पीस लें। उसमें से एक चुटकी भर चूर्ण जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१३)

श्रवण नक्षत्र में पुहकरमूल की जड़ तथा तगर—इन दोनों को समभाग लेकर पानी में पीसकर गोली बना लें। इस गोली को घिसकर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-स्त्री के पास पहुँचा जाय तो वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१४)

गधे के सिर की हड्डी को मनुष्य के कपाल में रखकर, भाँगरे के अर्क में रुई की एक बत्ती को रंगे, फिर कपाल में तेल भरकर उसमें बत्ती डालकर जलायें तथा काजल पारें। उस काजल को शनिवार के दिन अपनी आँखों में लगाकर, जिस साध्य-स्त्री को ओर देखें, वह वशीभूत हो जाएगी।

राजा-वशीकरण तन्त्र (१)

तालीसपत्र, कूठ और अगर—इन सबको एकत्र पीसकर लेप बना लें। फिर उस लेप को किसी रेशमी वस्त्र पर लगाकर उसकी बत्ती बनायें तथा उस बत्ती को मनुष्य को खोपड़ी में डालकर उसमें सरसों का तेल भरकर, बत्ती को जलायें तथा काजल पारें। उस काजल को अपनी आँखों में लगाकर राजा के पास जायें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाएगा।

नोट—वर्तमान समय में राजा-महाराजा नहीं रहे, अत यह प्रयोग शासनाधिकारी, मंत्री आदि को वश में करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

राजा-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"नमो आदेश गुरु का जल बाँधूँ अग्नी बाँधूँ बार-बार बाँधूँ शिव प्रचण्ड बाँधूँ रूठा राजा कोई करसी आसण

छोड़ मंझाव सग देसी आपण टीको चन्दन ललाट टीको काढ़ि सिंह वर्ण कहाऊँ और करूँ सँईयालते में बंध्यान गोरा पार्वती बध्याते मैं बंध्या या गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि शनिवार से आरम्भ करके २१ दिनों तक धूप-दीप नैवेद्य द्वारा गौरा-पार्वती देवी का पूजन और ध्यान करते हुए नित्य प्रति [illegible] बार इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर कुंकुम, चन्दन और गोरोचन को गाय के दूध में पीस कर इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर यदि राजा के पास पहुँचा जाय तो वह वशीभूत हो जाता है।

राजा-वशीकरण तन्त्र (३)

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगीचे में जाकर, नंगा होकर एक ही झटके में अनार के पौधे की एक डाली तोड़ लायें। फिर उसे धूप देकर अपनी दायीं बाँह में बाँधकर राजसभा में जायें तो राजा उसे देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

राजा-वशीकरण तन्त्र (४)

अंकोल के पके हुए फल और मैनफल—दोनों को समभाग लें, गाय के दूध में पीसकर गोली बनायें। फिर गाय के स्वयं गिरे हुए पीले सींग को लाकर उसमें गाय का ही दूध भरकर, उक्त सूखी हुई गोली को डाल दें। फिर उसे सात दिन तक पृथ्वी में गाड़कर धूनी दें। आठवें दिन उसे निकालकर, गोली को घिस कर अपने माथे पर तिलक लगायें और राजसभा में जायें तो राजा देखते ही वशीभूत हो जाएगा।

राजा-वशीकरण तन्त्र (५)

शुद्ध घी, दूध, शक्कर, दही और शहद इनके साथ १०० कमल के फूलों का रात्रि के समय अग्नि में हवन करें तथा हवन करते समय जिस राजा को वश में करना हो, उसका ध्यान करता रहे तो इस प्रयोग से चक्रवर्ती राजा भी वशीभूत हो जाता है।

राजा-वशीकरण तन्त्र (६)

पुष्य अथवा भरणी नक्षत्र में चम्पा की कली लाकर, उसे हाथ में बाँधकर राजा के समीप जाने से वह वशीभूत हो जाता है।

राजा-वशीकरण तन्त्र (७)

[illegible] की जड़ लाकर उसे पानी में पीसकर आँखों में आँजने और राजा के पास जाने से राजा वशीभूत होता है।

सर्व-जनवशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—"नमो आदेश गुरु को राजा मोहूँ प्रजा मोहूँ ब्राह्मण बाणिया हनुमन्त रूप में जगत मोहूँ तो रामचन्द्र परमाणियाँ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—रामचन्द्र जी का ध्यान कर, उनका धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करके २१ दिनों तक नित्य १२१ बार उक्त मन्त्र का जप करता रहे तो मन्त्र सिद्ध हो जायगा। फिर गाँव के चौराहे पर जाकर एक चुटकी भर धूलि लेकर उसे उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाने से साध्य-व्यक्ति देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—"नमो काला कलवा कालीरात निस की पुतली माँझी रात काला कलवा घाट बाट सूती को जगाइ लाव बैठी को उठाइ लाव बेगी धरया लाव मोहनी जोहनी, चल राजा की ठाँव अमुकी के तन में चटपटी लगाव जी पाले तोड़ जो कोई खाइ हमारी इलायची कभी न छोड़े हमारा साथ घर को तजे बाहर को तजे घर के साईं को तजे हमें तज और कने जाइ तो छाती फाट तुरत मर जाइ सत्यनाम आदेश गुरु का गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ईश्वर महादेव की वाचा, वाचा से टरे तो कुंभी नर्क में पड़े।"

विधि—इस मन्त्र को २१ दिनों तक नित्य १०८ बार जपना चाहिए। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। सिद्ध हो जाने पर एक छोटी इलायची पर इस मन्त्र को ११ बार पढ़े। फिर वह इलायची जिस व्यक्ति को खिला दी जाएगी, वह वशीभूत हो जाएगा। यह प्रयोग स्त्रियों पर विशेष प्रभावकारी है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहाँ मन्त्र-जप के समय साध्य-स्त्री अथवा पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

सर्वजन-वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—"हरे पान हरपाल पान चिकनी सुपारी श्वेत खैर दाहिने का चना मोही लेह पान हाथ में दे हाथ रस लेह ये पेट दे पेट रस लेह श्री नरसिंह वीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर महादेव की वाचा।"

विधि यह मन्त्र ग्रहण के समय १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा पान को २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को खिला दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (४)

तगर, कूठ, हरताल और केशर—इन सबको समभाग लेकर अपनी अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर, मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाला वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (५)

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब तगर, कूठ और तालीम पत्र को पीसकर दीपक की बत्ती में मिलाकर, उस को कड़वे तेल के दीपक में डालकर जलायें तथा आधीरात के समय मनुष्य की खोपड़ी के ऊपर काजल पारें। इस काजल को आँख में आंजने से देखने वाले स्त्री-पुरुष वशीभूत हो जायेंगे।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (६)

चिता की भस्म, कूठ, वच, तगर और कुंकुम—इन सबको इकट्ठा पीसकर, जिस पुरुष के पाँवों पर तथा जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाएगा, वह वशीभूत हो जायेंगे।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (७)

पुष्य नक्षत्र में इन्द्र जौ की जड़, पीपल, सौंठ और काली मिर्च—इन सबको गाय के दूध में पीसकर, सुखाकर रखलें। फिर आवश्यकता के समय इसे चन्दन के साथ घिसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-व्यक्ति के सम्मुख जायें तो वह देखते ही वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (८)

आक और धतूरे की जड़ कबूतर की बीट तथा चौराहे की धूल—इन सबको एकत्र कर पीसकर तथा सुखाकर रखलें। फिर इसमें चिता की भस्म मिलाकर मंगल अथवा शनिवार के दिन जिसके मस्तक पर डाल दिया जाएगा, वह वशीभूत हो जाएगा।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (१)

रविवार के दिन दो घड़ी रात रहते उठकर श्मशान में जायें तथा वहाँ अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके चिता से एक लकड़ी को उठाकर किसी एकान्त स्थान में रख आयें। फिर प्रतिदिन रात्रि के समय जाकर उसका पूजन करता रहे। इस प्रकार इक्कीस दिन बीत जाने पर, उस लकड़ी को खाती (बढ़ई) के घर ले जाकर उसके सात टुकड़े करवाये तथा पहले टुकड़े की एक मेख बनाकर उसे शत्रु के घर में गाढ़ दें तथा शेष सभी टुकड़ों को नदी में बहादें। शेष टुकड़ों को नदी में बहाकर लौटते समय मार्ग में से सात कंकड़ियाँ उठाकर घर लेता आये तथा उन्हें धूप-दीप देकर पूजन करे। आवश्यकता के समय उन कंकड़ियों को जिसके मस्तक पर डाला जायेगा, उसके सब रोग-दोष दूर हो जायेंगे तथा मेख को शत्रु के घर में गाढ़ने का प्रभाव यह होगा कि शत्रु वशीभूत हो जाएगा।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (२)

मंगलवार अथवा रविवार के दिन काले रंग के घोड़े तथा काले रंग के बकरे के पाँव के बाल तथा काले मुरगे एवं काले कौए के चार-चार पंख—इन सबको जलाकर राख बनालें। उस राख को पानी में खरल करके शीशी भरकर रखलें। फिर, आवश्यकता के समय इस मिश्रण का तिलक अपने

मस्तक पर लगाकर शत्रु के सामने जाने से उसका वशीकरण होगा और वह डर के कभी सामने आने का साहस नहीं करेगा।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (३)

पुष्य नक्षत्र में चमेली की जड़ लाकर उसका ताबीज बनाकर अपने पास रखने से शत्रु वशीभूत होते हैं।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (४)

रविवार के दिन सफेद आक की जड़ को उखाड़ लाकर उसे छाया में सुखाकर अपनी भुजा में बाँधने से शत्रुओं का वशीकरण होता है।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (५)

धतूरा, अदरक, बरगद और मूंगा की जड़—इन सबको समभाग लेकर पीस लें। फिर उस चूर्ण को घिसे हुए चन्दन में मिलाकर, उसका तिलक मस्तक पर लगाने से शत्रु देखते ही वशीभूत हो जाता है।

पुतली वशीकरण प्रयोग

शनिवार के दिन रात्रि के समय किसी स्वच्छ, एकान्त और शान्त स्थान में बैठकर गोरोचन, कुंकुम तथा केशर से भोजपत्र के ऊपर एक सिंहासन पर बैठी हुई स्त्री (पुतली) का चित्र बनायें। फिर उसका विधि-पूर्वक पूजन करके, धूप-दीप तथा गूगल की धूनी दें, तदुपरान्त निम्न-लिखित मन्त्र का ११ बार जप करें—

मन्त्र—"बाँधूँ इन्द्रक बाँधूँ तारा बाँधूँ बिंदी लोही की धारा उठे इन्द्र न घाले घाव सूख साख पूरी हो जाय। बग ऊपर लों काँकड़ो हीया ऊपर लों सूत में तो बन्धन बाँधियो सासू सुसर जाया पूत मन बाँधूँ मन्वन्तर बाँधूँ विद्या देखूँ साथ चार खूँट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।"

इस मन्त्र में जहाँ 'फलानी फलाना' शब्द आया है, वहाँ साध्य स्त्री-पुरुष नामों का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त क्रिया को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहना चाहिए तथा प्रत्येक शनिवार को सवा पाव लपसी एवं पाँच बताशों का भोग रखना चाहिए।

उक्त प्रयोग द्वारा अभिलषित-स्त्री को वश में किया जा सकता है।

आकर्षण का मन्त्र

मन्त्र—"काला कलवा चौंसठ वीरा मेरा कलवा गंगा तीर जहाँ को भेजूँ वहाँ को जाइ मच्छी को छुवन न जाइ अपना मारा आपहि खाइ, चलत बाण मारूँ उलट मूँठ मारूँ मार मार कलवा तेरी आस चार चौमुखा दीया न वाती जा मारूँ वाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी माँ का दूध पिया हराम है।"

विधि—घी का चिराग जलाकर गूगल की धूनी दें और जोड़ा फूल तथा मिठाई रखकर २१ दिनों तक नित्य १००८ बार जपे तो मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जिसको आकर्षित करना हो उसके नाम का उच्चारण करते हुए सुपारी छाल पर इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर उसे पान में रखकर अभिलाषित स्त्री-पुरुष को खिलाये तो वह आकर्षित हो जायेगा।

यह मन्त्र आकर्षण के साथ ही वशीकरण कारक भी है तथा यह मूंठ को उल्टी (वापिस) भेजने का काम भी करता है।

पति-वशीकरण प्रयोग

मासिक धर्म के समय का अपनी योनि का रक्त, गोरोचन तथा केले का रस—इन तीनों को मिलाकर पीस लें। फिर इससे अपने मस्तक पर तिलक करके पति के समीप जायें तो वह देखते ही वशीभूत हो। यह प्रयोग स्त्रियों के दुर्भाग्य को दूर कर, सौभाग्य की वृद्धि करता है।

राजसभा मोहन मन्त्र

मन्त्र--"सलामुन कौलुन मिन रबिर्रहीम तनजीलुल अजीजुर्रहीम ।"

पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर उक्त मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ७ बार पढ़ें, फिर हाथों को मुँह पर फेरकर राजसभा में जायें तो वहाँ के सब लोग मोहित हों।

स्त्री आकर्षण तन्त्र

जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसके बाँये पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर, उसे गिरगिट के रक्त में सान कर एक पुतली बनायें। फिर उस पुतली की छाती पर साध्य-स्त्री का नाम लिखें। तदुपरान्त उसे आकर्षण मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके, उस जगह गाढ़ दें, जहाँ पर मूत्र-त्याग किया जाता हो। फिर उस स्थान के ऊपर प्रतिदिन मूत्र करता रहे तो वह स्त्री सहस्रों मील दूर क्यों न रहती हो, तो भी आकर्षित होकर पास चली आती है।

मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—"ॐ नमो आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा ।"

इस मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है वहाँ जिस स्त्री-पुरुष को आकर्षित करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

यह मन्त्र १० हजार की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है।

सर्वजन मोहन प्रयोग

मन्त्र—"तिलसों में तेल राजा पर जा पाय मेलि अलक पानी मसक ल्याय छत योनि मेरे पाय नगाय हाथ खड्ग फूलों की माला जानि बिजानै गोरख जान मेरी गति को कहै न कोय हाय पछानो मुख धोऊ सुमिरो निरंजन देव हनुमंत मती हमारी पति राखे मोहिनी दोहनी दोनों बहिन आव मोहिनी रावल चालै मुख बोलै जिह्वा मोहूँ, आस मोहूँ, पास मोहूँ जब संसार में निसरू टीका देय ललाट शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा छु ।"

विधि—दीवाली की रात को तिल लाकर, उल्टी घानी से उनका तेल निकलवाकर, उस तैल को उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करें। फिर उस तेल अपने मस्तक पर बिन्दी लगायें तो देखने वाले सभी लोग मोहित हों।

स्त्री-मोहन प्रयोग

रविवार के दिन पान का एक बीड़ा लाकर धोबी के कपड़े धोने की पटिया पर जा खड़ा हो। वहाँ नंगा होकर पहले उस बीड़े को खोले, फिर लपेट कर बन्द करें तथा वस्त्र पहन कर घर लौट आयें। पीछे मुड़कर न देखें। यह बीड़ा जिस स्त्री को खिलाया जायेगा, वह मोहित हो जाएगी।

पानी को मस्से पर लगाये तो कुछ दिनों के निरन्तर प्रयोग से खूनी तथा बादी बवासीर ठीक हो जाती है।

बवासीर का मन्त्र (२)

मन्त्र—'खुरासान की टेंनीसाह। खूनी बादी दोनों जाय। उमती-उमती चल चल स्वाहा।''

विधि—इस मन्त्र को पहले पूर्वोक्त मन्त्र की विधि से सिद्ध करलें। फिर प्रयोग के समय इस मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित पानी द्वारा आबदस्त लें तथा लाल सूत में तीन गाँठें लगाकर उस पर इक्कीस बार मन्त्र को पढ़ें फिर उसे दोनों पाँवों के अँगूठों में बाँध लें। इससे खूनी तथा बादी—दोनों प्रकार की बवासीर दूर हो जाती है।

पीड़ा-निवारक मन्त्र

मन्त्र—'लश्कर फरऊन दर रोदनी लगर्क शुद।''

विधि—जिस जगह दर्द हो, वहाँ इस मन्त्र को ३ बार पीली मिट्टी से लिखें। फिर मिट्टी के बराबर गुड़ तुलवाकर छोटे बच्चों को बाँट दें तो पीड़ा दूर हो जाती है।

आँख की फुली का मन्त्र

मन्त्र—''उत्तर कूल काछ सुन लोगी की बाछ, इस्माइल जोगी की दो बेटी एक पाले चूल्हा एक काटे फुली का काछ, फुली का काछ, फुली का काछ।

विधि—छुरी द्वारा २१ बार जमीन पर लकीर खींचे तथा हर बार लकीर खींचते समय एक बार उक्त मन्त्र को पढ़ता जाय। इस प्रकार सात दिनों तक नित्य चाकने से आँख की फुली कट जाती है।

सिया का मन्त्र

मन्त्र—''नमो कामरू देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी के तीन पुत्रा एक तोड़े, एक पिछोड़े, एक तोते जरी तोड़े।''

विधि—रोगी को खड़ा करके जिस जगह ठण्ड लगती हो, वहाँ हाथ से पकड़कर २१ बार मन्त्र फूंकें तो सिया रोग हो जाता है।

हाकिम को वश में करने का मन्त्र-तन्त्र

चाँद की ग्यारहवीं तारीख को रात के वक़्त कौए के घोंसले पर पहुँचकर एक जोड़ा नर और मादा कौए को पकड़कर ले आयें। उन्हें [illegible] चाहिए। घर लाकर दोनों कौओं को पिंजड़े में बन्द करदें। दूसरे दिन सुबह दोनों के नाखून काट कर उन्हें एक डिब्बी में बन्द करके रखलें। फिर दोनों कौओं को उनके घौंसले में जहाँ-का-तहाँ छोड़ आयें। फिर उसी रात को १२ बजे किसी एकान्त और शांत जगह में बैठकर, कौए के नाखूनों वाली डिबिया को खोलकर अपने सामने रख लें तथा नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए उस पर फूंक मारें। कुल मिलाकर मन्त्र का पाठ २२५० बार करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

''फैल के चन्द्रमुखी सती का पैर पड़े घन कड़े, सलाम कर बीम जारी फैलके ब्लीम ताड़े फल लाग तार सवा। दम्तूर बढ़ियाँ लान मेरी अडिया लाग सुन्दर वास्ता बड़े। फल पढ़ के मिल जाय कड़े असत नाम आदेश करें।'' नित्य ग्यारह रात तक इसी प्रकार मन्त्र का जप तथा साधन करते रहें। तदुपरांत उन नाखूनों को किसी कपड़े में सीकर रख लें और जिस समय हाकिम के सामने जायें उस समय नाखूनों वाले कपड़े को अपनी कमर में बाँधकर जायें तो हाकिम वशीभूत हो जाता है।

प्रेमी को आकर्षित करने का मन्त्र

काल कौए के पंख, मोर के पंख तथा हुदहुद पक्षी के सिर की कलंगी के पंख—इन तीनों को जलाकर राख बनालें। फिर इतवार के दिन सूरज निकलने से पहले किसी चौराहे से धूलि लाकर, उस राख में मिला दें। फिर सबके मिश्रण को एक डिब्बी में भर कर रखलें। जरूरत के समय इस राख को अपने थूक में मिलाकर जिस स्त्री अथवा पुरुष के कपड़ों से लगा दिया जाएगा वह प्रेम से आकर्षित होकर वशीभूत हो जाएगा।